स्वाध्यायोऽध्येतव्यः   ॐ श्रीः ॐ   स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्

श्रीस्वाध्याय

(वसन्ताङ्क)

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ —श्रीराष्ट्रालोक

वर्ष १३	सोलन, चैत्र शु० १० सोमवार सं० २०११ वि०	संख्या ३

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥
—अ० वा० आचार्य

निवेदनम्

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

निदानं धर्माणां किमपि हृदि साक्षात्कृतवतां
पुरा कैश्चित्प्राप्यं कठिनतममासीदृषिपदम् ।
इदानीं किं ब्रूयामहह !! वृषलानां खलु वति-
र्विनैवाऽऽरूढाऽऽस्ते श्रमकणमृषीणामृषभताम् ॥१॥

सुधां मन्वानानां शकृदनुपलं पङ्किलहृदां
नृणां भूदाराणां यदि हृदि पदं योगमहिमा ।
न दत्ते नो चित्रं द्रविणललनालोलितदृशां
न भोगभ्रष्टानां भवति विषयोऽसौ हतधियाम् ॥२॥

सम्पादकीय विचार—

शान्ति वा अशान्तिकी ओर

अपस्तुहि प्रथमं रत्नधेयं बृहस्पतिं सनितारं धनानाम् ।
यः शंसते स्तुवते शंभविष्ठः पुरुवसुः आगमत् जो हुवानम् ॥
(ऋ० ५-४२-७)

तृतीय महायुद्धकी विभीषिकाकी छाया दूर टल गई है। पांच बड़े राष्ट्रोंके परराष्ट्र-मंत्रियोंकी कान्फ्रेंस होनेकी सम्भावना और फरवरीमें हुई बर्लिन-कान्फ्रेंसके कारण मनोंमें यह विश्वास दृढ़ होता जाता है कि तीसरा महायुद्ध छिड़नेमें अभी विलम्ब है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि शस्त्रास्त्रोंकी झंकार मन्द पड़ गई है, शस्त्रीकरणकी प्रगति धीमी हो गई है और देशोंके प्रति रक्षा-व्ययमें कमी हो गई है। न विश्वके दो महान् प्रतियोगी गुटोंके बीच पिछले ६ वर्षोंसे चल रही तनातनीमें ही कोई अन्तर आया है। सोवियत रूसके प्रतिरक्षामंत्री मार्शल बुलगानोवने विश्व-चुनौती देते हुए कहा है कि रूसी सेनाएँ सब अवस्थाओंके लिये सब प्रकारसे तैयार हैं। कोरियाका रणक्षेत्र शान्त है पर उस देशकी एकताकी समस्या पहलेके समान अभी बनी हुई है। दोनों पक्षोंकी सेनायें आज भी सामने डटी हुई हैं। विश्वके राजनीतिज्ञ, संयुक्त-राष्ट्र और विभक्त कोरियाके दोनों भागोंके देशभक्त अभी तक स्फुलिंगोंके इस घरको शान्त करने और विश्वको भावी युद्धके भयसे आश्वस्त तथा निश्चिन्त नहीं कर सके हैं। कोरियामें जब तक दोनों पक्षोंकी सेनाएँ विद्यमान हैं, उस समय तक क्या विश्व-शान्तिकी स्थापनाकी आशा की जा सकती है?

फ्रांसका नग्न-साम्राज्यवाद आज भी हिन्दचीनमें ताण्डव-नृत्य कर रहा है। भारतमें भी उसका उग्ररूप प्रगट हो रहा है।' पुर्तगाल भी गोआ, दमन और दीवको छोड़ने को तैयार नहीं है। चुंगी चोरीसे वह अपने उपनिवेशों की आय बढ़ा रहा है और इसके द्वारा अफ्रीकासे बड़ी संख्यामें लाये सैनिकोंको पाल रहा है। वह फ्रांस के समान जनमत-संग्रहके भी पक्षमें नहीं है। वह संग्रामकी तैयारी कर रहा है। भारतकी फ्रेंच बस्तियोंमें फ्रांस--सरकारके विरुद्ध बवण्डर फिर उठ खड़ा हुआ है। मेयरों, मंत्रियों और जनताने माँगकी है कि जनमत संग्रहकी आवश्यकता नहीं रही है और इन बस्तियोंको भारतमें एकदम विलय कर दिया जाय। फ्रेंच-सरकारने श्रीनेहरूकी चेतावनीके बाद भी इसका उत्तर कठोर दमन से दिया है। भारतकी सीमाका अतिक्रमण कर मुदालियारपेटके म्यूनिस्पल कौंसिलके मेयर श्री नन्दगोपालको गिरफ्तार करनेका साहस किया है। फ्रेन्च-सरकार स्थितिकी भयंकरताका अनुभव नहीं कर रही है और फ्रेंच बस्तियोंमें आज जो ज्वाला भड़की है, उसकी प्रचण्डताको जानकर भी नहीं जानना चाहती।

हिन्दचीनमें फ्रांस युद्ध बन्द करनेके लिए तैयार है पर अपनी शर्तों पर। हिन्दचीनमें कोरियाके समान युद्ध को बन्द करनेके लिये श्रीनेहरूने अपील की है। फ्रांस ने उसका सन्तोषजनक उत्तर नहीं दिया है। वह चाहता है कि वीतमिंहकी सेनायें लाओजको खाली कर दें, पर फ्रांस स्वत: टांगकिंगको खाली करनेके लिए तैयार नहीं है। वीतमिंहकी सेनाएँ भावी जीनीवा कान्फ्रेंस पर दृष्टि रख कर गुरिल्ला युद्ध कर रही हैं और प्रसिद्ध फ्रेंच दुर्ग 'दीयेन बीयेन फू' के द्वार पर पहुंची हुई है। फ्रेंच सेना घिरी हुई है। फ्रेंच विमान ही इस समय वीतमिंह सेनाको आगे बढ़नेसे रोक रहे हैं। सात वर्षसे यह संग्राम चल रहा है। यह होते हुए भी फ्रांस हिन्दचीनसे अपनी सेना हटानेको तैयार नहीं। अमरीका फ्रांसकी पीठ पर है। अमेरिकन सैनिकोंके सिवाय और सब प्रकारकी सैनिक सहा-

यता अमरीका फ्रांसको हिन्दचीनमें लड़नेके लिए दे रहा है। इस अवस्थाके रहते हुए भी विश्वशान्तिकी क्या आशा की जा सकती है ?

शान्तिके लिए यथार्थज्ञानकी आवश्यकता है। परन्तु यथार्थ ज्ञानकी खोजके लिए आज कोई प्रयत्न नहीं हो रहा। १९४५ में हिरोशिमा और नागासाकीको जिन अणु बमोंने उध्वस्त कर दिया था, आज उससे भी दशगुणा अधिक विनाशक शक्ति वाले अणुबम और उद्जन बम तैयार हो रहे हैं। अणुशक्तिका उपयोग आज मानव समाजको सुखी बनानेके लिए नहीं किया जा रहा है, अपितु उसका सर्वनाश करनेके लिए किया जा रहा है। अमरीका आज तक भी आणविक शस्त्रास्त्रों पर अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण स्थापित करने, या युद्धोंमें इसका व्यवहार सर्वथा निषिद्ध ठहरानेकी बात माननेके लिये तैयार नहीं है। वह इनके लिये किये जाने वाले परीक्षणोंकी विभीषिका और गुरुताको समझनेमें भी असमर्थ हैं। समस्त जगत् द्वारा धिक्कृत होने पर भी अमेरिका और सोवियत रूस शस्त्रास्त्रोंका संग्रह करना और विनाशक शस्त्रास्त्रोंका निर्माण करना बन्द नहीं कर रहे हैं।

विनाशक शस्त्रास्त्रोंका निर्माण और उनकी परीक्षाका परिणाम कितना भयावह हो सकता है, यह जापानी मछुओंकी चिन्ताजनक स्थितिने प्रकट कर दिया है। मार्शल द्वीप समूहमें बमोंकी परीक्षा की गई। पर्यवेक्षकोंके आहत होनेकी सम्भावना सदा बनी रहती है, अतः उनका घायल होना खेदजनक होते हुए भी आश्चर्यजनक नहीं, परन्तु बम-विस्फोट का १६०-१७० मील दूर तक प्रभाव पड़ना, रेडियो-धारासे समुद्र-जलका प्रभावित होना, और दूर-दूर अणु-भस्मका उड़ कर जाना तथा शरीरके जिस भाग पर वह गिरे उसका झुलस जाना और उसके प्रदाहसे प्राणोंका संकटमें पड़ जाना। क्या यह सब क्रूर और अमानवीय नहीं है ? क्या सभ्य समाज इसको चालू रखनेकी अनुमति दे सकता है ? क्या विश्वका लोकमत इस बातको भूल सकता है कि बिकनी द्वीपसमूहमें, जब अणु बमोंकी परीक्षा की गई थी, तो दो द्वीपोंका अस्तित्व ही नष्ट हो गया था और समुद्र जलके मध्य बड़ा भारी गर्त हो गया था ? परन्तु यह गर्हित और निन्दित कार्य भी चालू है, और यह सब है सभ्यता और संस्कृतिकी रक्षाके नाम पर। क्या सत्यकी इससे अधिक और विडम्बना हो सकती है ?

प्रश्न यह है, कि इसका उपाय क्या है ? जगत्का उद्धार कैसे हो सकता है ? गीतामें भगवान् श्रीकृष्णने इसका उत्तर इस प्रकार दिया है :—

"तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत !
तत्प्रसादात् परां शान्ति स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ।।"

भारतीय संस्कृतिको ही अपनानेसे विश्वको विनाश मार्गसे बचाया जा सकता है। प्राचीन भारतके ऋषि-मुनियोंने भीमकाय और बड़ी-बड़ी मैशीनोंके व्यवहारकी इसी कारण निन्दा की थी और छोटे-छोटे यंत्रों तकका व्यवहार न करनेका उपदेश दिया था। यदि आज भी बड़े राष्ट्र आत्मिक विकास पर आश्रित सभ्यता और संस्कृतिको अपनायें तो संसार महाविनाशसे बच सकता है। बड़ी-बड़ी मैशीनोंका व्यवहार सर्वथा बन्द कर दिया जाय और भौतिक समृद्धिके आधार पर आश्रित सभ्यताको छोड़कर आत्मिक-विकास पर आश्रित सभ्यता और संस्कृतिको अपनावें तो आवश्यकताके समान उत्पादन होगा; आवश्यकतासे अधिक उत्पादन न होनेके कारण बाजार ढूंढनेके लिये छीना-झपटी न होगी और न लड़ाई होगी। इसका अर्थ है कि विश्व अपना मार्ग बदले और वह जिधर जा रहा है, उधर जानेसे रुक जाय। क्या आजके विश्वमें प्रेय मार्गको छोड़कर श्रेय मार्ग पर जानेके योग्य साहस है ?

स्वप्न भंग—कविने कहा है :—

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजश्री ।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे
हा हन्त ! हन्त !! नलनीं गज उज्जहार ।।

पाकिस्तानमें आज मुस्लिम लीगकी यही अवस्था है। पूर्वी पाकिस्तानमें लगभग सात वर्ष बाद चुनाव हुआ। यह पहला अवसर था जब बालिग मताधिकारके आधार पर चुनाव हुआ। इसमें मुस्लिम-लीगको न केवल भारी पराजय ही मिली, अपितु उसका अस्तित्व ही समाप्त हो गया है। पूर्वी बंगाल असेम्बलीके अन्दर अब मुस्लिमलीग पार्टी तक नहीं रही। जब तक किसी दलके कमसे कम दश

सदस्य न हों, उस समय तक उसको स्वीकार नहीं किया जा सकता। ३०७ सदस्योंमेंसे लीगके केवल ६ हैं। भारतखण्डके पार्लमेंट्री इतिहासमें इसका और कोई दूसरा उदाहरण नहीं, जब शासक पार्टीका अस्तित्व भी समाप्त हो गया हो। पूर्वी बंगाल असेम्बलीमें मुसलमानोंके लिये २३७ स्थान हैं। निर्वाचनका परिणाम है :—

यूनाइटेड फ्रण्ट	२१५
स्वतन्त्र	१२
मुस्लिमलीग	६
रब्बानी पार्टी	१
	२३७

मुस्लिमलीगके लिये ही नहीं अन्य शासक पार्टियोंके लिये भी यह चेतावनी होनी चाहिये। जनताकी दुरवस्थाकी ओरसे दुर्लक्ष्य करके कोई भी दल जीवित नहीं रह सकता। मुस्लिम लीगके नेताओंने भारतको हानि पहुंचानेके विचारसे रुपयेका अवमूल्यन नहीं किया, भारतकी जूट मिलोंको जूट नहीं पहुंचने दिया, वीसा और पासपोर्ट चालू कर विभक्त बंगालके दोनों भागोंमें आने जाने पर कठोर प्रतिबन्ध लगा कर पूर्वी बंगालके लाखों लोगोंको जीविकाहीन बना दिया और वहांके किसानोंके खेतोंमें हुई पैदावारके लिए भारतका बाजार बन्द कर दिया। आर्थिक दृष्टिसे ही नहीं बंगलाको पाकिस्तानकी दूसरी भाषा स्वीकार करनेसे नकारकर लीगके नेताओंने पूर्वी बंगालका बौद्धिक अपमान और तिरस्कार किया। मुस्लिमलीगके नेताओंने पूर्वी पाकिस्तानको पश्चिमी पंजाबका उपनिवेश बनाना चाहा। उसकी प्रभावशाली प्रतिक्रिया यह हुई कि पूर्वीय बंगालमें मुस्लिमलीग आज सिसक रही है, दम तोड़ रही है और कुछका मत है कि वह सदाके लिये दफना दी गई।

पूर्वी पाकिस्तानमें मुस्लिम-लीगका परिणाम क्या होगा? इस पराजयको क्या यह समझा जा सकता है कि पूर्वी-बंगाल बंग-विभाजनके विरोधमें है? निस्सन्देह मुस्लिम-लीगने चुनावसे पहले यही नारा लगाया था कि उसकी हार और 'यूनाइटेड फ्रण्ट' की विजय पाकिस्तानके विरुद्ध होगी। परन्तु 'फ्रण्ट' के नेताओंने स्पष्ट कर दिया था, कि वे पाकिस्तानके स्वतन्त्र अस्तित्वके पक्षमें हैं। शहीद सुहरावर्दीने भी कहा है कि—उन्होंने अपना 'स्वतंत्र बंगाल' बनानेका विचार छोड़ दिया है। इस अवस्थामें तत्काल यह कैसे आशा की जा सकती है, कि बंग-भंग रद्द हो जायगा और बंगाल पुनः एक हो जायगा। परन्तु इस बातसे भी नकार नहीं किया जा सकता कि मुस्लिम लीगकी पराजयमें बहुत सी सम्भावनायें निहित हैं। इसका दूरगामी परिणाम यह हो सकता है, कि बंगाल १९१२ के समान पुनः संयुक्त हो जाय।

१९५७ में

पांडुचेरी स्थित अरविन्द आश्रमकी ख्यातिप्राप्त श्री माता जी ने बताया है कि योगी अरविन्द घोषका मत था कि सन् १९५७ ई० में पाकिस्तानकी इतिश्री हो जायगी। योगी अरविन्दकी इस भविष्यवाणीमें क्या कोई सचाई है? १७५७ में प्लासीका युद्ध हुआ और क्लाइवने ब्रिटिश साम्राज्यकी नींव इस देशमें रखी। १८५७ में ब्रिटिश साम्राज्यको देशसे उखाड़ फेंकनेका विफल प्रयत्न किया गया। १९५७ में भी यदि कोई युग-परिवर्तनकारी घटना हो तो क्या आश्चर्य! भारतके इतिहासमें सन् ५६-५७ महत्वपूर्ण रहे हैं। १५५६ में अकबरने हेमूको हराया और मुगल साम्राज्यकी दृढ़ नींव डाली। १६५७ में सम्राट शाहजहां बीमार हुआ और दिल्लीके सिंहासनके लिये उसके लड़कोंमें गृह-युद्ध हुआ, जिसने मुगल साम्राज्यकी जड़ोंको हिला दिया। इस अवस्थामें यदि १९५७ के विषयमें यह कल्पना की जाय, कि इस वर्ष भी कोई युग परिवर्तनकारी घटना होगी, जिसकी सूचना पूर्वी बंगालमें लीगकी पराजय ने दी है—तो क्या कुछ अनुचित होगा? इस कल्पनाके पीछे एक बल भी है। १९४७ में पाकिस्तानकी स्थापनाके समय कुछ तत्वदर्शीलोगोंने कहा था, कि यह दश वर्षसे अधिक जीवित न रहेगा। पूर्वी बंगालमें मुस्लिम लीगकी हुई पराजय क्या उसी ओर संकेत नहीं कर रही? ज्योतिषशास्त्र की दृष्टिसे पाकिस्तानके भविष्यका विवेचन हमने १९४७ में किया था और बादमें समय समय पर अपने पञ्चाङ्ग और इस पत्रमें भी करते रहे हैं, उससे पाठक परिचित ही हैं, अस्तु।

अन्य परिणाम

अब पूर्वी बंगालमें मुस्लिम-लीगकी बड़ी भारी

पराजय होनेसे पश्चिमी पाकिस्तानके लोगोंकी यह धारणा मिट जायगी कि मुस्लिम-लीग अजेय है। लीग विरोधी गुटों और लीगके नेताओंके विरोधियोंको इससे बल मिलेगा। पंजाब सिंध और सीमा प्रान्तमें शासन अस्थिर होगा। कराचीमें जल्दी-जल्दी परिवर्तन होंगे। मि० मुहम्मदअलीको ख्वाजा नाजिमुद्दीनकी राह जाना होगा। पाकिस्तानमें अमरीकाका प्रभाव कम होगा। अमरीका सैनिक पैक्ट खटाईमें पड़ जायगा। सैनिक पैक्टके विरोधमें आन्दोलन जोर पकड़ेगा। क्योंकि पाकिस्तानके प्रधानमंत्री मि० मुहम्मदअलीके इस कथनको अभी भूले नहीं हैं, कि अमरीकी सैनिक सहायता देशकी आन्तरिक शान्ति और सुव्यवस्थाकी रक्षाके लिये आवश्यक है। दूसरे शब्दोंमें इसका अर्थ है कि मुस्लिमलीग अपने विरोधियों का अमरीकी सैनिक शक्तिकी सहायतासे दमन कर पाकिस्तान पर अपना राज्य स्थिर करना चाहती है। विदेशी शक्तिकी सहायतासे कोई पार्टी देश पर शासन करे क्या यह सहन किया जायगा? इस कारण यह बहुत सम्भव है कि कराची में मंत्रिमंडलका परिवर्तन होने पर कोई और दल अमरीकी सैनिक सहायता लेनेको प्रस्तुत न हो और अमरीका मध्य-पूर्व प्रतिरक्षा-योजना भी इसके साथ खटाईमें पड़ जाय।

सहानुभूति पूर्ण नहीं—

इस वर्ष पाकिस्तान और भारत दोनोंके वित्तमंत्रियों ने जिस दृष्टिकोणसे बजट बनाया है, उसमें जहाँ कुछ समानता है, वहां कुछ अन्तर भी है। दोनों वित्तमंत्री उद्योगपतियों और श्रीमन्तोंका और अधिक शोषण करनेके विरुद्ध हैं। किन्तु यह होते हुए भी पाकिस्तानके वित्तमंत्री मि० मुहम्मदअलीने जनताके प्रति सहानुभूति दिखाई है। आयकर उन्मुक्तिका स्तर ३६०० रु० से बढ़ाकर ४२०० रु० वार्षिक कर दिया गया है। कोई नया कर नहीं लगाया गया है। दूसरी ओर भारतके वित्त-मंत्री श्री चिन्तामणि द्वारकानाथ देशमुखने आय बढ़ानेके लिये कर लगानेके वास्ते जो नई वस्तुएं चुनी हैं उनमें सुपारी, जूता, साबुन, सीमेंट सदृश वस्तुयें भी हैं। इस वर्ष और लगभग ११करोड़ रु०का और कर लगाया गया है। यह बजट इस देशमें '[illegible]राज्य' स्थापित करनेके लिए बनाया गया है, यह नहीं कहा जा सकता। दोनोंके बजट इस प्रकार हैं—

(करोड़ रुपयोंमें)

	पाकिस्तान		भारत	
	१९५३-५४ (अनुवीक्षित)	१९५४-५५ (बजट)	१९५३-५४ (अनुवीक्षित)	१९५४-५५ (बजट)
आय	१०७.९२	१११.४७	४१३.६६	४५२.८६
व्यय	१०७.८३	१११.३७	४३०.६५	४६७.०१
बचत (+) घाटा (—)	+'९	+'११	—१६.९९	—११.८५

पाकिस्तान पिछले वर्ष भारी आर्थिक संकटमें था। पर अमरीकी सहायताने उसको संकटसे बचा लिया। भारतका बजट घाटेका है। क्योंकि व्यय बढ़ रहा है। १९५३-५४में घाटा रहनेका कारण है भारत-सरकारका पाकिस्तानकी शुभ भावना पर अटल विश्वास। पाकिस्तान भारतको ऋण चुका देगा यह आशा इस देशमें किसी को नहीं है। पर श्रीदेशमुखको है। १९५३-५४के बजट में १८ करोड़ रु० उससे पानेकी आशा की गई थी। पर पाकिस्तानने एक धेला भी नहीं दिया। १९५४-५५ के बजटमें भी ९ करोड़ रु० वापस ऋण मिलनेकी आशा बान्धी गई है। यह आशा पूरी न होनेकी दशामें ९ करोड़ रु० का घाटा और रहेगा। इस प्रकार वर्षान्तमें घाटा ११ करोड़ रु० का नहीं अपितु २० करोड़ रुपये का होगा।

भारतका प्रतिरक्षा-व्यय कुल राजस्व आयका लगभग आधा है। पाकिस्तान सेना पर लगभग ८० करोड़ रु० व्यय कर रहा है। पर भारतने अमरीका-पाकिस्तान सैनिक करारके बाद भी अपना सैनिक-व्यय नहीं बढ़ाया है। रावी और ब्रह्मपुत्राके तट तक शीत-युद्धकी विभीषिका पहुँच जाने पर भी भारत अपने ध्येय और शान्ति-पथसे विचलित नहीं हुआ और न आतंकित ही हुआ है। यह दुर्बलताका नहीं बलका लक्षण है। परन्तु जब उद्जन-बमोंके विस्फोटका धुंआ आकाशमें व्याप्त हो, मृत्यु-भस्म ६०८-७०० मील दूर-दूर तक बिखर कर फैल रही हो, शस्त्रास्त्रकी गूंज दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हो, उस समय अपनी छोटी नभ और जल-सेनाको बनाए रखना

दूरदर्शितापूर्ण नहीं कहा जा सकता। हमारी सेना स्वदेश सुरक्षाके लिए है, इसका उद्देश्य आक्रमण करना नहीं। पर आज आक्रमण और स्व-संरक्षणके मध्य अन्तर ही कितना रह गया है? आकाश-युद्धने देशकी सीमाका अन्त कर दिया है। हमारी नभ और जल-शक्ति इतनी बलवान् और शक्तिशाली अवश्य होनी चाहिए जो शत्रु-सेनाको सिंगापुर और अदन पर रोकनेकी सामर्थ्य और क्षमता रखे। हिन्द-महासागरका नाम तब ही वस्तुतः हिन्दमहासागर होगा। आज इस महासागरकी उत्तुंग लहरों पर भारतका नियन्त्रण नहीं है। इस सत्यको हमें कभी न भूलना चाहिए। देशमें क्षात्र-वृत्तिको उत्तेजन देना चाहिये। इस दृष्टिसे आंशिक बाधित सैनिक-शिक्षा की घोषणाका देश स्वागत ही करेगा। जेट प्लेन बनाने का कारखाना स्थापित करनेमें शीघ्रता करनी चाहिए। पार्लमेंट द्वारा की गई मांगका, कि देश को शस्त्रास्त्रों और युद्ध-सामग्रीकी आवश्यकता पूर्तिकी दृष्टिसे देशको स्वावलम्बी और स्वाश्रयी बनाना चाहिए। देशकी तटस्थ रहनेकी नीतिकी सफलताके लिए यह आवश्यक है। भारतका प्रतिरक्षा-व्यय है:—

(लाख रु० में)

	कुल व्यय	सेना	जलसेना	नभसेना
१९५२-५३	१७९५२	—	—	—
१९५३-५४ बजट	१९९८४	१६३७०	११३१	२५७९
१९५३-५४ अनुवीक्षित	१९९६८	१६१०९	११२८	२८६६
१९५४-५५ बजट	२०५६२	१५९६६	१२१७	३५९०

जल-सेना और नभ-सेनाके व्ययको ही देखकर सहजमें अनुमान किया जा सकता है, कि प्रतिरक्षाके ये दोनों अंग भारत जैसे महान् देशके अनुरूप नहीं हैं। इनके विस्तार और इनके संवर्द्धनकी आवश्यकता है। पंचवर्षीय नियोजनमें भी इस ओर ध्यान नहीं दिया गया। सैनिक उद्योगोंकी स्थापनाके साथ-साथ सेनाकी इन शाखाओंका भी परिवर्द्धन होना चाहिए।

आर्थिक विकासकी योजनाओंकी प्रगति धीमी नहीं की गई है। भाखड़ा, नांगल, हीराकुण्ड, दामोदर-घाटी और तुंगभद्राकी योजनाएँ पूरी हो रही हैं। इसके अतिरिक्त ४० करोड़ रु० अगले दो वर्षोंके लिए निम्न बहुमुखी नदी योजनाओंके वास्ते दिया गया है :—

१. कोसी
२. कोयना
३. कृष्णा
४. चम्बल, और
५. रिंद

कोसी और कोयना योजनायें इस वर्ष प्रारम्भ हो जायेंगी। चम्बल योजनाका काम आरम्भ हो चुका है। नियोजनके अनुसार आर्थिक विकासकी परिकल्पनाओंको पूरा करनेका निर्णय साहसपूर्ण और स्तुत्य है। इसके लिए सरकारने अल्प वित्तीय व्यवस्था या घाटेका अर्थकारण स्वीकार किया है। २५० करोड़ रु० की आवश्यकताकी पूर्ति इस उपायसे की जायगी। इस सीमा तक इस उपायका अवलम्बन मुद्रास्फीतिको क्या जन्म न देगा? इस विषयमें देशके बीच मतभेद है। वित्तमंत्री आशावान हैं कि इसका देशके आर्थिक तंत्र पर कोई कुप्रभाव न पड़ेगा। परन्तु क्या यह राशि बाजारसे ऋण लेकर पूरी नहीं की जा सकती थी? इस प्रश्नका वित्तमंत्रीने कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं दिया है। सिद्धान्ततः इस बातको सब मानते हैं कि नियोजनको सफल बनानेके लिए घाटेका अर्थकारण स्वीकार करनेमें कोई बुराई नहीं। पर, उसकी सीमा क्या हो, यह विवादका विषय है, और यह ऐसा विवाद है, जिसका कभी अन्त न होगा।

कांग्रेसकी पराजय

त्रावनकोर कोचीन और पेप्सुमें हुए साधारण चुनावोंमें कांग्रसको भारी पराजयका मुख देखना पड़ा। त्रावनकोर-कोचीनमें तो आज प्रजा-सोशलिष्ट पार्टीका मंत्रिमण्डल है। पेप्सुमें कांग्रेसी मंत्रिमण्डल है। पर पेप्सुमें कांग्रेसको मिली विजय नैतिक दृष्टिसे उसकी पराजय है। कांग्रेसने अपने आदर्शों और सिद्धान्तोंका बलिदान करके विजय पाई है। जिन तत्वों—सामन्तशाहीके अवशेषों, जागीरदारों, जमींदारों, अशान्तिके उत्तेजक तत्वों—का नाश करनेके लिए कांग्रेस अपना जीवन बताती है, उन्हींके मेल, सहयोग और सहायतासे कांग्रेसने पेप्सुमें ६० मेंसे ३७ स्थान प्राप्त किये हैं। आदर्शोंके साथ समझौता करनेके बाद भी कांग्रेस कुल पड़े मतोंका लगभग ४० प्रतिशत ही प्राप्त कर सकी।

[शेष पृष्ठ ४९ पर]

भगवान्की ओर—

मल्लयुवा

[लेखक—श्री १०८ मान् आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

[द्वैत माया है, अद्वैत मायावी। द्वैत छाया है, अद्वैत छायावान्। द्वैत मेधा है, अद्वैत मेधावी। द्वैत प्रकाश है, अद्वैत प्रकाशवान्। साधारणतया संक्षेपमें कह सकते हैं—यच्च यावत् कल्पित द्वैत है और अद्वैत अकल्पित। कल्पित की ओर प्रवृत्ति दुःखका कारण है और उधरसे निवृत्ति सुखका कारण। अकल्पित सनातन है, कल्पित क्षणिक। 'भगवान् की ओर चलना' का वास्तविक अर्थ है, कल्पितसे मुख मोड़ना। क्षणिक सभी दुःख है, चाहे फिर वह ब्रह्मलोक ही क्यों न हो। सापेक्ष सुख वस्तुतः सुख नहीं। वस्तुतः सुख सनातन महानन्द है। निरपेक्षताकी पराकाष्ठा हुए बिना महानन्दका रस अनुभूत नहीं होता। कल्पितकी ओर उन्मुख होना बहिर्मुखता है और उधरसे निवृत्ति अन्तर्मुखता। जितनी अधिक अन्तर्मुखता होगी, उतनी अधिक आत्मानन्दकी प्राप्ति होगी। भगवान्की प्राप्ति उसीका दूसरा नाम है, और इसीको तत्त्वदर्शी भगवदनुग्रह कहते हैं। शेष सभी निग्रह है। जहां निग्रहकी अनेक घटनाएँ हैं, वहाँ अनुग्रहकी भी बहुत घटनाएँ हैं। अनुग्रह-प्रधान सच्ची घटनाओंके आधार पर हमने कुछ कथानिकाएं (कहानियाँ) लेखबद्ध की हुई हैं, उनको 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठकोंके आग्रहसे प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है प्रेमी पाठकोंको इन कहानियोंके पढ़नेसे भगवदनुग्रह प्राप्त करनेमें सहायता अवश्य मिलेगी।

—अ० वा० आचार्य]

"मल्लजी ! प्रणाम" कहते हुए दोनों हाथ जोड़ कर उसने मल्लजीको सादर प्रणाम किया। वह एक ब्राह्मण कुमार था, बीस बाईस वर्षोंकी वयसका वह नवयुवक यमुना नदीतीरस्थ किसी ग्रामका निवासी था। उसने अपने पितासे ही उपाध्याय वृत्तिकी साधारण शिक्षा प्राप्त की थी। विशेष रूपसे याज्ञिक कृत्यकी शिक्षा प्राप्त करनेकी अभिलाषासे वह कुरुक्षेत्रमें आया था। लगभग तीन वर्ष वहां रहते उसे हो गये थे। इतने समयमें उसके कई मित्र हो गये थे। किन्तु वास्तवमें कोई भी उसके मनके अनुकूल मित्र कोटिमें न आ सकता था। इसी कारण उसने अब तक किसीको भी अपना प्रियमित्र नहीं बनाया था। हां, एक बार अपने घर ही अपने पितासे जब भर्तृहरिके नीतिशतकको उसने पढ़ा था और—

पापान्निवारयति योजयते हिताय
गुह्यं निगूहति गुणान्प्रकटी करोति।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः॥

इस श्लोकको पढ़ा तभीसे वह ऐसे मित्रको प्राप्त करने की बड़ी प्रबल अभिलाषाका अपने हृदयमें निरन्तर वहन करता आ रहा था। कुरुक्षेत्रमें आकर तीन वर्ष बीतनेके पश्चात् उसकी उस चिरन्तन अभिलाषाकी पूर्तिके पहले अरुणोदयकी झांकी एक युवकके दर्शनमें उसे हुई।

विद्यार्थियुवक व्यायामका प्रेमी था। कुरुक्षेत्रमें आये दिन कहीं-न-कहीं मल्ल-युद्धके प्रदर्शन होते ही रहते थे। उन दिनों कुरुक्षेत्र भूमि विद्यासे अधिक शरीर-बलको महत्त्व देने वालोंकी आवासस्थान होती जा रही थी। किसानके पुत्र

भी और विद्वान्के पुत्र भी क्षत्रिय पुत्रोंसे किसी प्रकार भुज-बलमें ऊन होना अपना अपमान मानने लगे थे। म्लेच्छों का शासन भारतवर्षमें चारों ओर छा चुका था। उससे त्राण पानेके लिये आर्य्य जनता प्राण-पणसे सचेष्ट हो रही थी।

महाराष्ट्रमें छत्रपति वीर शिवाजी, मेवाड़में क्षत्रियकुल-कमलदिवाकर महाराणा राजसिंह और कुरुक्षेत्र तथा वाहीकके मध्य वीरश्रेष्ठ गुरु गोविन्दसिंहने अपने बाहुबल से म्लेच्छ-शासनको छिन्न विछिन्न तथा सर्वथा हतप्रभ बना डाला था। जन-जनके हृदयमें सारस्वत होनेकी अपेक्षा शूरसेन बननेकी कामना प्रतिदिन बलवती होती जा रही थी। अधिकतर ब्राह्मण कुमार केवल व्यास, पराशर, वशिष्ठ, आदिको अपना आदर्श न मान कर द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा आदि ब्राह्मण वीरोंको आदर्श मानने लगे थे।

एक दिनकी बात है, एक बहुत बड़े मल्ल युद्धकी योजना थी। विशाल रङ्गभूमि बनाई गयी थी। सभी दर्शकोंके बैठनेके लिये सुव्यवस्थित स्थान बनाये गये थे। भारतवर्षके सभी प्रान्तोंके प्रसिद्ध प्रसिद्ध मल्ल लोग वहां आये थे। वह विद्यार्थी युवक भी मल्लयुद्ध देखने गया था। कई मल्ल विजयी हुए और कई पराजित। इसी बीच एक उसीके वयस्का सुन्दर युवक रंग-भूमिमें उतरता हुआ उसने देखा, मल्ल युवाके श्याम मुख पर बड़ा ही चित्ता-कर्षक लावण्य था। उसके सुगठित शरीरके सभी अवयव समान भावसे परिपुष्ट थे। वृषके समान कन्धे, कपाटके समान वक्षःस्थल, वृकवत् उदर, गम्भीर नाभि, लम्बी भुजाएं, कसे हुए परिपुष्ट ऊरु, बड़े ही मनोरम थे। उन्नत नासिका, विशाल भाल, आकर्ण नेत्र, पुष्ट कपोल, और बड़े बड़े कान इस बातकी साक्षी दे रहे थे कि मानव-कौतुक दर्शनके लिए यदृच्छासे अवतरित यह कोई देवयुवा है। रंगभूमिमें अपने अनेक आलीढ़ प्रत्यालीढ़ आदि पादस्थापन, तथा अनेक दांव पेचोंके कौशल दिखाते हुए जब कई मल्लोंको उसने उत्तान गिरा कर उनके उरःस्थल पर अपना वाम पाद रक्खा तब चारों ओरसे साधुवादकी जय ध्वनि उसको साक्षात् त्रिवि-क्रमावतार बना रही थी। विद्यार्थी युवक मन ही मन उस की सराहना करता हुआ उसको अपना मित्र बनानेकी कामना कर रहा था। उसने भगवती शाकंभरीसे हृदयसे प्रार्थना की— "मातः! यह मल्लयुवा मेरा मित्र हो।" हृदयनिवासिनी भगवतीने प्रार्थना स्वीकृत कर ली और अन्तःप्रेरणारूपिणी वह बोली—"तथास्तु। तुमको भी उससे पूर्ण मित्रभाव बरतना होगा"। मल्ल युद्ध समाप्त हुआ, प्रेक्षक जनता कोलाहल मचा रही थी। विजयी मल्लों को पारितोषिक दिये गये। विद्वानोंने आशीर्वाद दिये, धनवानों ने धन और वस्त्र दिये। विद्यार्थियुवक भी भीड़को चीरता हुआ उस विजयी मल्ल युवाके पास जा पहुंचा। एक बार एक टक उस विद्यार्थी युवकने समवयस्क उस मल्ल-युवाको आपाद मस्तक देखा और "मल्लजी! प्रणाम" कहते हुए दोनों हाथ जोड़ कर सादर प्रणाम किया। प्रत्युत्तरमें मल्ल युवा ने भी दोनों हाथ जोड़कर स्नेहार्द्र दृष्टि डालते हुए विद्यार्थि युवकको सादर प्रणाम किया।

दोनों ही युवक किसी अनिर्वचनीय स्नेहसे सिक्त अनु-भूतिमें निमग्न हो रहे थे। दोनों हीने एक दूसरेके स्वरूप-सुधाका कुछ क्षण निर्निमेष भावसे आकण्ठ पान किया। आसपासके लोग भी चित्रलिखितसे स्तब्ध हो वहां खड़े हो गये थे। योगविद्याविशारदोंकी दृष्टिमें एक ही साधक के कायव्यूहविद्याके बल पर किये गए मानों वे दो शरीर थे। विद्यार्थि युवक समाधिसे व्यथित सा सस्मित वदन हो मल्लयुवासे बोला-

"मल्लवर; मैं आपको अद्यतन आपके विजयके उपलक्ष्य में कुछ पारितोषिक देना चाहता हूं, क्या आप उसे स्वीकार करोगे?"

"स्वप्न जगत्से जाग्रत् जगत्में पदार्पण करते हुए मल्लयुवाने कहा— "जी हां सहर्ष स्वीकार है।"

"लो मैं अपना अभिन्नमित्र हृदय आपको सौंपता हूं" विद्यार्थि युवकने कहा।

मल्लयुवा—"किन्तु मेरा आपका कोई परिचय नहीं। मेरी जातपांत, मेरा आचार, मेरी विचारधारा आपको ज्ञात नहीं, वैसे ही आपकी जातपाँत, आचार विचारका मुझे कोई परिचय नही, ऐसी स्थितिमें आपकी अभिन्न हृदय मित्रताका मुझसे कैसे निभाव होगा? इसकी मुझे बड़ी

चिन्ता है। वैसे तो आपके दर्शनके प्रथम क्षण ही मेरा रोम रोम आपकी अप्रत्याशित निश्छल सहज प्रेमभरी मैत्रीका अभिलाषी हो रहा है। मेरे मनमें ऐसे लगता है जैसे हम दोनों जन्मजन्मान्तरमें चिरकालसे मित्र रहे हों।"

विद्यार्थियुवक— "मल्लवर ! आपका कहना बाह्य व्यवहारसे ठीक है, किन्तु प्रेम बाह्य उपाधियोंकी गिनती नहीं करता। महाकवि भवभूतिका कहना है—

व्यतिषजति पदार्थानान्तरः कोऽपि हेतु-
र्न खलु बहिरुपाधीन्प्रीतयः संश्रयन्ते।

आपके दर्शनसे मेरा चित्त कितना प्रसन्न हुआ है यह भगवान् ही जान सकते हैं। हम दोनोंका बाह्य परिचय भी अब हो ही जायगा।"

दोनों ही युवकोंने परस्पर मैत्री स्वीकृत कर ली। वे दोनों रंगमण्डपसे बाहर आये। मल्लयुवाके साथी मल्ल उसे गले लगा चुके थे। कईयोंने उसे उठा उठाकर उछाल-उछाल हर्ष प्रकट किया था। किन्तु मल्लयुवा एक अज्ञात समवयस्क युवककी अकस्मात् प्राप्त हुई मैत्रीसे बहुत अधिक प्रसन्न था। आज उसे कई वस्त्र और कितने ही रुपये प्राप्त हुए थे। वे दोनों साथ ही साथ कुरुक्षेत्रके बड़े कुण्डकी पाल पर आये। वहीं दोनोंका परस्पर एकान्तमें वार्तालाप हुआ और एक दूसरेकी जातिपांति नामगोत्र आदिका परिचय हुआ। दोनों ही गौड़ ब्राह्मण थे। दोनों की पैतृक वृत्ति याजन और अध्यापन थी। दोनों ही व्यायामके प्रेमी थे। दोनोंके शरीर भी बहुत सुन्दर थे। हां वर्णमें अन्तर था। विद्यार्थि युवक गौर था, मल्लयुवा श्याम। वयस भी समान ही लगभग था। एक आध वर्ष मल्ल युवा बड़ा होगा। वे दोनों जब कभी साथ साथ चलते फिरते तो लोग उनको— 'राम लक्ष्मणकी जोड़ीने अवतार लिया' समझते। और भी कुछ पृथकताएं थीं। मल्लयुवा पठन पाठनमें बहुत थोड़ी रुचि रखता था और व्यायामसे शरीर संवर्धन करनेमें तथा मल्लविद्याकी पारगामितामें बहुत अधिक दत्तचित्त था। विद्यार्थि युवाका आदर्श चाणक्य था। उसकी रुचि पठनपाठनकी ओर ही अधिक झुकी रहती थी। वैसे तो उसने भी अपना शरीर व्यायामसे सुगठित बना रक्खा था। किन्तु उसका व्यायाम दबावकी अपेक्षया खिंचावका अधिक था। दण्ड आसन और प्राणायाममें उसकी रुचि अधिक थी। दण्ड बैठकी करना, मुद्गर गदा फेरना, मलखम्बकी पकड़ें आदि वह भी जानता था। मल्लविद्याकी पारगामितामें उसे आकर्षण नहीं था, उसका विवाह भी हो चुका था। मल्ल युवा ब्रह्मचारी था। उसका विचार भीष्मके समान ब्रह्मचारी वीर बननेका हो रहा था। उसके पिता जब तब उसे पढ़नेमें प्रेरित करते थे, किन्तु वह पढ़नेमें सफल न हो पाता था। उससे छोटे तीन भाई और भी थे। मल्लयुवाके पिता ग्रामोपाध्याय थे। उन्होंने मल्लविद्यामें अपने लड़केको स्वयमेव प्रवृत्त किया था, किन्तु सरस्वतीकी समाराधना उनका पुत्र सर्वथा छोड़ दे ऐसा वे कदापि नहीं चाहते थे। पर अब क्या हो सकता था, बाण धनुषसे छूट चुका था। उसका परतना कहां सम्भव था! तेईस वर्षका वह हो चुका था। पचास पचास कोसमें प्रथम श्रेणीके मल्लोंमें अब उसकी गणना होने लग पड़ी थी। मल्लयुवाके पिता अपनी गलती पर कई बार पश्चात्ताप कर चुके थे। सन्तोषकी बात इतनी अवश्य थी कि उनका लड़का सदाचारी था। उनके समवयस्क जब भी उनके पुत्रकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते और उसके सदाचारिता, शील, विनय, लावण्य, दया आदि का गुण गान करते, तो उनका हृदय बल्लियों उछलता और पांच सेर लहू उनका बढ़ जाता। किन्तु पढ़नेकी ओर उसकी प्रवृत्ति न देख मन मार कर रह जाते। उसका विचार विवाह करनेका नहीं देख वह बहुत चिंतित हो जाते। सात वर्ष हुए मल्ल युवाकी माँ काशीलाभ कर चुकी थी। उसके पिताने दूसरा विवाह भी इसीलिए न किया कि थोड़े दिन कष्टके कट जाएंगे, पुत्र बड़े हो रहे हैं, उनके ब्याह हो जाएंगे, रोटी पानीका समस्या सुलझ जाएगी। बच्चोंके लिए सौतेली मां लाकर घरमें आये दिनके कलह और अनेक झंझटोंको मोल लेना उन्होंने पसंद न किया। उन्होंने अपने कई सगे सम्बन्धियोंके घर इन्हीं सापत्नमातृजन्य कलहोंसे उजड़ते देखे थे। वे भली भांति जानते थे कि विषय सुख खुजलीका सुख है जो परिणाममें रुलाना ही रुलाना पसंद करता है। हाँ, पुत्रोंके विवाहकी उन्हें अब त्वरा थी। पर उनका बड़ा पुत्र मल्लविद्यामें ज्योंज्यों निपुण हो रहा था त्यों त्यों उनकी मानसिक चिन्ता बढ़ती जा रही थी। हाथों रोटियां सेक सेकके वे अब उकता गये थे। वे अब निर्णय कर डालना चाहते थे कि उनका बड़ा पुत्र क्या चाहता है। वैसे तो उसके सङ्गी साथियोंसे उसके पिताको ज्ञात हो चुका

था कि मल्लयुवा आजन्म ब्रह्मचारी रहना चाहता है। फिर भी उससे प्रत्यक्ष बात करके किसी निश्चयके सिरे पहुँच जाना वे आवश्यक इसलिये समझते थे कि उनके दूसरे पुत्रोंका वे ब्याह कर सकें। उस दिन जब कुरुक्षेत्र के बड़े दंगलमें मल्लयुवाने कई नामी ग्रामी मल्लों पर विजय पायी और सैकड़ों युवकों और सहस्रों वृद्धोंके मुखसे उसकी प्रशंसा उसके पिताने सुनी तो किसी अवर्णनीय आनन्दने उनका हृदय भर दिया। कई पुत्रियोंके पिता मल्लयुवाको अपना जामाता बनाना चाह रहे थे। इसी कारण प्रायः प्रतिदिन कोई न कोई सज्जन उसके पिता से मिलने आते ही रहते थे। किन्तु मल्लयुवाके पिताको 'हां सोच रहा हूँ' 'उसको पूछकर कहूंगा' इस उत्तरको छोड़ कुछ भी न सूझता था। मल्लयुवाके पिता ग्रामवृत्तिके चक्करमें अबेर सबेर ही घर रह पाते थे। और उनका पुत्र भी अपनी मलविद्याकी सार सँवारमें ऐसा लगा रहता कि दोनों पिता पुत्रोंको आपस में मिलकर वार्ताका अवसर ही न मिलता।

व्यायाम करने वालोंको निद्राकी आवश्यकता अधिक रहती है और भोजन की उससे भी अधिक। मल्लयुवाकी मल्लशाला उसके घरसे एक कोससे कुछ ही अधिक दूर पर थी। दो तीन वर्षोंसे उसके गुरुवर इतने प्रसन्न थे कि उसके भोजनका प्रबन्ध भी उन्होंने ही कर दिया था। भोजन बना बनाया मल्लयुवाके पास पहुंच जाता। मल्लशाला के युवगुरु पद पर उसका अभिषेक हो गया था। मल्लयुवा दोनों समय बादामका घोटा पीता था और वह भोजन दो बार करता। आधसेर घृत, पांच सेर दूध, दो सौ बादाम कुछ सामयिक फल प्रति दिन दाल रोटी के अतिरिक्त उसका आहार था। तैल मर्दनमें प्रतिदिन तीन घंटे बीतने लगे थे। इन्हीं कारणोंसे उसे घर जानेको अवसर ही न मिलता। घरमें उसे आकर्षण भी तो न था। उसके पिता से उसके गुरुने एक प्रकार उसे मांग लिया था। उसके गुरु की इच्छा थी कि उनका शिष्य मल्लजगत्में विश्व-विजयी हो। सभी शिष्योंको उसके गुरुका प्यार प्राप्त था। किन्तु उस मल्लयुवाको उसके गुरुके बहिश्चर प्राण कहनेमें कोई अत्युक्ति न हो सकती थी। उसके गुरुदेव जातिसे ब्राह्मण ही थे, पर कुरुक्षेत्रके नहीं। वे सीमाप्रान्तको अपनी जन्म-भूमि बताते थे। पचीस छब्बीस वर्षकी अवस्थामें वे इस प्रदेशमें पहले पहल आ बसे थे। लगभग पैंतीस वर्ष उनको यहां रहते हो चुके थे। वे देवीके अनन्य भक्त थे और वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी। उनके शिष्योंमें सभी जातिके बालक थे। उस मल्लयुवाको शिष्य रूपमें पाकर उसके गुरु-देव अपनेको कृतकृत्य मानने लगे थे। उसके पिताने एक दिन उसके गुरुसे बातचीत करके निर्णय कर डाला। पुत्रने अपने पितासे छोटे भाईका विवाह कर देनेको कह दिया और स्वयं आजन्म अविवाहित रहनेका निश्चय प्रकट कर दिया। इस निश्चयसे पिताको सन्तोष तो न हुआ पर 'विधाताके विधान पर सभी परवश हैं' यों सोच चुप हो गये। उसके गुरुदेव इस बातसे बड़े सन्तुष्ट थे।

बड़े दंगलमें विजयके उपलक्ष्यमें जिस विद्यार्थि-युवक को मल्लयुवाने मित्र रूपमें प्राप्त किया था उसकी परिस्थिति सर्वथा भिन्न थी। वह अपने ग्रामसे कुरुक्षेत्रमें पढ़ने आया था। वह पाठशालामें ही रहता था। भोजनादि सभी प्रकार का पाठशालामें प्रबन्ध था। उसे आवश्यक अध्ययन समाप्त कर शीघ्रसे शीघ्र घर जाना था और घर गृहस्थीका भार वहन करना था। मल्लशालासे उसकी पाठशाला तीन कोस दूर थी। मल्लयुवाके साथ मैत्री जोड़ वह अति प्रसन्न था। प्रतिदिन मिलकर वे दोनों प्रसन्नताको अधिक बढ़ाना चाहते थे, परन्तु परिस्थितिवश वे ऐसा नहीं कर पाते थे। विद्यार्थियुवक अनध्यायके अवसर पर मल्लयुवासे मिलने जाता था और घंटे दो घंटे उसके साथ रह कर अपनी पाठ-शालामें आ जाता था। लगभग दो वर्ष ऐसा ही क्रम चल रहा था। दोनोंकी मैत्री घनिष्ठ हो गयी थी। परस्पर कई प्रकारके वार्तालाप होते रहते थे। विद्यार्थियुवक भगवती श्रीशाकम्भरीका अनन्य उपासक था। मल्लयुवा थोड़ी शास्त्री (देवनागरी) पढ़ सकता था। मन्त्र तन्त्र दीक्षा आदिसे वह सर्वथा अपरिचित था। पहले तो उपनयन संस्कारको उसके वैसे ही विलम्ब हुआ और फिर विवाह न होनेके कारण वह हो ही न सका। मल्लशालामें अपने गुरु-देवके समीप ही वह प्रायः रहता था। उसके गुरुदेवने मल्ल-विद्याके लिये ही उपनयन किया था, जिसमें उपवीतकी आवश्यकता ही नहीं होती। उसके गुरुदेवके भी यज्ञोपवीत नहीं था। "मल्लोंके लिये तो लंगोटा ही यज्ञोपवीत है" हँसते हुए उसके गुरुदेव कभी कभी यों कह दिया करते। कभी कह देते कि—"जो अपने वीर्यकी निरन्तर रक्षा करता है उसको गलेमें यज्ञोपवीतकी आवश्यकता नहीं, हो तो भी ठीक और न हो तो भी ठीक"।

[क्रमशः]

❀ स्वातन्त्र्य ❀

[ले०— श्री प्रो० बलजिन्नाथ पण्डित शास्त्री एम. ए; एम. ओ. एल.]

[गताङ्कसे आगे]

पारमार्थिक पारतन्त्र्य

पारमार्थिक परतन्त्रता वस्तुतः एक ही वस्तु है। वह है अपने स्वरूपका अज्ञान। उस स्वरूपके अज्ञानके ही कई प्रकार हैं; और उसीके आधार पर अनेक प्रकारकी परतन्त्रता का उल्लास हो रहा है। हमारा स्वरूप पूर्ण स्वातन्त्र्य रूप परमेश्वरता है। वह परमेश्वरता क्या है? वह है इस प्रकार का अपने आपका विमर्श, जिसमें समस्त ब्रह्माण्ड ही अपना आप हो। जैसे बीजमें वृक्षके पत्ते, फल फूल शाखायें, मूल आदि सभी विचित्र वस्तुएं बीज रूपमें ही रहती हैं, उसी प्रकारसे परमेश्वरमें समस्त ब्रह्माण्ड पूर्ण अहं (मैं) रूपमें ही सदैव विद्यमान है। वहां भेद भाव का नाम भी नहीं। पूर्णाऽभेदकी वह दशा शुद्ध प्रकाशमयी और शुद्ध विमर्शमयी है। प्रकाशकी ही महत्तासे उसे सत् कहते हैं, विमर्श ही चैतन्य है, पत्थरोंको अपने आपका विमर्श करनेकी शक्ति नहीं, पत्थर यह नहीं समझते, कि हम हैं। इसीलिए उन्हें जड कहते हैं, चेतन नहीं। चैतन्य का ही नाम चित् है, विमर्शकी ही महिमासे उसे चित् कहते हैं। प्रकाश और विमर्शके क्षीर और नीरके जैसे पूर्ण अभेदको हम उनका समरस-भाव कहते हैं। उसीको आनन्द कहते हैं, इसलिए यह दशा पूर्ण सत् चित् आनन्द की दशा है, पूर्ण सच्चिदानन्द ही हमारा वास्तविक स्वरूप है। इस वास्तविक स्वरूपको न समझना अपने आपको अपूर्ण शरीर प्राण बुद्धि या शून्य समझना ही स्वरूपका अज्ञान है। इससे पूर्ण होते हुए भी हम अपूर्ण जैसे बन जाते हैं। यह हमारी परतन्त्रता है। इसको हम आणवमल कहते हैं। इस मलको मिटाकर हमने अणु (छोटे) रूपको छोड़कर ब्रह्म (बड़े) रूपको समझना है, तब हमें पारमार्थिक स्वातन्त्र्यकी प्राप्ति हो सकती है। हमारे स्वातन्त्र्यके दो रूप हैं, पूर्णप्रकाशरूपता और पूर्णविमर्श रूपता, इनमेंसे किसी एकके या दोनोंके भूल जानेसे तीन प्रकारसे स्वरूपका अज्ञान होता है। आणवमलके कारण जब हमारा स्वरूप संकुचित हो गया तो हम दूसरे जीवों और संसारको अपने आपसे भिन्न समझने लगे। यह भेद-भाव ही हमारा मायीय मल है, इस मलको भी हमें मिटा देना होगा, क्योंकि यह भी परतन्त्रता है, इस दशामें हम पूर्ण स्वावलम्बी नहीं। यहां भी हम परमुखप्रेक्षी हैं। आणव मलकी दशामें भी पर सुखप्रेक्षी ही है। पूर्ण स्वावलम्बी तो केवल परमेश्वरताकी दशामें हैं। वहां दूसरा कोई है ही नहीं, जिसको देखना पड़े। वहां तो सब कुछ "स्व" ही "स्व" है, 'पर' तो वहां है ही नहीं। 'पर' भी वहां 'स्व' ही बन गया है। भेदभाव और स्वरूप-संकोचके कारण हम किसी वस्तुको अनुकूल और किसी वस्तुको प्रतिकूल समझते हैं। अनुकूल-प्राप्ति और प्रतिकूल-निवृत्तिके लिए हम अनेक प्रकारके प्रयत्न करते हैं। उन प्रयत्नोंमेंसे कुछ हमारे मलोंको बढाने वाले और कुछ घटाने वाले होते हैं। ये ही हमारे शुभ और अशुभ कर्म हैं। तो यह तीसरा कार्म मल है, इस मलके कारण हम एक शरीरको छोड़कर दूसरे शरीरमें चले जाते हैं। इस तरहसे जन्म मरणके चक्रमें फंस जाते हैं। कभी मनुष्य कभी देवता, कभी पशु कभी पक्षी, कभी जरायुज कभी अंडज, कभी स्वेदज और कभी उद्भिज्ज बन जाते हैं। अनन्त जन्मोंमें अपने कर्मोंका फल भोगते रहते हैं, यह तीसरा मल ही बड़ा घोर मल है, अनन्त प्रकारकी परतन्त्रता इसके कारण आ जाती है। जितनी भी व्यावहारिक परतन्त्रता है, सब इसी कार्ममलका फल है, इन्हीं मलोंके आधार पर कंचुकोंका विकास होता है, ये कञ्चुक हमारे पूर्ण स्वातन्त्र्यको पांच प्रकारसे ढांप लेते हैं। इनमेंसे पहिला है काल। हमारा स्वातन्त्र्यकालसे अतीत है, फिर भी हम इस कञ्चुकके प्रभावसे अपने आपको कालके अधीन समझने लगते हैं। इसीलिए हम मृत्युसे और विनाशसे घबरा जाते हैं। यह हमारी एक और परतन्त्रता है, हमारी वास्तविक परमेश्वरता दो प्रकारकी है, वह है पूर्ण ज्ञान शक्ति और पूर्ण

क्रिया-शक्ति, परन्तु संकोचकी दशामें हम कुछ जान सकते हैं, और कुछ नहीं, कुछ कर सकते हैं, और कुछ नहीं। हम सर्वज्ञ होकर भी अल्पज्ञ हैं। सर्वकर्ता होकर भी अल्प कर्ता हैं। यह हमारे दो और कञ्चुक हैं। अल्पज्ञताको अविद्या और अल्पकर्तृकताको कला कहते हैं। ऊपर कहा गया है, कि हम संकोचके कारण किसी वस्तुको अनुकूल और किसीको प्रतिकूल समझते हैं। अनुकूल वस्तुको चाहना और प्रतिकूल वस्तुको न चाहना हमारा स्वभाव बन गया है। यह हमारा चौथा कञ्चुक है। इसे राग कहते हैं। इस संकोचकी दशामें परमेश्वरने अपनी नियति शक्तिका शासन स्थापित कर दिया है, इसके प्रभावसे हमें किसी ही वस्तुसे इष्टकी प्राप्ति हो सकती है, सबसे नहीं, नेत्रोंसे ही देख सकते हैं, रूपवाली वस्तुको ही प्रकाशमें देख सकते हैं, इस प्रकारके नियमोंके अधीन हम हैं। इस नियतिको भी शास्त्रोंमें कंचुकोंमें गिना जाता है। मायाको भी एक और कंचुक माना गया है।

इन पांच या छः कंचुकोंके अतिरिक्त परमेश्वरने अपने आपको चार अण्डोंमें घेर कर रखा है, पहिला अण्ड है, शक्ति का अण्ड, यह तो परमेश्वरका स्वभावभूत विशेषण है, यही उसकी परमेश्वरता है, यही उसका स्वातन्त्र्य है, इसीकी महिमासे वह जगद्रूप बन जाता है, इसीके सामर्थ्य से स्वरूपका संकोच होते होते माया प्रकट हो जाती है, इस अण्डके भीतर परमेश्वर अपने अभेदको भूलता नहीं, परन्तु साथ ही भेदका भी आविर्भाव होने लगता है, इसीलिए इस अंडको भेदाभेद दशा कहा गया है, यह अण्ड हम लोगोंकी अपेक्षासे अत्यन्त शुद्ध दशा है, परन्तु परमेश्वरताकी अपेक्षा अशुद्ध दशा है, इसलिए इसे शुद्धाशुद्ध दशा कहते हैं, यह भगवान् सदाशिव और ईश्वरकी दशा है, इस दशामें परमेश्वर जगतको पूर्ण अभेदकी दृष्टिसे देखता नहीं, इस दशा में परमेश्वरको अपनी प्रकाशताका भी विमर्श होता है, और साथ ही संसारकी संसारताका भी, परन्तु दोनोंमें अभेद प्रतीत होता है, यहां संसार पूर्ण अहंरूप नहीं है, यह दशा (अहम् इदम्) 'मैं यह हूं' की दशा है। पारमार्थिक स्वातन्त्र्यको पानेके लिए इदंताको पूरी तरहसे पूर्ण अहंतामें लीन कर देनेके लिए केवल परिपूर्ण अहंताकी ही अभिव्यक्ति के लिए इस थोड़ी सी परतन्त्रताको भी मिटा देना होता है। यहां अपने पूर्ण रूपका विमर्श करनेके लिए संसारका भी इदं रूपमें आश्रय लेना पड़ता है, तभी तो अहम् इदम् ऐसा विमर्श होता है, इस तरहसे यह दशा भी परमुखप्रेक्षितासे शून्य नहीं है, अतः यह भी पराधीनता ही है। शाक्त अण्ड के ऊपर मायीय अण्ड चढता है, इसीमें परमेश्वर कंचुकोंसे ढांपा जाता है, और जीव बन जाता है, यह पूर्ण भेदकी दशा है, यहीं पर परमेश्वरको अंड या पशु कहते हैं, यहां वह पतिभावको सर्वथा भूल जाता है, शाक्त अंड तो पर अंड है, पर यह मायीय अंड सूक्ष्म अण्ड कहा जाता है।

तीसरा अण्ड भी सूक्ष्म ही है, उसे प्राकृत अण्ड कहते हैं, सत्वगुण रजोगुण और तमोगुण के समरस भावका नाम प्रकृति है, परमेश्वरकी ज्ञान, क्रिया, माया नामकी तीन शक्तियाँ ही संकोच दशामें सत्व, रज, तथा तम तीन गुण बन जाते हैं, परमेश्वरको अपनी सत्ताका पूर्ण आनन्द है। पशुको वह आनन्द है भी और नहीं भी है, सुखकी दशामें वह आनन्द है, पर सुषुप्ति या मूर्च्छाकी दशामें अपनी सत्ताका स्फुट आनन्द नहीं है। ये आनन्द और आनन्द-अभाव ही सत्वगुण और तमोगुण हैं, सत्वगुण आनन्द रूप है, और तमोगुण आनन्दका अभाव रूप है। इसीलिए इसे मोहरूप माना गया है। किसी समय आनन्द भी होता है, पर साथ आनन्दका अभाव भी। किसीका प्रिय पुत्र, अत्यन्त रोगी है, उसे देख कर प्रिय पुत्र होनेकी भावना आनन्दमयी है, परन्तु अतिरोगी होनेकी भावना आनन्दाभावमयी है, यही सत्वगुण और तमोगुणके मिश्रण की दुःखमयी दशा रजोगुण है। ये सुख दुःख और मोह भी जीवके लिए परतन्त्रता रूप हैं, पारमार्थिक स्वातन्त्र्यके लिए इन दोनों अण्डोंका भेद करके अपने पूर्ण स्वातन्त्र्यको पहिचान लेना होता है। चौथा अण्ड पार्थिव अण्ड है, प्राकृत अण्डको परमेश्वर पृथ्वी आदि पांच भूतोंसे घेर लेता है, इनमें सबसे अधिक स्थूल पृथ्वी है, इसीलिए इसका नाम पार्थिव अण्ड है; स्थूलताके ही कारण इस अण्डको स्थूल अंड कहते हैं, इस अण्डमें आकर परमेश्वर भिन्न-भिन्न योनियोंमें प्रवेश करता हुआ अनन्त प्रकारकी पराधीनताका पात्र बन जाता है। यह अण्ड कर्ममलका स्थूल

पौराणिक देवोंका चरित्र

[श्री दीनानाथ शर्मा शास्त्री सारस्वत; विद्यावागीश विद्याभूषण विद्यानिधि]

'श्रीस्वाध्याय' के विद्वान् पाठकोंने 'ब्राह्मण-सावधान' पुस्तिकामें श्रीसम्पूर्णानन्दजी महोदयके द्वारा आक्षिप्त पौराणिक देवचरित्र चर्चा पर हमारी आलोचना गत-अङ्कोंमें देखी होंगी; अब उनकी अन्य एतद्विषयक बातोंपर भी विचार किया जाता है।

आप लिखते हैं—'देवता लोग किसीका उत्कर्ष नहीं सह सकते। किसीको तपस्या करते देख कांप उठते हैं' इस पर यह जानना चाहिये कि—पुराणोंमें कहीं किसीको लोक-दृष्टिसे बढ़ानेके लिए अर्थवाद भी प्रयुक्त किये जाते हैं। अर्थवादका शब्दार्थमें तात्पर्य नहीं हुआ करता, किन्तु एक विशेष आशय होता है। वहाँ उस व्यक्तिकी तपस्याकी उच्चता विवक्षित होती है। कहीं पुराणकार वेदानुकूल देवताओंकी वैसी प्रकृति भी दिखला दिया करते हैं। वेदमें कहा है—

मा नो मेधां, मा नो दीक्षां, मानो हिंसिष्टं यत् तपः'
(अथर्व० १६।४०।३)

यहां पर देवगण द्वारा तपस्याकी हिंसाको आशंकित करके उनसे उसके निषेधकी प्रार्थना की गई है।

'मानः पथः पित्र्यान्मानवाद् अधिदूरं नेष्ट परावतः'
(ऋ० सं० ८।३०।३५)

यहां पर देवताओंसे प्रार्थना की गईहै कि—हमें पितृ-परम्परा प्राप्त धर्मसे दूर मत करो। इस देवप्रार्थनासे ही सिद्ध हो रहा है कि—देवता कभी किसीको धर्म-मार्गसे भी दूर कर दिया करते हैं, और उसमें कई विघ्न कर दिया करते हैं, जैसे कि—'बृहदारण्यक उपनिषद्' में कहा है—

'यावन्तो देवास्त्वयि जातवेदः ! तिर्यञ्चो घ्नन्ति पुरुषस्य कामान्' (६।३।१)

यहां देवताओंके लिए कहा गया 'तिर्यंचः' शब्द तथा 'कामान् घ्नन्ति' आदि शब्द पौराणिक देव-प्रकृतिके मूल हैं तब इसमें पुराणोंके कथनकी श्रीसम्पूर्णानन्दाभिमत निर्मूलता तो हट जाती है। वेद ही उसका मूल सिद्ध हो जाता है। इससे सिद्ध हो जाता है कि—वेद सूत्र हैं और पुराण भाष्य हैं। तब सूत्रकी तदभिमत व्याख्या करने वाला भाष्य कैसे निन्दित कहा जा सकता है ?

पतित होनेके लिए सब योनियोंमें समान नियम नहीं हुआ करते। देवयोनि भोगयोनि है और मनुष्य कर्मयोनि है—यह हम पूर्वके लेखोंमें बता चुके हैं। परन्तु देवताओं की जाति अपनेसे उन्नत होनेसे मनुष्यसे प्रणाम-योग्य तो हुआ करती है। माता-पिता तथा—

रूप है। इसको आप शरीरधारी कार्ममल कहिए। यही घोर बन्धन है। इससे सभी डर जाते हैं। इसी अण्डसे छूटनेके लिए सभी पूजा पाठ जप तप आदि अनन्त उपाय शास्त्रोंमें कहे हैं, पराधीनताके अनर्थोंमें यह सबसे बड़ा अनर्थ है, इसी अण्डका भेदन करना अत्यन्त कठिन होता है। पार्थिव अण्डका भेदन करके और कार्ममलको धोकर बहुत शीघ्र ही जीव अपने पारमार्थिक स्वातन्त्र्यको पा जाता है, इस तरहसे पारमार्थिक पराधीनताके मिलेजुले चित्रमें तीन मल, चार अण्ड और पांच कञ्चुक ही बन्धनकी प्रधान बेड़ियां दीख पड़ती हैं, मायाको भी कहीं कहीं कंचुकों में गिना गया है। तब कञ्चुक छः बन जाते हैं। [इन प्रधान बेड़ियोंको तोड़ देने पर ही परमार्थिक स्वतन्त्रताका लाभ हो सकता है, योग शास्त्रके क्लेश कर्म और विपाक इन्हीं बन्धनों में संगृहीत हैं, कार्ममलमें कर्म और विपाक (फल) का साक्षात् ग्रहण किया गया, पांच क्लेशोंमेंसे अविद्या योग शास्त्रमें स्वरूपके अज्ञानको कहते हैं, उसका भी ग्रहण किया गया। अस्मिता वे अहम्भावको कहते हैं, संकुचित अहम्भावको हमने भी बन्धन माना। रागको हमने गिन ही लिया, रागके ही भीतर योग शास्त्रका द्वेष भी आ गया। क्योंकि रागमें हमने इष्टता और अनिष्टता दोनोंको गिन लिया। संकुचित बन कर शुभ और अशुभ कर्मोंमें जो प्रवृत्ति हमने मान ली, वहीं योगशास्त्रका अभिनिवेश है।

[क्रमशः]

'यानि अस्माकं सुचरितानि तानि त्वया उपास्यानि, नो इतराणि' (तैत्तिरीयोपनिषत् १।११।२-३)

यह उपदेश देने वाले गुरु लोग जितने भी दोषोंसे युक्त हों—फिर भी हमसे वन्दनीय ही हुआ करते हैं। अपने दोषोंके उत्तरदायी वे स्वयं ही हैं—हमें उन दोषोंसे कुछ भी सरोकार नहीं। हमने तो उन गुरुओंके प्रति अपना ही कर्तव्य पूरा करना है।

गायको श्रीसम्पूर्णानन्दजी भी वेदानुसार पूजनीय मानते होंगे, यदि उसीसे उत्पन्न और अब बैल बने हुए बछड़ेसे उसका मैथुन हो जावे; वा अपने पिता बैलसे; तब क्या वे यह कहेंगे कि—यह गाय ऐसे चरित्र वाली है; वेद ने इसे पूज्य कैसे कहा ? ऐसे ही तर्कको आप भोगयोनि देवजाति पर कर रहे हैं। दोनों योनियोंकी समान मर्यादा नहीं होती—यह आप जानते हुए भी उससे अनजान बनते हैं। आप नासत्यों—दोनों अश्वियों पर कितनी बड़ी श्रद्धा रखते हैं; परन्तु 'शतपथ ब्राह्मण' में वे ही अश्वी वृद्ध च्यवन की पत्नी सुकन्याको कहते हैं—

'सुकन्ये ! कमिमं जीर्णिं कृत्यारूपमुपशेषे,
आवामनुप्रे हि' (४।१।५।६)

अर्थात् इस बूढ़े, राक्षसी आकृति वाले किसके पास पड़ी है ? हमारे साथ चल। देखिये—देवोंने मानुषीको कैसा विपरीत मार्ग दिखाया ? पर उस मानुषीने उन देवोंसे कहा—

'यस्मै मां पिताऽदाद्, नैव अहं तं जीवन्तं
हास्यामीति' (४।१।५।६)।

अर्थात्—मुझे पिताने जिसे दिया है—उस जीते हुएको मैं नहीं छोड़ूंगी। अब मित्रावरुण देवताओंके लिए आप निरुक्तके वचनको भी सुनिये—

'उर्वशी ह अप्सरा ......तस्या दर्शनाद् मित्रावरुणयो रेतश्चस्कन्द। तदभिवादिनी एषा ऋग् भवति' (५।१३।१, ५।१४।१)

अब प्रजापतिका दुहितृगमन देखिये—

'प्रजापतिः स्वां दुहितरमधिष्कन्' (ऋ. सं. १०।६१।७)

इन उद्धरणोंका जो अर्थ आप वेदमें करें, वही पुराणप्रोक्त ऐसी कथाओंमें भी कर लीजिये। व्यर्थ ही पुराणों पर दोष न देते जाइये।

तब स्पष्ट है कि—देवोंको कुछ भी दोष नहीं होता; क्योंकि—'तेजीयसां न दोषाय' (श्रीमद्भा० १०।३३।३०) 'तेषां तेजोविशेषेण प्रत्यवायो न विद्यते' (आपस्तम्बधर्मसूत्र २।१३।८) आशा है कि—श्री संपूर्णानन्दजी दोष-दृष्टि छोड़ देंगे, क्योंकि—

नचात्रातीव कर्तव्यं दोषदृष्टिपरं मनः।
दोषो ह्यविद्यमानोपि तच्चित्तानां प्रकाशते' ॥

दोषदृष्टि रखने पर अविद्यमान भी दोष प्रतीत होने लगते हैं। इससे "परन्तु वैदिक वाङ्मयमें जिसको पुराण का आदि स्रोत बतलाया जाता है—देवोंके प्रति ऐसी बातें नहीं मिलती हैं" यह श्री सम्पूर्णानन्दजीकी प्रतिज्ञा अशुद्ध सिद्ध हो गई—यह पाठकोंने देख लिया होगा—हम स्थालीपुलाक-न्यायसे वैदिक वाङ्मयसे वैसे उद्धरण दे ही चुके हैं। तब वे देवचरित्रका वेदमें जो अर्थ करेंगे, वैसा ही पुराण में भी कर लें।

"उनसे तो हम साधारण मनुष्य ही अच्छे हैं" यह श्रीसम्पूर्णानन्दजी का कथन भी ठीक नहीं। मनुष्य आजकल क्या-क्या कर रहा है—यह क्या आप नहीं जानते ? बाहरसे गम्भीरभाव और भीतरका कुछ पता नहीं। 'मुंह में राम बगलमें छुरी' इन कारणोंसे मनुष्यका ज्ञान नहीं होता।

'नैव देवा अति क्रामन्ति, न पशवः, मनुष्या एव एके अति क्रामन्ति' (शतपथ० २।४।२।६)

इससे मनुष्य दूधका धुला सिद्ध नहीं हो जाता। वह बहुतोंका स्वार्थ काट रहा होता है, बहुतोंके मर्म बीन्ध रहा होता है; दूसरोंके विचारोंको दबा रहा होता है, दारुण कर्मों को कर रहा होता है। बहुतसे श्रेष्ठ मनुष्य भी होते हैं—इससे नकार नहीं किया जा सकता; उसका श्रेय भी हमारे पुराण-इतिहास पर है, और हमारे ऋषि-मुनियों पर है, जिनसे कहे हुए विधि-निषेधोंको हम भविष्यत् जन्मके बिगड़नेके डरसे पूर्ण कर रहे होते हैं, परन्तु देवों पर किसी शास्त्र आदिका अंकुश नहीं होता।

आगे आप लिखते हैं—'वास्तविक अर्थात् उपास्य देव वह हैं, जिन्होंने अपने प्रबल तप और पुण्यसे देवपद प्राप्त किया है, इनके लिए देवत्व भोग नहीं, वरन् कर्मकी भूमि है' यह आपने कहा तो सही; पर इसे सिद्ध नहीं किया।

यदि आप देवत्वको कर्मभूमि मानते हैं; तो इन्द्र आदिको भी 'आजानदेव' न कहकर आप 'कर्मदेव' कहिये। यदि आप ऐसा नहीं कहते; तब स्पष्ट है कि—उनका देवत्व भोग-भूमि ही है। 'अश्नन्ति दिव्यान् दिवि देवभोगान्' (गीता ९।२०) इससे द्यु लोक देवताओंकी भोगभूमि सिद्ध है। कर्मभूमि होने पर देवोंके लिए 'क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति' (९।२१) यह प्रवाद व्यर्थ हो जाता।

देवताओंके लिए आप लिखते हैं—"भूलते-भटकते मनुष्योंको ....भाईकी भांति हाथ पकड़ कर ले चलते हैं। देव अपनी समाधिजन्य प्रज्ञा और विभूतिका उपयोग भव-समुद्रमें पड़े हुए अल्पवीर्य अल्पमेध प्राणियोंके हितार्थ करते रहते हैं" यह ऐसे ही है पर तब, जबकि कोई उनको तप-स्यासे प्रसन्न करता है। नहीं तो—

'यस्मै देवाः प्रयच्छन्ति पुरुषाय पराभवम्।
बुद्धिं तस्यापकर्षन्ति सोऽवाचीनानि पश्यति।
(उद्योग० ३४।८१)

इस महाभारतके वचनानुसार उसकी बुद्धि भी छीन लेते हैं।

आगे आप लिखते हैं—"यह ठीक है कि—मनुष्यको चाहिये कि—हव्य और स्तुतिसे देवोंका संतर्पण करें, पर इसलिए नहीं कि—इसके बिना देवगणका कोई काम रुक जाता है, प्रत्युत इसलिए कि—कर्तव्यका पालन न करना अधर्म है" वस्तुतः देवताओंको भी आप्यायन शक्ति मनुष्यों से ही प्राप्त होती है। इसलिए ही 'श्रीभगवद्गीता' में कहा है—

देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ' ॥ (३।११)

देवताओंको यदि हव्य न दिया जाय तो वे अनावृष्टि, अतिवृष्टि आदिसे मनुष्योंको दुःख दिया करते हैं; क्योंकि यह उनका भोजन है। इसलिए दिव्य उत्पातोंकी शांत्यर्थ वेदोंमें प्रार्थना आई है—

'शान्ता द्यौः ··शान्तमिदमुरु अन्तरिक्षम्' (अथर्व० १९।९।१) 'उत्पाताः पार्थिवान्तरिक्षाः शं नो दिविचरा ग्रहाः' (अथर्व० १९।९।७)

तभी इन्द्रके इस वचनका यजमान अनुवाद करता है—'देहि मे [मुझ इन्द्रको दे] ददामि ते [तुझ यजमानको दूंगा] नि मे धेहि [मुझ इन्द्र में डाल] नि ते दधे [तुझ यजमानमें भी फल डालूंगा] फिर यजमान कहता है—निहारं च हरासि मे [मुझ यजमानको तुम फल देना] निहारं निहराणि ते' [तुझ इन्द्रको उसका मूल्य स्वरूप हवि देता हूं] (यजुर्वेद ३।५०) इससे पूर्व यजमान कहता है—'वस्नेव विक्रीणावहै इषमूर्जं शतक्रतो।' (३।४९) 'हे इन्द्र! हम दोनोंके बीचमें कपड़े बेचने खरीदने वालेकी भाँति सौदा हो। मैं तुम्हें हवि दूंगा, तुम मुझे फल देना'। इसीलिए अगस्त्य द्वारा इन्द्रको छोड़कर मरुतोंको हवि देनेसे इन्द्रका परिदेवन (मन्युपूर्वक विलाप) निरुक्त (१।५।१३) में प्रसिद्ध है, इस प्रकार देवताओंको भी हव्य लेनेकी आवश्यकता सिद्ध है।

आगे आप लिखते हैं—"जो श्रुति साक्षात् धर्ममूर्ति है, उसमें आदिसे अन्त तक जिन देवोंकी महिमा गाई गई है, उनको दुराचारी कहनेसे बढ़कर अधर्म और क्या होगा" हम तो देवताओंको दुराचारी नहीं कहते; आप ही कह रहे हैं। हम तो कहते हैं कि—मनुष्य-शास्त्रसे कहा हुआ सदा-चार-दुराचारका लक्षण सब योनियोंमें समान नहीं घटता। मनुष्योंमें जो दुराचार है; देवताओंमें भी वह दुराचार रहे—यह अनिवार्य नहीं; यह हम पहले स्पष्ट कर चुके हैं।

फिर कहते हैं—'जहां-जहां वैदिक यज्ञादिका अनुष्ठान आता है, वहां पहले 'इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि' यह अपना संकल्प करना होता है, क्योंकि—शतपथके शब्दोंमें 'अमेध्यो वै पुरुषो यदनृतं वदति' कहा है, और यही देवगण जिनको उद्दिष्ट करके यज्ञ किये जाते हैं, हमारे सामने मनुष्यों से भी गये-बीते अनृतात्माओंके रूपमें रखे जाते हैं' यह भी आपका कथन व्यर्थ है। आपसे उद्धृत शतपथके शब्दोंने ही यह निर्णय दिया है कि पुरुष (मनुष्य) असत्यवादी होनेसे अमेध्य हो जाता है—इससे अनृतवदनसे देवताओंका अमेध्य होना व्यावृत्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त सत्य और असत्यका एक लक्षण भी कभी बनाया नहीं जा सकता। एक गाय कहीं दौड़ती हुई जा रही है, कुछ समय के बाद दौड़ता हुआ एक वधिक (कसाई) आ जाता है; वह हमें आकर पूछता है कि—इधरसे जाती हुई गायको क्या आपने देखा है? इस पर यदि हम सत्य कहें कि—हां, इस दिशाकी ओर जा रही है; तब इससे गोवध हो

जाता है। अब आप ही कहिये कि—यहां क्या असत्य है और क्या सत्य है? इसीलिए ही तो कहा है—

'सत्यं भूतहितं प्रोक्तं न यथार्थाभिभाषणम्' (भाग.)

'सत्यस्य वचनं श्रेयः सत्यादपि हितं वदेत्।
यद् भूतहितमत्यन्तमेतत् सत्यं मतं मम' (महाभारत-शान्तिपर्व १०६।१५)

तब देवताओंका भी किसीके लाभार्थ कहा हुआ असत्य भी सत्य ही है।

कहीं मायावीकी मायाके भङ्गके लिए असत्यका अवलम्बन तथा मायाका अवलम्बन भी करना पड़ता है; परन्तु ऐसा करनेसे देवताओंकी 'पद्मपत्रमिवाम्भसा' इस न्यायसे निर्लिप्तता ही मानी गई है। देखिये इस पर वेदमन्त्र—'त्वं मायाभिरनवद्य !...मायिनं वृत्रमर्दयः' (ऋ० सं० १०।१४७।२) यहां मायावीके साथ माया करनेसे इन्द्रको अनवद्य (दोषरहित) कहा है। यही 'यद्ध त्यं मायिनं मृगं तव त्यन्माययाऽवधीरर्चन् ननु स्वराज्यम्' (सामवेद ऐन्द्रपर्व ४।७।४) इस मन्त्रमें कहा है। इस कारण इन्द्रका स्वराज्य प्राप्तिके लिए मूलभूत मायामय व्यवहारको इस मन्त्रमें कहा गया है। 'इमं नु मायिनं हुवे इन्द्रम्' (ऋ० सं० ५।७६ (६५)।१) इस मन्त्रमें भी इन्द्रको पुराणकी तरह मायावी कहा गया है। फलतः पुराणोंका वैसा कथन निर्मूल न होकर वेदानुगृहीत सिद्ध हुआ; तब पुराणों पर दोष कैसा?

आगे आप लिखते हैं— "इन्द्रादिका तपस्वियोंके प्रति ईर्ष्यालु होना भी विचित्र बात है" विचित्र बात नहीं है, कहीं तो दूसरेको अतिशायी बनानेके लिए अर्थवाद भी हुआ करता है, वहां उसके सत्य, वा तपस्या, वा दानादिके महत्व दिखलानेमें तात्पर्य होता है। कहीं देवताओं वा उनके अनुचरोंकी वैसी प्रकृति दिखलाना भी इष्ट होता है।

'गन्धर्वा गुह्यका यक्षा विबुधानुचराश्च ये।
तथैवाप्सरस सर्वा राजसीषूत्तमा गतिः॥'
(मनु० १२।४७)

यहां विशेष देवोंका रजोगुण वृत्ति वाला होना कहा है। 'य ज्वान ऋषयो देवाः .... द्वितीया सात्त्विकी गतिः' (१२।४६) यहाँ देवताओंका सत्वगुणकी मध्यमकोटि अर्थात् राजस कोटिमें होना कहा है। एक गुण में दूसरे गुण भी हुआ करते हैं। जैसे कि गीतामें कहा है—

'रजस्तमश्चाभिभूय सत्वं भवति भारत !
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्वं रजस्तथा॥'

(१४।१०)। मत्स्य पुराणमें भी कहा है-

दिव्येयमादिसृष्टिस्तु रजोगुणसमुद्भवा।
अतीन्द्रियेन्द्रिया तद्वदतीन्द्रियशरीरिका'
(४२)

यहां देवताओंकी रजोगुणसे उत्पत्ति कही है। अब रजोगुणके शास्त्रानुसार परिणाम भी सुनिये। 'रागद्वेषौ रजः स्मृतम्' (मनु० १२।२६) यहां पर रजोगुणका परिणाम राग और द्वेष भी कहा है।

लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा।
रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ !'
(१४।१२)

'रजसस्तु फलं दुःखं' (१४।१६) 'रजसो लोभ एव च' (१४।१७) 'काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः (३।३७) 'इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्या' (कामस्या) धिष्ठानमुच्यते' (३।४०) 'कामरूपेण ...दुष्पूरेणानलेन' (३।३६)।

इत्यादि वचनोंसे तथा 'तद् रजः ...... सततं हारि देहिनाम्' (मनु० १२।२८) यहां कुल्लूक भट्टने 'शरीरिणां विषयस्पृहोत्पादकं च' रजोगुणको विषयस्पृहामें प्रवृत्त करने वाला भी कहा है। 'विषयोपसेवा चाजस्रं राजसं गुणलक्षणम्' (मनु० १२।३२)' यहाँ विषयोंका सेवन रजोगुण का लक्षण कहा है। तब देवताओंमें रजोगुणके कारण काम तथा राग-द्वेषकी अस्वाभाविकता सिद्ध न हुई। 'कामः प्रथमं जज्ञे नैनं देवा आपुः (प्रापुः)' (अथर्व० ६।२।१६) इत्यादि वेद वचनोंसे सत्वगुण वाले देवोंमें भी रजोगुणके कारण कभी काम, कभी लोभ, कभी अनवस्थान (अस्थिरता) भी हो सकता है। तब क्वाचित्क वैसी देवप्रकृति दिखलानेके लिए वैसा उपाख्यान भी यदि पुराणोंमें दिखलाया जाता है, उसमें निर्मूलता न होकर वेदादिमूलकता ही है। इस लिए ब्राह्मणभागमें इन्द्रको अहल्याका जार बतलाया गया है। जैसेकि 'अहल्याया मैत्रैय्या जार आस [इन्द्रः] (षड्विंश १।१) अहल्यायै जार !' [शत. ३।३।४।१८] 'अहल्यायै जार ! कौशिक ! ब्राह्मण गौतम ब्रवाण !'

(तैत्तिरीयारण्यक १।१२ (३-४)। 'वृषणस्य मेनका नाम दुहिता, तामिन्द्रश्चकमे' यह वहाँ श्रीसायणने शाखान्तरका ब्राह्मण उद्धृत किया है। इस प्रकार पुराण इतिहासमें भी मन्त्र-ब्राह्मणके अनुरोधसे कहीं उपाख्यानों द्वारा देव-प्रकृतिकी व्याख्या की जाती है। तब पुराण इतिहासमें उपालम्भ कैसा ?

फिर आगे आप लिखते हैं—'इन्द्र सौ दिव्य वर्षों तक इस पद पर रहता है, फिर इन्द्र किसीसे ईर्ष्या क्यों करेंगे ? जब सौ वर्ष तक उनका स्थान अटल है, तब फिर वह किसी को तपोभ्रष्ट क्यों करना चाहेंगे ? कर्म सिद्धान्तानुसार इन्द्र की आयु बीचमें कट नहीं सकती।" यह आपका कथन ठीक नहीं है। क्या आयुर्वेद आदि शास्त्रमें अकालमृत्यु नहीं मानी गई ? देखिये 'चरकसंहिता' (शारीरस्थान ६।२८)। सुना जाता है कि- कलियुग अपनी सम्पूर्ण आयु नहीं भोगेगा। "अत्युग्रपुण्यपापानामिहैव फलमश्नुते' इत्यादि कथन प्रसिद्ध हैं। तभी ब्रह्महत्यावश जब उसके डरसे इन्द्र छिप गए, उस पदको थोड़े समयके लिए नहुष ने प्राप्त कर लिया। एतदादिक प्रतिबन्धकतावश मध्यमें आयु-छेदकी आशंका नियत आयु वालोंको भी हुआ ही करती है। कभी वर-शापादिके कारण भी ऐसा सम्भव हो सकता है। कभी दूसरेकी भारी तपस्यासे भी ऐसा सम्भव हो सकता है। न भी हो, तथापि उसकी आशंका तो हो भी सकती है। तब उपालम्भ कैसा ? कलियुगकी आयु ४,३२,००० वर्ष आप भी मानते ही होंगे, क्योंकि उसके दिव्य वर्ष १२००० सर्वसम्मत हैं। उसके ५०५४ लौकिक वर्ष ही केवल बीते हैं, फिर भी आप 'ब्राह्मण, सावधान' अपनी पुस्तकके ही २६ पृष्ठमें लिखते हैं— "कलियुगका अब अन्त और सतयुग लग गया-लगता है"। जब शास्त्र-श्रद्धालु भी आप कलियुगकी आयुमें ऐसा संशय करते हैं, और देवताओंसे अपने आपको अच्छा मानते हैं, जैसे कि आपके शब्द हैं- 'उनसे तो हम साधारणमनुष्य ही अच्छे हैं' वैसे इन्द्रको अपनी आयुके छेदमें भी शंका हो, तो इस में क्या अनुपपन्नता है ?

वस्तुतः देवता रजोगुणसे संपृक्त सत्वगुणसे मिले हुए होते हैं। रजोगुण 'चलं च रजः' (सांख्यकारिका १३) चंचल होता है। तब उनमें रजोगुणके भी होनेसे उनके चित्तकी चंचलता भी स्वाभाविक होती है। जैसे कि- निरुक्तमें- 'अगस्त्य इन्द्राय हविर्निरुप्य मरुद्भ्यः सम्प्रदित्सांचकार, स इन्द्र एत्य परिदेवयांचक्रे' (१।५।१३) इसीसे इन्द्रके चित्त की चंचलता व्यक्त हो रही है। क्या इन्द्रको ज्ञात नहीं था कि- यदि अगस्त्यने मुझे हवि न देकर मरुतोंको दी है, तो कभी मुझे भी देंगे, या अन्य कहींसे प्राप्त हो जावेगी, मैं चंचलचित्त क्यों होता हूं ? परन्तु वेदने 'न नूनमस्ति नो श्वः' (ऋ० सं० १।१७०।१) यह इन्द्र द्वारा अगस्त्य को कहलवाकर उसके चित्तकी अस्थिरता बताई है। इस प्रकार अन्य मन्त्रोंसे भी इन्द्रकी प्रकृतिको दुहा जा सकता है। इसी कारण दैत्योंके साथ इन्द्रके बड़े-बड़े युद्ध बताये गए हैं। इस प्रकार वेदने इन्द्रकी यह स्वाभाविकता दिखलाई है-पुराणोंने उसीका अनुवाद दिया है। तब पुराणोंको वेद-विरुद्ध कहना कैसे ? इसके अतिरिक्त इन्द्र द्वारा किसीकी तपस्याका भङ्ग उस पुरुषकी अतिशयित स्तुतिका सूचक होता है।

पुराणोंका मूल जहाँ मन्त्रभागात्मक वेद है, वहां पर ब्राह्मण भागात्मक वेद भी उनका मूल है। ब्राह्मणभागमें भी इन्द्र के चित्तकी चञ्चलता दिखलाई गई है। इन्द्रने त्वष्टासे अभिमन्त्रित सोमका इसलिए पान कर लिया कि इसका मुझे मारने वाला पुत्र न हो (शतपथ. १।६।३।६-७-८) तो क्या वह श्रीसम्पूर्णानन्दजीके कहे अनुसार नहीं जानता था कि- दिव्य १०० वर्ष तक कोई मेरी आयु नहीं हर सकता और न राज्य हर सकता है। तब उसे भय किसका ? यहाँ जो उत्तर उनका होगा- वही उत्तर पुराणोंमें हमारा होगा।

आगे आप लिखते हैं—"परन्तु हमारे पुराणाचार्य हमको सिखाते हैं कि—देवगण न केवल दुराचारी, और झूठे हैं, परन्तु परले सिरेके मूर्ख भी हैं" यह आप ही कहते हैं, पुराण ऐसा नहीं कहते। पुराण देवताओंके विषयमें जो कहते हैं, इसमें 'मत्स्य पुराण' का वचन सुनिए—

दिव्येयमादिसृष्टिस्तु रजोगुणसमुद्भवा।
अतीन्द्रियेन्द्रिया तद्वद् अतीन्द्रियशरीरिका' (४।३)
दिव्यतेजोमयीभूय दिव्या ज्ञानसमुद्भवा।
न मर्त्यैरभितः शक्या वक्तुं वै चर्मचक्षुभिः' ॥ (४।४)

मुण्डन आदि संस्कार क्यों करने चाहिएं ?

[श्री पं० रामशरणदासजी ज्योतिषाचार्य, पंचांग-दिवाकर कर्त्ता]

मनुष्य को ज्ञान होना चाहिए कि हम संसारमें मनुष्य शरीर धारण करके क्यों आए हैं ? और हमको क्या करना चाहिए ?

किसी भी प्रकारसे धन एकत्रित करके अपने बाल-बच्चों का पालन पोषण करना और उसके लिए जीवन व्यतीत कर देना, प्रायः बहुतसे मनुष्योंने यही जीवन का लक्ष्य समझ रखा है। परन्तु ऐसा जीवन तो पशु पक्षी भी व्यतीत कर रहे हैं।

ज्ञात हो, कि मनुष्य जीवन एक दुर्लभ जीवन है और इस जीवनका लक्ष्य मोक्षको प्राप्त करना है। मोक्षको प्राप्त करनेके लिए अपने आपको तथा मनको पवित्र करना चाहिए और अपने आपको पवित्र करनेके लिए गर्भाधान आदि संस्कारोंका करना अति आवश्यक है—क्योंकि लिखा है --

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम्।
कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च ॥

अर्थात्—द्विजातियोंके गर्भाधानादि शरीरिक संस्कार वैदिक पवित्र मन्त्रोंसे करने चाहिएं, क्योंकि ऐसे संस्कार लोक-परलोकमें पवित्र करने वाले होते हैं।

शरीर पवित्र होनेसे मन पवित्र होता है और मनके पवित्र होनेसे मोक्षकी प्राप्तिका साधन होता है जैसे किसी महापुरुष ने कहा है—

मन शुद्ध दाता मोक्ष का--विपरीत मन बन्धन करे।
जो धीर करे शुद्ध मन--भव सिन्धु से निश्चित तरे॥
मन शुद्ध करनेके लिए निज धर्म करना चाहिए।
जिसके लिए है जो विहित, सो कर्म करना चाहिए॥

इसलिए मनकी पवित्रता ही मोक्षकी प्राप्तिका साधन है और मनको शुद्ध करनेके लिए मुण्डन आदि संस्कारों का होना अति आवश्यक है। फिर और भी लिखा है—

गार्भैर्होमैर्जातकर्म चौडमौञ्जीनिबन्धनैः।
बैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामपमृज्यते॥

गर्भाधान, जातकर्म, मुण्डन और यज्ञोपवीत इनके करनेसे द्विजातियोंके बीज और गर्भजनित दोष दूर होते हैं।

इन दोषोंके दूर होनेके उपरान्त और यज्ञोपवीत धारण करनेके उपरान्त ही मनुष्य यज्ञ आदि कर्म कर सकता है। मनुष्य अपने आपको पवित्र करके और यज्ञोपवीत आदि धारण करके ही यज्ञ आदि कर्म करनेका अधिकारी होता है और यज्ञ आदि करके यह जीव मोक्षको प्राप्त होता है क्योंकि लिखा है-

स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतः।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः॥

अर्थात्- वेद पढ़ना, व्रत, हवन, त्रैविद्य नामक व्रत, तर्पण और यज्ञोंके करनेसे यह शरीर मोक्षके योग्यहोता है।

इसलिए यह सिद्ध हुआ कि यज्ञ आदि करनेसे यह जीव मोक्षकी प्राप्तिके योग्य होता है और यज्ञ आदि करनेके लिए मनकी पवित्रता और यज्ञोपवीत आदिका धारण करना द्विजोंको आवश्यक है और मनकी पवित्रता और यज्ञोपवीत आदि धारण करनेके लिए मुण्डन आदि संस्कारोंका होना अति आवश्यक है। इसलिए यह सिद्ध हुआ कि मोक्षकी प्राप्तिके लिए अर्थात् मनुष्य जीवनके लक्ष्यकी प्राप्तिके लिए यह मुण्डन आदि संस्कार प्रथम द्वार हैं। जबसे हमारी जातियोंने इन संस्कारोंको करना छोड़ दिया है तबसे ही आप देख रहे हैं कि मनुष्योंके विचारोंमें कितनी अपवित्रता आ रही है।

यथा भुजङ्गाः सर्पाणामाकाशं विश्वपक्षिणाम्।
विदन्ति मार्गं दिव्यानां दिव्या एव न मानवाः'॥ (५)
कार्याकार्ये न देवानां शुभाशुभफल प्रदे।
यस्मात् तस्मान्न राजेन्द्र ! तद्विचारो नृणां शुभः' (६-१०)

पहले महाभारतका वचन दिखलाया ही जा चुका है कि— 'मनुष्यधर्मो दैवेन धर्मेण हि न दुष्यति' (आश्रमवासिक पर्व ३०।२३) अर्थात् मानुषी मर्यादा और देवोंकी मर्यादा कभी एक नहीं होती। तब श्रीसम्पूर्णानन्द जी ही देवताओंको गाली निकाल रहे हैं- पुराण नहीं। उनकी शेष आपत्तियोंका समाधान अग्रिम अङ्कमें होगा।

भाग्यफल

[श्री पं० नेमिचन्द्रजी शास्त्री ज्योतिषाचार्य]

ज्येष्ठ मासमें जन्म लेने वालोंका फलादेश

इस मासमें उत्पन्न हुए व्यक्ति स्थिर, धीर, और सावधान होते हैं। शान्ति और आरामका जीवन इन्हें पसन्द होता है। ये व्यवहार-कुशल होते हैं। शुक्ल-पक्षके व्यक्ति अधिक व्यावहारिक होते हैं। इस मासके जन्मे हुए व्यक्तियों को प्रेम, सौन्दर्य और शिष्टताका व्यवहार अधिक पसन्द रहता है। ग्रामों (देहात) में जन्मे व्यक्ति भी सौन्दर्योपासक होते हैं, नागरिक (शहरी) व्यक्ति तो विशेषरूपसे भावुक और सौन्दर्य प्रिय होते ही हैं। ये व्यक्ति जल्दी क्रुद्ध नहीं होते, परन्तु जिस समय इनका क्रोध उभड़ पड़ता है उस समय उग्ररूप धारण कर लेता है। प्रायः इस मासवाले व्यक्ति पुरानी व्यवस्थाके हामी होते हैं, नवीन सुधार इन्हें पसन्द नहीं होता है। कदाचित् सुधारकोंसे इनकी मुठभेड़ हो जाया करती है। गायन विद्यामें ये व्यक्ति अच्छी दक्षता प्राप्त कर सकते हैं, यदि ज्येष्ठ मासके जन्मे व्यक्तिके विचारोंमें परिवर्तन हो गया तो फिर पक्के सुधारक और समाजवादके पोषक बन जाते हैं। अधिकतर कम्युनिस्ट भी इसी मासके जन्मे व्यक्ति होते हैं। परिस्थितिके परिवर्तनसे इस मासवाले अधिक लाभ उठाते हैं। कृषिकर्म करनेमें दक्ष और अपने परिवारके व्यक्तियोंके सुखस्वार्थके लिये सब कुछ त्यागने वाले होते हैं। स्वार्थकी भावना इनमें अधिक रहती है, जब तक अपने स्वार्थकी पूर्ति नहीं होती है तब तक अपनी मित्रताका निर्वाह करते है... कुशल वक्ता, कुशल लेखक और योग्य चिकित्सक इस मासमें जन्मे व्यक्ति होते हैं। यदि अनुकूल परिस्थितियां इन्हें मिलती हैं तो पुलिस विभाग और अध्यापकी-कार्यको भी संपन्न करते हैं। जासूसीका कार्य कुशलता-पूर्वक कर सकते हैं। ज्येष्ठमासके जन्मे व्यक्तियोंमें स्वाभाविक क्षमता ऐसी होती है कि वे किसी गूढ़ रहस्यका पता सरलतासे लगा लेते हैं। इनका स्वभाव (मिजाज) इतना तुनुक होता है कि थोड़ी सी उपेक्षा भी इन्हें असह्य होती है। आवेगशील होनेके कारण ये लोग किसी बातका तुरन्त निर्णय कर लेते हैं, जिससे इन्हें कभी-कभी बड़ी भारी हानि भी उठानी पड़ती है।

इस मासके जन्मे व्यक्ति परिश्रम—साध्य कामको कभी पसन्द नहीं करते और अर्थोपार्जनके कार्यको शीघ्र कर लेते हैं। इन लोगोंमें व्यवसायिक—मौलिकता अधिक होती है अतएव नूतन आविष्कारोंके द्वारा धनोपार्जन करते हैं। इस मासकी १०मी, ११सी और १३सी तिथिमें जन्मे व्यक्ति अच्छे व्यापारी होते हैं। ये लोग स्टाक एक्सचेंजका काम बड़ी योग्यतासे करते हैं। नौकरीसे इन्हें अच्छा लाभ नहीं होता है। पंचमी और नवमीको पैदा हुए व्यक्ति आपत्तिसे जल्द घबड़ाने वाले होते हैं, इनका स्वभाव जनाना होता है तथा बोलचाल भी स्त्रियों जैसी होती है। प्रतिपदाको रविवार या मंगलवारको तथा आर्द्रा नक्षत्रके चतुर्थ चरणमें जन्म हुआ हो तो ऐसे व्यक्ति विशेष कामुक होते हैं और संसारमें कोई बड़ा कार्य नहीं कर सकते। इन्हें पारिवारिक सम्पत्ति मिलती है, परन्तु ये लोभप्रवृत्तिके कारण उसका भली प्रकार सदुपयोग नहीं कर पाते। बुधवारी कठको जन्मे व्यक्ति बड़े उद्योगी और परिश्रम शील होते हैं। विघ्न-बाधाएं इन्हें रोक नहीं सकती हैं। अनुशासनका कार्य ये बहुत अच्छी तरहसे कर सकते हैं।

चारित्रिक तारतम्यता इस मासके व्यक्तियोंमें अधिक देखी जाती है, एक महान चरित्रका धारी होता है तो दूसरा पक्का दुराचारी। द्वितीया, तृतीया, और पंचमी इन तिथियों में उत्पन्न हुए व्यक्ति आचरणके अच्छे होते हैं, इनका स्वभाव भी मिलनसार होता है, हां मायाचार इनमें अवश्य

रहता है। ये किसी बातको सहन नहीं कर सकते हैं। सदा अपनी ही बात पर डटे रहते हैं। जब ये रोगी होते हैं तो थोड़े रोगसे ही इतना घबड़ा जाते हैं कि अन्य व्यक्ति भी इनके साथ कष्ट उठाता है। शुक्ल पक्षकी दशमी, एकादशी और पूर्णिमाको उत्पन्न व्यक्ति अच्छे भाग्यशाली होते हैं। इनका स्वभाव मिलनसार होता है और ये संसार की किसी भी शक्तिसे नहीं डरते हैं। सदा अच्छे सद्‌गुणी व्यक्तियोंकी संगति करते हैं। अधिक मानसिक श्रम करनेके कारण इन लोगोंको स्नायु संबंधी रोग हो जाते हैं। स्नायु तथा मस्तिष्क-सम्बन्धी परिश्रम करनेके कारण इनको नस-दाह के साथ-साथ, हाथों, आंखों और चेहरे पर गुठलियां पड़ जाती हैं। अन्तमें रक्तचाप तथा पक्षाघात हो जानेका भी भय रहता है। इस मास वाले व्यक्ति अधिकतर पूर्ण आयु के होते हैं। अकालमरण बहुत कमका होता है। कृष्णपक्ष की सप्तमी, अष्टमी और दशमीको उत्पन्न होने वाले राज-सम्मान प्राप्त करते हैं तथा अष्टमीको २२-३० इष्टकाल पर भरणी नक्षत्रमें जन्म लेने वाले निश्चयसे राजकर्मचारी होते हैं। इसीदिन कृत्तिका नक्षत्रमें जन्म लेने वाले जेल जाते हैं। इन व्यक्तियोंके ऊपर हत्याका अपराध (जुर्म) लगाया जाता है जिससे इन्हें कष्ट-सहित कारावास (जेल) यात्रा करनी पड़ती है। कृष्णपक्षकी एकादशीसे लकर शुक्लपक्षकी चतुर्थी तक उत्पन्न होनेवाले व्यक्ति देश-भक्त होते हैं तथा देशको उन्नतिशील बनानेमें सहायता करते हैं। इन व्यक्तियोंके शत्रु अधिक होते हैं, परन्तु सदा ये शत्रुओंको परास्त करते रहते हैं। इनका अधिकांश समय आमोदप्रमोदमें व्यतीत होता है। कृष्णपक्षकी चतुर्थीको जन्म लेनेवाले प्रायः व्यसनी होते हैं, भाग्यसे शायद एकाध व्यक्ति सच्चरित्र निकलता है। हां इस तिथिके कुछ व्यक्ति सफल कहानी-लेखक और वक्ता होते हैं। साहित्य सेवाकी लगन इनके मनमें लगी रहती है। शुक्लपक्षकी पंचमीको जन्म लेनेवाले व्यक्ति कलाकार और गायक होते हैं। इन्हें कलाओंसे अधिक प्रेम होता है और आजीवन कलाकी आराधना करते रहते हैं।

आर्थिक स्थिति

इस मासमें उत्पन्न हुए व्यक्ति अधिकांश कमाऊ होते हैं। वे जिस कार्यमें लग जाते हैं, उसीसे धनोपार्जन कर लेते हैं। नौकरीकी अपेक्षा व्यापारमें इस मास वाले अधिक लाभ उठा सकते हैं। २२,२६,२८,३१,३७ और ४७ वें वर्षमें भाग्योदय होता है। आर्थिक स्थिति साधारणतः अच्छी होती है। कृष्णपक्षकी प्रतिपदा, द्वितीया, पंचमी और षष्ठी इन तिथियोंके पूर्वार्द्धमें जन्म लेने वाले मध्यवित्तवान् और उत्तरार्धमें जन्म लेने वाले पूंजीपति या निर्धन होते हैं। कृष्णपक्षकी पंचमीके उत्तरार्धमें उत्पन्न हुए व्यक्ति साधु या सन्यासी भी होते हैं, यदि इस दिन मंगलवार हो तो वह व्यक्ति पहले दर्जेका आवारा होता है। जीवनके प्रारम्भमें साधारणतः इस मास वाले व्यक्तियोंका कुछ आर्थिक कष्ट होता है, परन्तु मध्य जीवन और अन्तिम जीवनमें उन्हें अर्थकी चिन्ता नहीं रहती। शुक्लपक्षकी एकादशीसे लेकर पूर्णिमा तक जन्म लेने वाले व्यक्ति प्रायः धनी होते हैं तथा मिल आदिके द्वारा अपने व्यवसायकी उन्नति करते हैं। कृष्णपक्षकी पंचमीसे लेकर अमावस्या तक जन्म लेने वाले व्यक्ति प्रायः मध्यम धनी होते हैं। इनका जीवन उत्तरोत्तर उन्नति करता चला जाता है तथा इनका भाग्योदय १८ वर्षकी आयुसे लेकर ४६ वर्षकी आयु तक होता है।

राशिफल

मेष राशि वाले इस मासमें जन्मे व्यक्ति अल्प धनी, वृष राशि वाले अधिक धनी, मिथुन राशि वाले मध्यम धनी, कर्क राशि वाले अधिक धनी, सिंह राशि वाले मिल मालिक, कन्या राशि वाले अल्पधनी या निर्धन, तुला राशि वाले अल्प धनी, वृश्चिक राशि वाले निर्धन, धनु राशि वाले मध्यम धनी, मकर राशि वाले साधारण धनी, कुम्भ राशि वाले अधिक धनी, और मीन राशि वाले मध्यम धनी होते हैं। प्रायः इस मासमें जन्मे व्यक्तियोंके जीवनका अन्तिम भाग सुखकर होता है। कृष्णपक्षकी त्रयोदशीको १३-२० इष्टकाल पर जन्मे व्यक्तिको भूमिके नीचेसे धन मिलता है। इसे लौटरी, जुआ आदिसे भी धनकी प्राप्ति होती है। इस मास के बुध, शुक्र और गुरु इन वारोंमें जन्म लेने वाले व्यक्ति अपने बुद्धिबलसे धनोपार्जन करने वाले और रविवार मंगलवार एवं शनिवार को उत्पन्न हुए व्यक्ति शारीरिक बल से धनोपार्जन करने वाले होते हैं। सोमवार को जन्मे व्यक्ति शारीरिक और बौद्धिक इन दोनों शक्तियोंसे धनोपार्जन करते हैं।

विवाह और मित्रता

इस मासमें उत्पन्न हुए व्यक्तियोंकी मित्रता कम रहती है, ये अपने स्वार्थमें पक्के रहते हैं इसलिये इनके मित्र कम रहते हैं। हां, इतनी विशेषता इस मास वाले व्यक्तियोंमें अवश्य रहती है कि जिसके साथ एकबार मित्रता हो जाती है फिर उसका आजीवन निर्वाह करते हैं। विवाह इनका छोटी आयुमें ही हो जाता है। सोमवार को पंचमी तिथिमें उत्पन्न हुए व्यक्तियोंका विवाह प्रायः नहीं होता, यदि कदाचित् विवाह हो भी जाय तो विवाहके कुछ ही दिन बाद स्त्री मर जाती है। कृष्णपक्षकी दशमीसे लेकर शुक्लपक्षकी पंचमी तक जन्मे व्यक्तियोंके एकसे अधिक यानी दो-तीन विवाह होते हैं। कृष्णपक्षकी त्रयोदशीको जन्मे व्यक्ति प्रायः एक उपपत्नी भी रखते हैं। साधारणतः इस मासमें जन्मे व्यक्तियों का विवाह १८ वर्षसे लेकर २६ वर्षकी आयुके बीचमें हो जाता है। शुक्लपक्षमें जन्म लेने वाले व्यक्तियोंमेंसे अधिकांश व्यक्तियोंके दो विवाह होते हैं।

सन्तान–सुख

इस मासमें जन्मे व्यक्तियोंके सन्तान ११ तक होती हैं, परन्तु जिनका जन्म सन्ध्याकालका होता है उनके जप-तप के बाद ही सन्तान उत्पन्न होतीं है। कृष्णपक्षकी १, ३, ५, ६, ७, ८, ६ इन तिथियोंमें पैदा हुए व्यक्तियोंको अधिक सन्तान उत्पन्न होती है। शुक्लपक्षकी १, २, ४, ५, ७, ८, ११, १२, १३ इन तिथियोंमें उत्पन्न हुए व्यक्तियोंकी लड़के अधिक और लड़कियाँ कम एवं कृष्णपक्ष २, ४, १०, ११, १२, १३ तथा शुक्लपक्षकी ३, ६, १४ इन तिथियोंमें उत्पन्न हुए व्यक्तियोंको लड़कियां अधिक उत्पन्न होती हैं। साधारणतः इस मासमें जन्म लेने वाले व्यक्तियोंको सन्तानसुख अच्छा रहता है।

स्वास्थ्य

इस मासमें उत्पन्न व्यक्तियोंका स्वास्थ्य प्रायः अच्छा रहता है। कृष्णपक्षकी १, ४, ६, ८, १० इन तिथियों में उत्पन्न हुए व्यक्तियोंको क्षयरोग, शुक्लपक्षकी ११, २, ७, १३, १५ इन तिथियोंमें उत्पन्न हुए व्यक्तियोंको फायलेरिया या मुटापाका रोग एवं शेष तिथियोंमें उत्पन्न हुए व्यक्तियोंका स्वास्थ्य प्रायः अच्छा नहीं होता।

ज्येष्ठ मासमें उत्पन्न हुई नारियोंका फलादेश

इस मासमें जन्मी नारियां साधारण आर्थिक स्थितिकी होती हैं। दुर्भाग्य इनका साथ सदा देता है। धनी घरानेमें विवाह होने पर भी ये निर्धन ही रहती हैं। सोम और प्रदर रोग इन्हें सदा रहते हैं, वैशाख मासमें उत्पन्न हुए पुरुषोंके साथ विवाह होनेसे ये सुखी रहती हैं। खासका सुख इस मासकी नारियोंको कम होता है। इनका प्रारम्भिक जीवन ऐश और आरामका होता है परन्तु अन्तिम जीवन दुःख-मय हो जाता है। सन्तान इस मासमें उत्पन्न हुई नारियोंको अधिक होती है। १५, १६, १८, २१ और २२वें वर्ष इनके जीवनके महत्वपूर्ण होते हैं। इस मासमें जन्म लेनेवालियोंमें एक विशेषता यह होती है कि ये अपने लिए अशुभ किन्तु अन्य कुटुम्बियोंके लिए शुभ होती हैं। कृष्णपक्षकी दशमीसे लेकर शुक्लपक्षकी ३ तक उत्पन्न हुईं समाज सेवा और देश सेवामें भी भाग लेती हैं। इनमें सच्चा मातृस्नेह पाया जाता है। प्रायः इस मासकी नारियां शिक्षित, अर्द्धशिक्षित एवं साक्षरा होती हैं। परिवारके व्यक्तियोंके साथ इनका कम मेल रहता है। लड़ाकू प्रवृत्ति शुक्लपक्षमें जन्मी नारियोंकी विशेष होती है, परन्तु जीवनमें अच्छे कार्य भी इन्हींके द्वारा होते हैं।

इस मासमें जन्म लेनेवाली देवियोंको सन्तान साधारण होती है, पश्चिमी ज्योतिषियोंके मतानुसार इस महीनेमें रविवारको उत्पन्न होने वालियोंको ५ सन्तानें, सोमवारको जन्म लेने वालियोंको ३, भौमवारको जन्मी नारियोंको ८, बुधवारको जन्म लेने वालियोंको १०, गुरुवारको जन्मी देवियोंको ६, शुक्रवारको जन्मी देवियोंको ७ और शनिवार को जन्मी देवियोंको ४ सन्तानें होती हैं। इस मासवालियों की सन्तानें मृत्युके मुखमें भी बहुत जाती हैं। इनके जीवन में कई अवसर उन्नतिके आते हैं। विवाहके बाद पति-गृह में ससुरालके लोगोंके साथ कलह होनेसे इनका जीवन नारकीय हो जाता है। सैकड़े में दस इस मासवाली नारियां २० वर्षकी आयुसे शिक्षण देनेका कार्य आरम्भ करती हैं। इनकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र होती है। माता-पिताकी सेवा इनके द्वारा अधिक होती है। पितासे इन्हें अधिक सुख मिलता है, पति द्वारा परित्याग भी इनका होता है।

अनन्त श्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज का

सदुपदेश

[प्रेषकः— भक्त श्रीरामशरणदासजी]

हम सभीका कल्याण चाहते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे देशके ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य सभी यज्ञोपवीत धारण करने वाले हों, सभी अपने सर पर चोटी रखने वाले हों, नित्यप्रति संध्यावन्दन करने वाले हों, भजन पूजन करने वाले हों और सूर्यको अर्घ्य देने वाले हों, वेदशास्त्र पढ़ने वाले हों। शूद्र भी हमारे हैं, वह भी सुखी रहें, सबकी सेवा करने वाले हों और स्वधर्मका पालन करने वाले हों। हम चाहते हैं कि हमारी मातायें बहिनें पतिव्रता हों, वह पातिव्रतधर्मका पालन करने वाली हों, आजकी भांति पर्देको दूर कर बेशर्म होकर बाजरोंमें सिनेमा देखती, चाट खाती, क्रीम पाऊडर मल मैम बनी न घूमें। आजकल बहुतसे स्त्री पुरुष एक साथ एक जगह खाते हैं, यह बड़ा पाप है, स्त्रीका झूठा पति खावे तो स्त्री कोबड़ा पाप लगता है। हमारी ही मातायें थीं कि जिनकी पवित्र कोख से भगवान् श्रीरामकृष्ण प्रकट हुये, महाराणा प्रताप शिवाजी महाराजने जन्म लिया, जिनकी गोदमें देवता खेले, आज वही मातायें पर पुरुषोंके साथ मारी मारी घूमती हैं, यह ठीक नहीं है, यह पतनका मार्ग है। हम चाहते हैं कि हमारे देशमें बालक ब्रह्मचारी सदाचारी बनें और उनके सर पर लम्बी लम्बी चोटी हों, संस्कृत पढ़ें और अपने देशका गौरव बढ़ायें, आज की तरह चोटी कटा कर ईसाई न बनें।

आज भारतमें चारों ओर विघ्न हो रहे हैं। बड़ा आश्चर्य है कि जिस देशमें विघ्न-विनाशक गणेश जैसे देवता हों उस देश में विघ्न कैसा ? आज कहा जा रहा है कि देश भूखा मरा, भला जिस देशमें श्रीअन्नपूर्णा जैसी माता हो उस देशमें अन्नकी क्या कमी ? वह देश विदेशोंसे अन्न क्यों मंगायें ? जिस देशमें मोक्षदाता भगवान् विष्णु हों फिर उस देशमें कमी क्या ? कारण यही है कि आज हमने अपने देवी देवताओंको मानना पुकारना छोड़ दिया है और विदेशोंकी ओर ताकना प्रारम्भ कर दिया है, इसीसे देश में अनेकों विघ्न आ रहे हैं और चारों ओर भुखमरी फैल रही है, जब तक हम फिरसे देवी देवताओंका सहारा नहीं लेंगे हमारा कल्याण नहीं होगा।

हम साधु सन्यासियोंका यही कर्तव्य है कि जो बात आपके हितकी शास्त्र बतलता हो वही बात हम कहें, आप मानें या न मानें यह बात आपके हाथ है। हम तो आपके कल्याणकी बात शास्त्र जो बताता है वही बताते हैं और कहते हैं कि तुम किसीकी बात मत सुनो अपने सनातनधर्म और शास्त्रोंके अनुसार चलो और वर्णाश्रमधर्मका पालन करो, स्वधर्मका पालन करो, इसीमें तुम्हारा कल्याण है।

हम सरकारका बुरा नहीं चाहते, हम भारत सरकारको सलाह देते हैं कि वह हमारे धर्ममें हस्तक्षेप न करे और व्यर्थ ही हिन्दू-कोडबिल, तलाक-बिल बनाकर धार्मिक जनताको क्षुब्ध न करे, इसीमें उसकी भलाई है। सरकार धर्मसे घृणा न करे, धर्मका प्रचार करे, धर्मसे ही देशमें सुख शांति आ सकती है, धर्मको मेटकर सुख शांतिका क्या काम ?

हम एक बार एक जगह गये तो हमने देखा कि वहां पर कितने ही नवयुवक बैठे हैं पर उनमें चोटी किसीके भी सर पर नहीं हैं। हमने कहा कि क्या यह सब ईसाई हैं, मुसलमान हैं जो इनके सर पर चोटी नहीं है ? ज्ञात

आर्थिक दृष्टिसे ये स्वतन्त्र होती हैं। योगक्षेमके योग्य ये स्वयं अर्जन करती हैं। इनके लिए १, ७, ६, १०, ११, १४, १६, २४, २६, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३६, ४२, ४५, ५७ और ६२ वें वर्ष घातक होते हैं। १८, २६, ३६, ३८, ४८, ५०, ५५, ६५ वें वर्ष सुख कारक होते हैं। इन वर्षोंमें इनका विकास होता है, तथा ३६ और ३८ वें वर्षमें किसी पदकी प्राप्ति भी इन्हें हो सकती हैं। इनका प्रभाव समाजमें उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है।

हुआ कि ईसाई मुसलमान नहीं हैं यह सबके सब ही हिन्दू हैं, पर फिर भी सबने चोटी कटा दी है। यह हमारा कितना घोर पतन है? जिस चोटीकी रक्षाके लिये श्रीगुरुगोविन्द-सिंहजीके दो लड़के दीवारोंमें चुने गये, जिस चोटीकी रक्षाके लिये वीर हकीकत बलिदान हो गये, हजारोंने जिस चोटीकी रक्षाके लिये प्राण दे दिये, उसी चोटीसे हमारी इतनी घृणा कि हम अपने हाथोंसे काटकर फेंक रहे हैं यह कितनी लज्जाकी बात है ?

कहां हैं यह आजकलके उद्दण्ड उच्छृङ्खल कालेजके लड़के कि जो परस्त्रियोंको छेड़कर कालेजकी लड़कियोंके पीछे साइकिल दौड़ा कर भारतकी शानको धब्बा लगाते हैं; बट्टा लगाते हैं ? और कहां वे हमारे वीर अर्जुन जिन्होंने भारतकी शान बढ़ाई थी और भारतकी शानको बट्टा नहीं लगने दिया था ? एक बार अर्जुन इन्द्र-लोकमें गये तो वहां पर उर्वशीका नृत्य हुआ, जिसे अर्जुनने देखा। अर्जुन जब बराबर उर्वशीकी ओर देखते रहे तो इन्द्रने समझा कि अर्जुन उर्वशी पर मोहित हो गये हैं, इसलिए इन्द्रने रात्रीमें अर्जुनके पास उर्वशीको भेजा। उर्वशी सुन्दर सुन्दर वस्त्राभूषण पहिनकर और खूब शृंगार करके अर्जुनके पास गई। अर्जुनने उसे देखा और उर्वशीको माता कह करके सम्बोधन किया। उर्वशीने बहुत कुछ हावभाव किये पर अर्जुनने भारतकी शानमें बट्टा नहीं लगने दिया। अन्तमें उर्वशीने अर्जुनको कुछ दिनके लिये हीजड़ा होनेका शाप देदिया जिसे अर्जुनने सहर्ष स्वीकार किया और कहा कि धर्म बचाकर और भारतकी शानमें बट्टा न लगाकर हीजड़ा बनना भी अच्छा है। आजकल तो जो कोई इंगलैंड जाता है अपने साथ मेम ले आता है और इसीमें अपनी शान समझता है।

आज भारतको स्वतंत्र हुआ बताया जा रहा है और स्वतन्त्र हुए ६-७ वर्ष होनेको आये पर अभी तक भी स्वतन्त्र भारतमें गोवध जैसा कलंक बराबर जारी है और पहिले से अधिक गोवध हो रहा है, यह कैसा घोर पाप है, जो दूर होना चाहिये। भारत स्वतन्त्र होनेसे पहिले हम सोचा करते थे कि जब भारत स्वतन्त्र होगा तो सबसे पहिले गो-वध बन्द हो जाएगा पर बात उलटी हुई। भारत स्वतन्त्र होने पर गोवध बन्द होना तो दूर, उल्टे अधिक होने लगा, और खूब बन्दर मोर नीलगाय सभीका वध हो रहा है और सबको मांस मच्छी अंडे खानेका प्रचार किया जा रहा है। गोमांस विदेशोंको भेज भेजकर डालर कमाये जा रहे हैं, यह कैसी स्वतन्त्रता है ? गोवध जैसा कलंक दूर होना चाहिये तभी स्वतन्त्रता मानी जाएगी; नहीं तो ऐसी स्वतन्त्रतासे क्या लाभ ?

आज कहा जाता है कि मन्दिरोंमें चमार भंगी चले जांय तो क्या हानि है ? तो हम उनसे पूछते हैं कि मन्दिर में जानेसे लाभ होता है यह आपने कैसे जाना ? मन्दिरमें भगवान् हैं यह आपने कैसे जाना ? मूर्ति देखनेमें तो पत्थर की दिखलाई पड़ती है, इसमें देवता है यह दिखलाई नहीं पड़ता और बाजारकी मूर्तिमें और मन्दिरकी मूर्तिमें क्या अन्तर है ? जब यह भी कुछ प्रतीत नहीं होता तो कहना पड़ेगा कि शास्त्रके आधार पर ही मन्दिरकी मूर्तिमें भगवान् हैं और उसके दर्शनसे पुण्य होता है यह मानना पड़ता है, तो उसी शास्त्रके आधार पर यह भी मानना पड़ेगा कि मूर्तिके दर्शनसे किसको लाभ होता है और किसको हानि होती है और किसको अधिकार है और किसको अधिकार नहीं है ? किसके मन्दिरमें जानेसे किसके स्पर्श करनेसे देवत्व चला जाता है और किसके स्पर्शसे नहीं ? शास्त्रकी एक बात मानना और एक न मानना यह कैसे हो सकता है ? जो शास्त्र मूर्तिमें भगवान् बतलाता है वही शास्त्र कहता है कि मंदिरमें चमार भङ्गीके, रजस्वला स्त्रीके आनेसे देवता चला जाता है, इसलिए चमार भङ्गियोंको मंदिरमें जानेसे कोई लाभ नहीं है, उल्टे पाप होता है, उन्हें मन्दिरके शिखरका दर्शन करनेसे वही पुण्य प्राप्त होता है जो ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्यको मंदिरमें बैठकर भजन पूजन करनेसे होता है। इसलिए उन्हें मन्दिरमें नहीं जाना चाहिए, मन्दिरके शिखरका दर्शन करना चाहिए, इसीमें उनका कल्याण है। यदि हठसे चमार भंगी मंदिरमें चला जाता है तो वह अपना तो परलोक बिगाड़ता ही है साथ ही उस देशके राजाको हानि होती है, दुर्भिक्ष पड़ता है और चारों ओर भय और सङ्कट छा जाता है, जो आज प्रत्यक्ष देखनेमें आ रहा है।

निरपराध जीवोंको सतानेका दुष्परिणाम

एक निर्मल संत भूतपूर्व राजकुमार की जुबानी अपनी सत्य कहानी

[लेखक—भक्त श्रीरामशरणदासजी पिलखुआ]

अभी पिछले दिनों पिलखुवा में एक निर्मले संत पधारे। संतने पिलखुवाकी सीमामें घुसते ही एक सज्जनसे हमारा पता पूछा तो वह सज्जन अपना काम छोड़कर उनके पीछे हो लिए और हमारे मकान पर लाये। मैं ऊपर से उतरा और नीचे आकर जो देखा तो एक परम तेजस्वी नवयुवक सुन्दर शरीर शान्त स्वभावके संत चले आ रहे हैं। बरबस देखते ही मेरा सर श्रद्धा से उनके श्री चरणों में झुक गया और मैं उनके श्रीचरणों को छूने दौड़ा तो उन्होंने झटसे पैर पीछे हटाये और कहा "ना ना ना पीछे हटो, मुझे न छुवो, तुम्हें पाप लगेगा। मैं पापी हूं, हत्यारा हूं।" मैंने कहा महाराज आप यह क्या कहने लगे ? आप तो सन्त हैं, अपनेको क्यों व्यर्थ ही पापी हत्यारा हैं ? आपकी बोली गोस्वामी तुलसीदास जी संत सूरदासजी भी कहा करते थे।

मो सम कौन कुटिल खल कामी।
जिन तन दियो ताहि बिसरायो ऐसो नमकहरामी॥

संतजीने सुना और बोले "ना-ना मैं सन्त नहीं हूं। सूर तुलसी की भांति नहीं कह रहा हूँ, वरन् अक्षर अक्षर सत्य कह रहा हूं, मैं घोर पापी हूं हत्यारा हूँ।

मैंने कहा—"महाराज। आइये अन्दर बैठिये।" तो आपने कहा "नहीं नहीं अन्दर बैठने का अधिकारी नहीं हूं मैं हत्यारा हूँ, मेरे साथ हत्यायें लगी हैं वह आपके मकानमें मेरे साथ प्रवेश करेंगी और आपको सतायेंगी। मैं एक भक्तके विशेष आग्रहसे १० दिन उसके मकान पर ठहर गया था तो उसे स्वप्नमें श्री हनुमान जीने कहा कि इसे मत ठहरा। वह नहीं माना, ठीक दसवें दिन उसका लड़का मर गया। मुझे ठहराकर तुम आफत मोल मत लो। नहीं तो हनुमान जी तुम पर क्रोध कर बैठेंगे। तुम जल्दी जाओ दो रोटी ले आओ, मैं भूखा हूँ खाकर चलता हूं। संतजी मेरे सामनेके बाबूजीके चौंतरे पर बैठ गए। जहां वह गौरवर्णके थे, स्वर्ण जैसा सुन्दर शरीर था, आप अंग्रेजीके एम० ए० संस्कृतके भी पूर्ण विद्वान् और फारसीके भी ज्ञाता थे और कोई राजकुमारसे प्रतीत हो रहे थे। मैं ऊपर गया झट से रोटी लाया। महाराज जीने कहा इस रोटीके टुकड़े टुकड़े करके मेरी चादर पर रख दो। मैंने रोटीके टुकड़े-टुकड़े करके चादर पर रख दिये। मैंने देखा कि महात्मा जीने एक चादर ओढ़ी हुई है और अपने दोनों हाथ चादर के अन्दर छिपाये हुए हैं और रोटी खानेके समयमें भी उन्होंने चादरसे हाथ नहीं निकाले, चादर उठाकर ही रोटीके टुकड़े खाते रहे, यह देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैं इस अद्भुत रहस्यको नहीं समझ सका। पानी पीने का समय आया तो भी हाथ बाहर नहीं निकाले। मिट्टी के पात्र में जल लेकर यूं ही पी लिया। हमारे पात्रोंको छुआ तक नहीं। मैं बड़ा घबड़ाया कि मुझसे ऐसा कौन सा पाप हुआ कि जो घर पर पधारे सन्त जीके न तो घर में चरण पड़े; न ठीकसे भोजन ही किया और न अपने चरण ही छूने दिए। भोजन कर चुकने पर संत जी उठे और कहा अच्छा हमारे साथ चलो तालाब पर, चलेंगे वहीं बात करके कुछ देर विश्राम करके आगे बढ़ जायेंगे। पिलखुवा शहर के आधी मील दूर मोटर स्टैण्ड के पास तालाब पर पहुँचे मैं और सन्त जी एक वृक्षके नीचे जाकर बैठ गए। मैं जब आपके पास बैठने लगा तो आपने कहा—नहीं नहीं पीछे हटो हमसे छूवो नहीं मैं पापी हूं, हत्यारा हूं, तुम पर हत्या चढ़ जायेगी।

मैं एक दम पीछे हट गया पर मैं इस रहस्य को न समझ सका। मैंने कर-बद्ध प्रार्थना की कि महाराज जी क्या बात है आप हत्यारे कैसे हैं और हाथ क्यों छिपाये हुए हैं ?

संत जी—क्या आप छुवाछूतके महत्वको नहीं समझते क्या छुवाछूतको नहीं मानते ? जिन ऋषियोंने छूवा छूत मानना लिखा है उन्हें क रा चालीससेरा मूर्ख समझते हो ?

मैंने कहा—नहीं महाराज जी मैं तो छुवाछूतको प्राणपणसे मानता हूं कट्टर सनातनी विचारोंका हूँ और शास्त्रोंमें पूर्ण श्रद्धा रखता हूँ।

संत जी—मैं भी एक दिन अपनी भरी जवानीमें आज कलके नवयुवकोंकी तरह ऋषियोंकी बातोंकी खिल्ली उड़ाया करता था और चमार भंगी मुसलमान आदि सबके हाथका खा पी जाता था। पर आज मैं छुवाछूतको कट्टरतासे मानता हूं और सबको मानने को कहता हूँ और जो नहीं मानता उसका परलोक बिगड़ा मानता हूं। जिस प्रकार मेरे ऊपर हत्यायें चढ़ी हुई हैं इसी प्रकार दिन रात अण्डे, सूअर, मांस, मछली खाने वाले चमार भंगी और गौ, बकरा खाने वाले मुसलमान लोगों पर भी हत्यायें चढ़ी होती हैं। जो इनसे छूता है, इनके हाथ का खाता पीता है उस पर हत्यायें चढ़ जाती हैं और उसके लोक—परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं।

मैं—आप पर हत्यायें कैसे चढ़ी हैं ?

संत जी—लो मेरे हाथों को देखो। संत जी ने जो अपने चादर में से हाथ निकाले और मुझे दिखाये तो मैं डर गया। दोनों हाथों की दसों ऊंगलियां गल चुकी थीं। इनमें से कोढ़ चू चू कर गिर रहा था। आपने जो मूत्रेन्द्रिय पर से कपड़ा उठाकर दिखाया तो वह भी गलकर गिर चुकी थी।

मैं—"महाराज जी यह कैसे हुआ क्या कारण है ?"

सन्त जीने दोनों हाथ उठाकर कहा—रामशरणदास जी, यह दोनों वह सुन्दर हाथ हैं कि जिनमें कभी हीरे जवाहिरोंकी सुवर्णकी अंगूठियां पहनी जाया करती थीं। और कलाईमें तीन चार सौ रुपएकी घड़ी सोनेका चैन शोभा पाता था और हाथोंमें तलवार बन्दूकें रहा करती थीं जिनसे शत्रु भय माना करते थे और बड़े २ राजे कभी इन हाथोंसे हाथ मिलाया करते थे पर आज वही हाथ आपके सामने हैं जो देखने पर भी डर लगता है। पूरे गल चुके हैं। कोढ़ चू रहा है। दुर्गन्ध मार रही है। बाहर निकालनेमें भी शर्म मालूम पड़ती है।

मैं—महाराज जी ऐसा कैसे हुआ और आप कहां के रहने वाले हैं। क्या नाम है मैंने पूंछा ?

सन्त जी—मैं जाति का क्षत्रिय हूं, सैंकड़ों गांवों का मालिक राजकुमार हूं, अंग्रेजी का एम० ए० किया है संस्कृत का भी विद्वान् हूं पर नाम और गांव नहीं बताना चाहता, कारण कि घर वालोंको पूरा-पूरा विश्वास है कि मैं मर चुका हूं। मेरे निमित्त श्राद्ध तर्पण पिण्डदान गया सब हो चुका है। अब यदि किसी प्रकार भी उन्हें पता चल गया तो मेरा जो परलोक बनने जा रहा है वह बिगड़ जायगा और मेरे करे धरे पर पानी फिर जायगा।

मैंने पूछा महाराज जी आपके कोढ़ कैसे हुआ, सब बातें बताइये, बड़ी कृपा होगी।

संत जी-लो सुनो मैं तुम्हें सब बातें बताता हूं और मैंने निरपराध जीवों को मारने सताने का फल कुष्ठी होकर कैसे पाया सब सुनाता हूं और हनुमान् और पूज्य ब्राह्मणों का अपमान भूल कर भी कभी मत करना यह चेतावनी देता हूं और उद्धार चाहते हो तो सनातन धर्म और शास्त्रों की शरण में रहना यह अनुभवसे कहता हूं और छुवाछूत को अवश्य ही मानना यह भी याद रखने को कहता हूं।

मैं राजस्थानका रहने वाला हूं और जातिका सूर्यवंशी क्षत्री हूं। मैं राजकुमार था घर पर बीसियों हाथी घोड़े झूमा करते थे। बड़े २ किले जैसे महल कोठियां थीं। सैंकड़ों नौकर चाकर थे, बन्दूकोंका तलवारों का पहरा लगा रहा करता था। मैं कालेज में पढ़ा, एम० ए० किया। संस्कृत भी पढ़ा और फारसी भी। घरके कितने ही मन्दिर थे, ब्राह्मण पूजा पाठ करने आते जाते थे। सनातनी घराना था और घर वाले कट्टर सनातनधर्मी थे। खूब पूजा पाठ कथा कीर्तन की धूम मची रहती थी। हर मंगलवारको बंदरोंको लड्डुओं से जिमाया जाता था, चींटियोंको चीनी और मछलियोंको श्रीरामनामके आटेकी गोलीसे और गायोंको आटेकी लोई खिला कर तृप्त किया जाता था और ब्राह्मणभोजन तो बड़े

ठाटसे हुआ करता था और सत्यनारायण की कथा ऐसी होती थी कि जिसमें मनों प्रसाद चरणामृत बनता था जिसे सारा गांव श्रद्धासे लेने आता था। मेरे भी ऐसे कट्टर विचार थे कि किसी भी नौकरको मैं बिना माथे पर तिलक लगाये सामने नहीं आने देता था। हमारे गुरु जी निर्मले संत थे, कट्टर सनातन धर्मी और शास्त्रोंके ज्ञाता थे। एक हमारा बहुत बड़ा बाग था जिसमें हजारों सुन्दर सुन्दर फलों वाले वृक्ष थे जो फलों से लदे रहा करते थे। मैंने तीर्थयात्रा भी की और श्री जगन्नाथ जी भी गया और उस समय जब उड़ीसामें गांधी जीकी आज्ञानुसार बंदर मारे गये तो मैंने बंदर मारने का पत्रों में विरोध भी किया था और पाप बताया था।

'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः'

कुसंग एक क्षणका भी बुरा होता है इस बातको मैं अब समझा हूँ। एक दिन संध्याको एक व्यक्ति मेरे मकान पर आकर ठहरे। पूछनेसे मालूम हुआ कि वह आर्य-समाजी उपदेशक हैं किसी पासके गांवमें जल्सेमें जारहे हैं रात्रि होनेके कारण ठहरना चाहते हैं। मैंने ठहरा लिया पूछने से पता चला कि वह जाति के लुहार हैं उनसे जो बातें हुई तो उन्होंने मुझे बड़ी लच्छेदार बातें सुनाईं और मूर्तिपूजा करना मूर्खता है, श्राद्ध तर्पण करना पाखंड है, गंगा यमुना स्नान व्यर्थ है, ब्राह्मण पोप हैं, तीर्थों में क्या रक्खा है ऐसे सुन्दर ढंग से समझाया कि मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई और मुझे अपने आराध्य भगवान् श्रीराधाकृष्ण, शंकर सब पत्थर दिखलाई पड़ने लगे और ब्राह्मणोंसे भी पूरी२ घृणा होगई और पोप दिखलाई पड़ने लगे और घर वाले कोरे मूर्ख दिखलाई पड़ने लगे। मैंने उसे अगले दिन भी ठहराया और चौकेसे कपड़े उतार कर भोजन करने वाला मैं आज उस लुहारके साथ बैठकर मेज कुर्सी पर खाने लगा। मैंने चंदन लगाना, माला जपना सब बंद कर दिया और घरवालोंसे भी इन बातों पर झगड़ा रहने लगा। कुछ दिनों बाद मैं नित्यकी तरह अपने बागमें टहलने गया तो मुझे नित्यकी तरह बागमें बंदर इधर-उधर घूमते दिखलाई पड़े बंदर तो नित्य दिखलाई पड़ते थे पर अब तो दृष्टि ही बदल चुकी थी जो बंदर कभी मेरी दृष्टि में पूज्य थे, हर मंगल वारके दिन जिन्हें हनुमान् मानकर लड्डुओं से जिमवाया जाता था, जिनके मारनेका समर्थन करने पर मैंने गांधीजी को बुरा भला लिखा था वही बंदर अब घोर शत्रु दिखलाई पड़ने लगे और ऐसा पाप छाया कि सारा बाग बंदर उजाड़ डालेंगे ऐसी भावना पैदा हो गई। मैंने उन्हें पकड़वानेका निश्चय किया और मुसलमान ठेकेदार पकड़नेको बुला लिये। घरवालों ने मेरे बन्दर पकड़नेका विरोध किया और पाप बताया और कहा कि—बंदर देवता है इसे सताना बड़ा पाप है इससे हनुमान् जी कुपित हो जाते हैं। हमारे गुरु निर्मले संतजीको पता चला तो उन्होंने भी बंदर पकड़वानेको मना किया पर होनी खेल रही थी मैंने एककी नहीं सुनी और सबको पकड़वा-पकड़वा कर रियासत से बाहर भेज दिया। रात्रीको सोनेके समय मुझे हनुमान् जीका दर्शन हुआ जो बड़े भयानक रूप में थे और गदा लिए मेरी ओर आ रहे थे। मैं पहिले तो कुछ डरा। पर बादमें स्वप्न है यह समझ कर कोई चिन्ता नहीं की। लगभग १५-२० दिन बादमें बागमें जो देखा तो आठ बंदर और दिखलाई पड़े मालूम हुआ कि वह डर कर भाग गये थे पकड़े नहीं गये। मैंने बन्दूक उठाई और आठों बंदरोंको अपने इन हाथों से मार डाला और उन्हें मार कर खड्डेमें डलवा दिया। अब तो सारे गांवमें शोर मच गया कि कुंवर साहब ने बड़ा पाप किया बंदर मार डाले कोई घोर अनर्थ होने वाला है ऐसा पाप तो आज तक कभी नहीं हुआ। हमारे गुरु निर्मले संत जी ने जब सुना तो वह भी आये और उन्होंने मुझे फटकार लगाते हुए कहा कि तुमने ऐसा घोर पाप किया है कि तुम्हारा वंश नष्ट हो जायगा, सारा बाग उजड़ जायगा और तुम बरबाद हो जाओगे अब से हम तुम्हारे घरका भोजन करना भी पाप समझते हैं। मैंने उनकी बातोंको मूर्खोंकी बात समझा। रात्रीको सोया तो बड़ा भयानक स्वप्न देखा और स्वप्न में देखा कि हनुमान् बड़ा भयानक रूप बनाये खड़े हैं और कह रहे हैं पापी बंदरोंको मारने वाला, सताने वाला दस सरका रावण भी जब धूलीमें मिल गया और सारे राक्षस मारे गये तो तू क्या मेरे क्रोध से बच सकता है ? मेरी प्रसन्नताका एकमात्र साधन बंदरोंकी सेवा है और मेरे कुपित होने का साधन बंदरोंका अपमान है जा जिन हाथों से तूने बंदरोंको मारा है उन्हीं हाथोंमें तेरे कोढ़ चूयेगा और तू जन्म भर मारा-मारा दर-दरकी

खाक छानता डोलेगा और तेरा सारा बाग उजड़ जायगा और जिसके स्थान पर भी तू ठहरेगा मेरा क्रोध उसे भी धूलिमें मिला देगा।

मेरी आंखें खुलीं तो मैं थर-थर कांप रहा था और डर रहा था और अब मुझे पूरा-पूरा निश्चय हो गया कि हनुमान्‌जीका अपराध मुझे कुष्ठी बना करके रहेगा। कुछ दिन बाद ही बंदरोंको मारना रंग लाया और मेरे हाथोंमें फुन्सियां होनी प्रारम्भ हुई जिन्हें फुन्सी समझ कर इलाज कराया गया, पर लाभ कुछ नहीं हुआ। धीरे-धीरे हाथोंकी ऊंगलियां गलने लगीं और कोढ़ होगया है यह निश्चय हो गया। मैंने निर्मले संतजीको बुलाया और पैरोंमें पड़कर रोने लगा, तो उन्होंने मुझे बताया कि यदि तुम परलोक बिगाड़ना नहीं चाहते तो प्रायश्चित्त करो, सारे तीर्थोंकी यात्रा करो और जो बन्दर पकड़ कर भेजें हैं फिरसे बुलाओ। मैंने ठेकेदार को बुलाकर जहाँ बंदर छोड़े गये थे वहाँ से मंगवा कर अपने बाग में छुड़वाये और मैंने एक पर्चा अपनी मेज पर रख कर और उसमें यह लिख कर कि मैं श्री गंगाजीमें डूब कर मरता हूँ तुम मुझे तलाश न करना वहाँ से रात्रीमें भागनेका निश्चय किया और आज मैं सारे भारतकी तीर्थ यात्रा करता अपने किये पापोंके फलको भोगता मारा-मारा फिर रहा हूं और जहां कहीं भी जाता हूं बंदरों की हत्या मेरे साथ रहती है जो मुझे ठहराता है उसे भी हत्या चढ़ जाती है और उसका भी बुरा हो जाता है, मुझसे छूनेसे भी दूसरोंको पाप लगता है इसलिए मुझसे दूर रहने में ही भलाई है।

मैंने कहा कि महाराज आज तो यह भारत सरकार सारे देश में लाखों बन्दर मरवा रही है, लाखों पकड़ पकड़ कर अमेरिका भेजे जा रहे हैं?

संत जीने आँखोंसे अश्रुधारा बहाते हुए कहा—सारा देश रसातलको जायगा, बचेगा नहीं इनकी बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी है बंदरोंको सताकर देश सुखी रह सकता है? मैं बंदरों को मारने वाला पापी राजकुमार आज भिखारी के रूप में तुम्हारे सामने बैठा हूं इसी प्रकार यह देश गड़क हो कर रहेगा।

मैं—महाराज मूत्रेन्द्रिय क्यों गली है?

संत जी ने बताया भाई मेरे ब्राह्मण नौकरकी सुन्दर ब्राह्मण कन्यासे मेरा अनुचित सम्बन्ध हो गया उसी का फल वह सड़ कर गल कर गिर पड़ी है। ब्राह्मण कन्या साक्षात् दुर्गा होती है इसीलिये नवदुर्गाओं में ब्राह्मण कन्याओं को बुलाकर उन्हें साक्षात् देवी समझकर उनकी पूजाकी जाती है। जो पूज्या ब्राह्मण कन्याओंको भूल कर भी बुरी दृष्टिसे देखता है वह दुर्गाका कोप—भाजन बनता है।

आजकल तो कितने ही ऐसे हैं कि जो ब्राह्मण कन्याओं से विवाह तक कर रहे हैं—मैंने कहा।

संत जी—क्या वह दुर्गाके कोपसे बच सकेंगे, नहीं नहीं त्रिकाल में नहीं। उन्हें घोर नरक की यंत्रणायें भोगनी पड़ेंगी। मैं इसका प्रत्यक्ष प्रमाण आपके सामने हूँ। परलोक परलोक दोनों ही ब्राह्मण और बन्दरोंके द्रोही का बिगड़ जाता है। भूलकर भी धर्मद्रोहीका एक मिनटका भी संग मत करना नहीं तो मेरी भांति बुद्धि भ्रष्ट होते देर नहीं लगेगी और अपने सत्य सनातन धर्मको मत छोड़ना। गौ-ब्राह्मणोंमें पूर्ण श्रद्धा रखना। और हो सके तो बंदरोंको लड्डुओंका भोग लगाते रहना, इससे हनुमान् जी और रघुनाथजी दोनों प्रसन्न होते हैं। अच्छा अब मैं अपने किये पापोंका फल भोगनेके लिये आगे जाता हूं आपको कष्ट दिया क्षमा मांगता हूँ। अच्छा लो— जय सीताराम जी

मैं—जय सीताराम जी महाराज, जय सीताराम जी।

—

भूलिए नहीं

आपको 'श्रीस्वाध्याय का' एक नया ग्राहक अवश्य बनाना है

'श्रीस्वाध्याय' का कोई अङ्क वी० पी० से नहीं भेजा जायगा मूल्य मनीआर्डरसे भेजिये।

दयावीर जीमूतवाहन पञ्चाशिका

[प्रणेता— म० म० पं० छज्जूरामजी शास्त्री विद्यासागर]

हिमपर्वतके उच्च शिखर पर एक नगर था कांचनपुर ।
उसका अधिपति सर्वश्रेष्ठ जीमूतकेतु था विद्याधर ॥
उसकी पत्नी कनकवतीसे एक पुत्र हुआ कुलमें रत्न ।
जिसका नाम विश्वमें विश्रुत विद्याधर जीमूतवाहन ॥
उसका यशोगान कर करके स्वर्गाङ्गणमें निर्जरगण ।
महानन्दमें मग्न होय करते थे बारंबार स्मरण ॥
अवसर आने पर सिंहासन पर बिठाय हुआ पिता प्रसन्न ।
कल्पवृक्ष दे किया पुत्र को उसने सर्वश्रीसम्पन्न ॥
मृगीनेत्रके संनिभ चञ्चल विद्याधर लक्ष्मीको जान ।
कल्पवृक्षका किया दयासे इसने याचक जनको दान ॥
दयावीरता उसकी सुनकर राज्य लिया रिपुओं ने छीन ।
सपरिवार जीमूत गया तप करने वनमें क्रोध—विहीन ॥
एक दिवस उपवनमें मधुकर नामक मित्रवर्यके साथ ।
माता और पिताकी आज्ञा लेकर वह गया करुणानाथ ॥
वहां जाय इक देखा उसने गौरी का अद्भुत आलय ।
जहां एक अति सुन्दर कन्या वन्दन कर रहि थी ले लय ॥
बोली चेटी भर्तृदारिके नहीं लाभ वीणा वादनसे ।
निर्दय है यह गौरी माता क्या है लाभ इसके वन्दन से ॥
मलयवती बोली सखि, ऐसा उचित नहीं है कहना तुझको ।
आज स्वप्न में आ गौरी ने मनोनीत वर दिया है मुझको ॥
बोली चेटी भर्तृदारिके यदि ऐसा है तुझको वर ।
स्वप्न नहीं तव सम्मुख में यह वही खड़ा है सुन्दर वर ॥
राजपुत्र बोला हे कन्ये ! यह तव सखी कौन कुलमें है ।
इसके दर्शन से मेरा मन अविरत उथल पुथल में है ॥
चेटी बोली राजपुत्र, तेरे भी इस अद्भुत दर्शन से ।
होता न चित्त किसका प्रसन्न रहती है कौन अविकृत मनसे ॥
कन्या जनकी सुलभत्रपा उक्ति प्रत्युक्ति नहीं करती ।
कहने पर भी कभी नहीं वाणीसे भाव प्रकट करती ॥
यह सिद्धराज विश्वावसुकी कुल मुक्तालता सुता है ।
मलयवती इसका सुनाम है हिमनगसुता तपोनिरता है ।
चेटी ने मधुकरसे पूछा कौन पुण्यशालीत्रे वर्या ।
तव वयस्यके नामधेयमें सुननेको उत्सुक हैं कर्या ॥

मधुकर बोला हे सखि, यह है राजपुत्र जीमूतवाहन ।
दयावीर विद्याधर कुलमणि सकल भुवन जन मोहन ॥
सुन कुमारका नाम सिद्धपति पुत्री होगई अतीव मुग्ध ।
रतिपति ने निज वाणोंसे भी उसको कर डाला था विद्ध ॥
इतने में ही इक प्रतिहारी माताकी आज्ञासे आकर ।
मलयवतीको साथ ले गई मन्दिरसे माताके गृह पर ॥
जाते जाते मलयवतीने परावृत्त होकरके प्रियको ।
केशपाश मधुकर वर्जन मिष, देखा स्थिर कर अपने हियको ॥
मलयवतीके विरहतापसे तप्त हुआ वह जीमूतवाहन ।
परावृत्त होकर देखनेका करता हुआ मुहुः संस्मरण ॥
विरहवती सिद्धेश्वर पुत्री आकर फिर गौरी मन्दिरमें ।
एक वृक्षकी वृहत् लतामें मरने लगी पाश ले गलमें ॥
गौरी बोली प्रकट होय हे मलयवती, यह साहस तज ।
मनोनीत वर खड़ा हुआ है, राजपुत्र इसको तू भज ॥
सुन पुत्रीका प्रेम योग्य वर विद्याधर जीमूतवाहनमें ।
तत्क्षण विश्वावसुने दोनोंको लेने सुत भेजा वनमें ॥
फिर उन दोनोंका विवाह किया उसने शास्त्र सम्मत रीतिसे ।
वे दोनों निज गृह पर जाकर रहने लगे महती प्रीतिसे ॥
एक दिवस वह मित्रावसुयुत गया महा सागरके तट पर ।
मित्रावसुसे कहा सौम्य, जरा देख मलय सानूके ऊपर ॥
मित्रावसु बोला कुमार, यह मलयसानु तुमने जाना ।
वैनतेयभक्षित नागोंका अस्थिकूट नहीं पहचाना ॥
एक एक प्रतिदिन आता है नाग गरुड़ हित यहां पर ।
उनका यह मृत अस्थि संघ है तावक दृष्टि जहां पर ॥
इतने में पित्राज्ञा पाकर मित्रावसु गया गृह पर ।
वृद्धा स्त्री एक रोती थी जहां जीमूत आय बोला वहां पर ॥
हे वृद्धे, मैं शङ्खचूड़ की रक्षा करने ही आया ।
पर उपकार सार है जग में सन्तों ने है बतलाया ॥
सुनकर उसका वचन नाग वह शङ्खचूड़ यों बोला ।
उचित नहीं है सौम्य, तृणार्थ देना रत्नोंका झोला ॥
हे दयावीर जीमूत, कोटिशः मुझसे जीव यहां पर ।
प्रति दिन ही आते जाते हैं पर तुझसा रत्न कहां पर ।

प्राचीन भारतमें विमान-कला

[ले०—श्री पं० चिमनलाल जी शर्मा ज्योतिषी गणितमार्तण्ड]

वर्तमान कालसे कुछ पूर्व वैज्ञानिक कला प्रायः नष्ट हो गई थी। उपरान्त पाश्चात्य विद्वानोंकी बुद्धिविकाससे विमान फिर इस संसार में दृष्टिगोचर हुए। कहा जाता है कि विमान नाम की कोई वस्तु प्रथम थी ही नहीं, अपितु पक्षियोंको आकाशमें विचरते देखकर भारतीयोंकी यह निरी कपोल कल्पना थी कि विमान नामकी कोई वस्तु पहिले इस देशमें थी, जो आकाशमें उड़ती थी एवं जिसका नाम वाल्मीकि रामायण, भागवत पुराण, महाभारत आदि ग्रन्थों में पाया जाता है, किन्तु आज भी हमारे समक्ष ऐसे ग्रन्थ विद्यमान हैं जिनसे यह मानना पड़ेगा कि हमारे पूर्वजों को जिस उच्चकोटिका विमान विषयक ज्ञान था उसे आज भी पाश्चात्य विज्ञानवेत्ता खोज निकालनेमें असमर्थ हैं।

महर्षि भारद्वाज कृत "यन्त्र सर्वस्व" ग्रन्थ बड़ौदा पुस्तकालयमें हस्तलिखित वर्तमान है जो कुछ खंडित है। उसका वैमानिक प्रकरण बोधानन्दको बनाई हुई वृत्ति के साथ छप चुका है। इसके प्रथम प्रकरणमें विज्ञान विषयके पच्चीस ग्रन्थोंकी एक सूची है जिसमें अगस्त्य कृत "शक्ति सूत्र"- ईश्वरकृत "सौदामिनी कला", भारद्वाजकृत "अशुभतन्त्र", "आकाश शास्त्र" तथा "यन्त्र सर्वस्व" शाकटायन कृत "वायुतत्व प्रकरण", नारद कृत "वैश्वानर तन्त्र" आदि हैं, बोधानन्द लिखते हैं—

निर्मथ्य तद् वेदाम्बुधिं भारद्वाजो महामुनिः।
नवनीतं समुद्धृत्य यंत्रसर्वस्व रूपकम्॥
प्रायच्छत् सर्वलोकानामीप्सितार्थ फलप्रदम्।

मुझ जैसे काशपलाश वृक्ष भवकानन में बहुतेरे।
पर तव समान नहिं पारिजात देखन में आया मेरे॥
मैं सर्वथैव अपने कुलका पहला कलङ्क होऊंगा।
यदि तव प्राणोंसे निज प्राणोंका रक्षक बन जाऊंगा॥
अब पतंग नाथ के आनेका हो गया समय अभ्यर्ण।
मैं अर्णवतट पर जा आता हूं वन्दन हित गोकर्ण॥
फिर अति प्रसन्न जीमूत हुआ अब अवसर है यह पूर्ण।
मैं बध्य शिला पर बैठ करूं स्वमनोरथको सम्पूर्ण॥
वध्यशिला पर आय गरुड़ ने ली है इसकी मणी उतार।
खाने लगा मांस फिर छोड़ दिया कुछ कर सुविचार॥
नायक बोला, वैनतेय, मम शिरामुखोंमें नूतन रक्त।
मांस बहुत है अब भी क्यों तुम खाने से हो गए विरक्त॥
वह चूड़ामणि आय गिरी थी इसकी मलयवती के अङ्क।
माता पिता लगे रोने उसे देख होय अति ही साशङ्क॥
चलकर घरसे सारे आये शङ्खचूड़ भी आया साथ।
बध्य शिला पर आकर देखा गरुड़ खड़ा है जोड़े हाथ॥

शङ्खचूड़ तब उसको भक्षित देख बहुत ही रोया।
हा जीमूत, अकारणबन्धो, देख हमें क्यों सोया॥
माता पिता धर्मपत्नी सब मरने को जब हो गए सज्ज।
सुनकर महारुदनको उनके गरुड़ हो गया बहुत सलज्ज॥
बोला नाग के भ्रम से मैंने महापुरुष यह खाया।
बध्यचिन्ह ही इसके भक्षण का कारण हो आया॥
महामोह निद्रा में सोते मुझे जगाया इसने।
सभी सर्पवध से छुटकारा आज पा लिया मैंने॥
इतने में ही प्रकट होय फिर गौरी माता बोली।
वत्स जीव जीमूत, जगत् में तेरी दया निराली॥
शिव शिव करते खड़ा होय किया इसने गौरीका दर्शन।
ऊपरसे जीमूतवाह पर होने लगा कुसुम वर्षण॥
जीमूत हुआ प्रत्युज्जीवित सब जगत् हुआ अत्यन्त सुहृष्ट।
मलयवती अरु मात पिता पा उसको हो गए अतिप्रहृष्ट॥
उसी समय सन्तप्त गरुड़ ने देवराज की आज्ञा लेकर।
अमृत वर्षा करी सर्प सब जीये अमृत पीकर॥

तस्मिन् चत्वारिंशतिकाधिकारे संप्रदर्शितम् ॥
नाना विमान वैचित्र्य रचना क्रम बोधकम् ।
अष्टाध्यायैर्विभजितं शताधिकरणैर्युतम् ॥
सूत्रैः पंचशतैर्युक्तं व्योमयान प्रधानकम् ।
वैमानिकाधिकरणमुक्तं भगवता स्वयम् ॥

भारद्वाज मुनिने वेद रूपी समुद्रका मंथन करके यन्त्र सर्वस्व नामका ऐसा ग्रन्थ निकाला जो मनुष्य मात्रके लिए इच्छित फलदाता है। उसमें उन्होंने चालीसवें अधिकरण में वैमानिक प्रकरण कहा है जिसमें विमान विषयक रचना के क्रम कहे गये हैं। वह आठ अध्यायोंमें विभक्त है जिसमें सौ अधिकार और पांच सौ सूत्र हैं। उसमें विमानका विषय ही मुख्य है। भारद्वाज मुनिने विमान शास्त्रके पूर्वाचार्यों तथा उनके बनाए हुए ग्रन्थोंके नाम भी कहे हैं।

"नारायणः शौनकश्च गर्गो वाचस्पतिस्तथा ।
चाक्रायणिधुण्डिनाथश्चेति शास्त्रकृतः स्वयम् ॥
विमानचन्द्रिका व्योमयान तंत्रं तथैव च ।
यंत्रकल्पो यानबिन्दुः खेटयानप्रदीपिका ॥
तथैव व्योमयानार्क प्रकाशश्चेति षट् क्रमात् ।
नारायणादि मुनिभिः प्रोक्तानि ज्ञानवित्तमैः" ॥

नारायण, शौनक, गर्ग, वाचस्पति, चाक्रायण, धुण्डिनाथ, ये छः ग्रन्थकार हैं, तथा विमानचन्द्रिका, व्योमयान तन्त्र, यन्त्रकल्प, यानबिन्दु, खेटयान प्रदीपिका, व्योमयानार्क प्रकाश, ये क्रमसे उनके ग्रन्थ हैं।

विमानकी परिभाषा बताते हुए कहा गया है—

पृथिव्यप्स्वन्तरिक्षेषु खगवद्वेगतः स्वयम् ।
यः समर्थो भवेद् गन्तुं स विमान इतिस्मृतः ॥"

जो भूमि जल आकाशमें पक्षियोंके समान वेगपूर्वक चले उसका नाम विमान है। संस्कृतमें 'वि' पक्षीको कहते हैं और 'मान' का अर्थ अनुरूप अथवा समान है। इसीलिए विमान का अर्थ पक्षि-सदृश होता है। विष्णुशर्माकृत 'पंचतन्त्र' में गरुड़की आकृतिके वाहनका वर्णन है। 'गयाचिन्तामणि' नामक ग्रन्थमें मयूरकी आकृतिके विमानका वर्णन है। बाल्मीकि रामायणमें पुष्पक विमानका वर्णन है। भागवत पुराणमें शाल्व राजाके विमानका भी वर्णन है, शाल्वका विमान भूमि आकाश जल और पर्वतों पर भी सुगमतासे चलता था। सबसे विशाल और भव्य विमान कर्दम ऋषि का था, भागवतमें इसका भी अपूर्व वर्णन देखने योग्य है।

विमानोंके बनाने वाले कारीगर इस देशमें बौद्धकाल तक विद्यमान थे। धर्मपादके बोधिराजकुमार वत्थु पृष्ठ ४१० में एक कारीगरका वर्णन इस प्रकार लिखा है कि बोधि राजकुमारने एक महल बनवाया, बनाने वाले कारीगरने उसे बड़ा ही विचित्र बनाया। बोधिराजने सोचा कि यह कारीगर कहीं दूसरेका महल भी ऐसा न बना दे, इसलिए उसकी मृत्यु करा देने योग्य है। राजाने यह बात अपने एक सलाहकारसे कह भी दी। सलाहकारने यह खबर कारीगर के पास पहुंचा दी। कारीगरने अपनी स्त्रीसे कहला भेजा कि वह घरद्वार मालमत्ता बेचकर एक दिन इस महलके देखनेकी प्रार्थना करे। स्त्रीने वही किया और राजासे आज्ञा लेकर वह महल देखने गई। कारीगर उसे महलके एक ऐसे भागमें ले गया और (पुत्रदार मरुस सकुन कुच्छियं निसीदयित्वा वातपातेन निक्सनित्वा पलायि) स्त्री तथा लड़कों समेत एक गरुड़ यन्त्र पर चढ़ कर भाग गया और नैपालके काठमांडूमें रहने लगा। इन सब उपलब्ध प्रमाणों से जाना जाता है कि इस देशमें विमान बनानेकी विचित्र कला ज्ञात थी। विमान पक्षी (गरुड़) की आकृतिके बनते थे। इसलिए विष्णुका वाहन गरुड़ कहा गया है।

इन विमानोंसे सम्बन्ध रखने वाली एक प्राचीन पुस्तक और भी है जिसका नाम 'अंशुबोधिनी' है। यह पुस्तक भी भारद्वाज ऋषिकी बनाई हुई है। इस पुस्तकमें अनेक विद्याओंके लिए एक एक अधिकरण रखा गया है। इन अधिकरणोंमें एक विमान अधिकरण भी है। इस अधिकरण में आये हुए भारद्वाज ऋषिके "शक्त्युद्गमोद्यष्टौ" सूत्र पर बौद्धायन ऋषिकी वृत्ति इस प्रकार है।

शक्त्युद्गमो भूतवाहो धूमयान शिखोद्गमः ।
अंशुवाहस्तारामुखो मणिवाहो मरुत्सखः ॥
इत्यष्टकाधिकरणे वर्गाण्युक्तानि शास्त्रतः ।"

इन श्लोकोंमें आकाश संचारी गतिके आठ विभाग इस प्रकार हैं- 'शक्त्युद्गम' बिजलीसे चलने वाला। 'भूतवाह' अग्नि, जल और वायुसे चलने वाला। 'धूमयान' वाष्पसे चलने वाला। 'शिखोद्गम'- पंचशिखीके तेलसे चलने वाला। 'अंशुवाह'- सूर्य किरणोंसे। तारामुख'- उल्कारस (चुम्बक) से, मणिवाह'- सूर्यकान्त चन्द्रकान्त

आदि मणियोंसे और 'मरुत्सखा'- केवल वायुसे चलने वाला। इस प्रकारके विमान बनाने और चलानेके अनेकों प्रमाण मिलते हैं। इन प्राचीन प्रमाणोंके सम्मुख होते यह नहीं कहा जा सकता कि भारतीय आर्य विमान बनाना नहीं जानते थे।

प्राचीन समयमें सूर्यकान्तमणिका तो आविष्कार था ही, किन्तु उससे भी सूक्ष्म चन्द्रकान्तमणिका भी आविष्कार कर लिया गया था, अब तक योरपकी बढ़ी हुई सायंस भी ऐसा वैज्ञानिक यन्त्र नहीं बना सकी। चन्द्रकान्तमणिके द्वारा चन्द्रमासे पानी बनाया जाता था और रोगियोंको पिलाया जाता था। इसका वर्णन सुश्रुतमें है-

"रक्षोघ्नं शीतलं हादि ज्वरदाह विषापहम्।
चन्द्रकान्तोद्भवं वारि पित्तघ्नं विमलं स्मृतम्॥

यह चन्द्रकान्तमणि अकबर बादशाहके समय तक थी इसका वर्णन "आईने अकबरी" में आया है।

विमानके रहस्योंका ज्ञाता ही उसे चलानेका अधिकारी है।

वैमानिक रहस्यानि यानि प्रोक्तानि शास्त्रतः।
द्वात्रिंशदिति तान्येव यानयन्तृत्व कर्मणि॥
एतेन यानयन्तृत्वे रहस्य ज्ञानमन्तरा।
सूत्रेऽधिकार संसिद्धिर्नेति सूत्रेण वर्णितम्॥
विमान रचने व्योमारोहणे चालने तथा।
स्तम्भने गमने चित्र गतिवेगादिनिर्णये॥
वैमानिक रहस्यार्थ ज्ञानसाधनमन्तरा।
यतोऽधिकार संसिद्धिर्नेति सम्यग्विनिर्णितम्॥

शास्त्रोंमें जो बत्तीस वैमानिक रहस्य बतलाये गये हैं, विमान चालकोंको उनका भलीभांति ज्ञान रखना परमावश्यक है और तभी वे सफल चालक कहे जाते हैं, जो रहस्योंसे अनभिज्ञ हैं वे चलानेके अधिकारी नहीं हैं, क्यों कि भूमिसे आकाशमें ले जाना, खड़ा करना, आगे बढ़ाना, टेढ़ी मेढ़ी गतिसे चलाना या चक्कर लगाना और विमानके वेगको कम अथवा अधिक करना आदि वैमानिक रहस्योंका पूर्ण अनुभव हुए बिना यान चलाना असम्भव है।

विमान चलानेके जो बत्तीस रहस्य कहे गये हैं, उसमें से कुछ रहस्योंका यहां संक्षिप्त दिग्दर्शन कराया जाता है, जिनके द्वारा यह ज्ञात होता है कि पाश्चात्य वैज्ञानिक प्राचीन भारतकी वैज्ञानिक कलासे कितने पीछे हैं।

(१)कृतकरहस्यो नाम—विश्वकर्म छाया पुरुष मनु मयादिशास्त्रानुष्ठानद्वारा तत्तच्छक्त्यनुसन्धानपूर्वकं तात्कालिकसंकल्पानुसारेण विमानरचना क्रमरहस्यम्॥" (२) गूढ रहस्योनाम—"वायु तत्वप्रकरणोक्तरीत्या वातस्तम्भाष्टपरिधि रेखापथस्य यासवियासापि वात शक्तिभिः सूर्य किरणान्तर्गत तमः शक्तिमाकृष्य तत्संयोजनद्वारा विमानाच्छादनरहस्यम्॥" (३) अपरोक्षरहस्यो नाम—"शक्तितंत्रोक्तरोहिणीविद्युत्प्रसारणेन विमानाभिमुखस्थ वस्तूनां प्रत्यक्षनिदर्शन क्रियारहस्यम्॥" (४) सार्पगमनरहस्यो नाम—"दण्डवक्रादि सप्त विधमातरिश्वार्क किरण शक्तीराकृष्य यान मुखस्थ वक्र प्रसारण केन्द्रमुखे नियोज्य पश्चात्तदाहृत्य शक्त्युद्गमन नाले प्रवेशयेत्। ततः तत्कीली चालनाद्विमानस्य सर्पवद्गमन क्रिया रहस्यम्"। (५) परशब्दग्राहकरहस्यो नाम—"सौदामनीकलोक्तप्रकारेण विमानस्थ शब्द ग्राहकयंत्रद्वारा परविमानस्थ जन संभाषणादि सर्वशब्दाकर्षण रहस्यम्" (६) रूपाकर्षण रहस्यो नाम—'विमानस्थरूपाकर्षणयंत्रद्वारा परविमान स्थितवस्तुरूपाकर्षण रहस्यम्"। (७) दिक्प्रदर्शनरहस्योनाम—"विमान मुख केन्द्र कीली चालनेन दिशांपति यंत्रनालपत्रद्वारा परयानागमनदिक् प्रदर्शनरहस्यम्"। (८) स्तब्धकरहस्यो नाम—"विमानोत्तरपार्श्वस्थ सन्धिमुखनालादपस्मार धूमं संग्राह्य स्तम्भनयंत्र द्वारा तद्धूमप्रसारणात् परविमानस्थ सर्वजनानां स्तब्धीकरण रहस्यम्"। (९) कर्षण रहस्योनाम—"स्वविमानसंहारार्थं पर विमान परम्परागमने विमानाभिमुखस्थ वैश्वानरनालान्तर्गत ज्वालिनीं प्रज्वालनं कृत्वा सप्ताशीतिलिङ्क प्रमाणोष्णं यथा भवेत् तथा चक्रद्वयकीली चालनात् शत्रुविमानोपरि वतुलाकारेण तच्छक्तिप्रसारणद्वारा शत्रु विमाननाशन क्रिया रहस्यम्"॥

(१) विश्वकर्मा, छायापुरुष, मनु, मयदानवादि विमान शास्त्रकारोंके बनाये हुए शास्त्रोंका अनुशीलन करने से उन उन धातु क्रियादिमें जो समर्थ है उसका

अनुभव होने पर इच्छाके अनुसार नवीन विमान रचना करनी चाहिए। (२) वायुतत्व प्रकरणमें कही रीतिके अनुसार वातस्तम्भकी जो आठवीं परिधि रेखा है, उस मार्ग की यासा, वियासा, प्रयासा इत्यादि वायु शक्तिओंके द्वारा सूर्य किरणमें रहने वाली जो अन्धकारशक्ति है उसका आकर्षण करके विमानके साथ सम्बन्ध कराने पर विमान छिप जाता है। (३) शक्ति तन्त्रमें कही गई रोहिणी विद्युत् (कोई विशेष प्रकारकी बिजली) के फैलानेसे विमानके सामने आने वाली वस्तुओंको प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। (४) दण्ड वक्रादि सात प्रकारके वायु और सूर्य किरणोंकी शक्तियोंका आकर्षण करके यानके मुखमें जो तिरछे फेंकने वाला केन्द्र है, उसके मुखमें उन्हें नियुक्त करके पश्चात् उसे खींचकर शक्ति पैदा करने वाले नालमें प्रवेश करना चाहिए, तब उसके बटन दबाने से विमानकी गति सांपके समान टेढ़ी हो जाती है। (५) सौदामनी कलामें कही गई रीतिसे विमान पर जो शब्द ग्राहक यंत्र है, उसके द्वारा दूसरे विमानके लोगोंकी बात-चीत आदि शब्दोंका आकर्षण किया जाता है।

(६) विमानमें स्थित रूपाकर्षण यन्त्र द्वारा दूसरे विमान में रहने वाली वस्तुओंका रूप दिखलायी देता है। (७) विमान के मुखकेन्द्र की कीली (बटन) चलानेके दिशा—पति नामक यंत्रकी नली में रहने वाली सूई द्वारा दूसरे विमानके आनेकी दिशा जानी जाती है। (८) विमानकी बायीं बगल में रहने वाली सन्धिमुख नामकी नली द्वारा अपस्मार नामक (किसी विशेष छेद से निकलने वाले) धुएंको इकट्ठा करके स्तम्भन यन्त्र द्वारा दूसरे विमान पर फेंकनेसे दूसरे विमानमें रहने वाले सब मनुष्य स्तब्ध (बेहोश) हो जाते हैं। (९) अपने विमानका नाश करनेके लिए शत्रु विमानोंके आने पर विमानके मुखमें रहने वाली वैश्वानर नामकी नलीमें ज्वालिनी (किसी गैसका नाम) को जलाकर सत्तासी लिङ्क प्रमाण (लिङ्क डिग्रीकी तरह किसी मापका नाम) गर्मी हो, उतना दोनों चक्कीकी कीली (बटन) चलाकर शत्रु विमानों पर गोलाकारसे उस शक्तिको फैलानेसे शत्रुके विमान नष्ट हो जाते हैं।

यंत्र सर्वस्व में जो बत्तीस रहस्य लिखे हैं उनके मध्यसे तीसरा, पांचवां, नवमा, बाईसवां, छबीसवां, अठाईसवाँ, इकतीसवां, बत्तीसवां इन रहस्योंका वर्णन किया है। इस लेखमें विस्तार भयसे शेष नहीं लिखे गए, नवें रहस्यसे यह पता लगता है कि दूरबीनकी तरह कोई दूरदर्शक यन्त्र उनके पास था, पच्चीसवें रहस्यसे यह सिद्ध होता है कि 'वायरलैस' रेडियो भी उनके पास था, अठाईसवाँ रहस्य बतलाता है कि आजकलके वैज्ञानिकोंकी तरह दूर से ही शत्रु विमानका पता लगाने की कला भी उनके पास थी। बत्तीसवें रहस्यसे स्पष्ट है कि जैसे ये लोग गैस बम्बादि द्वारा शत्रु संहार करते हैं वैसे ही वे लोग भी ऐसे शस्त्रास्त्रोंका उपयोग करते थे। छब्बीसवें रहस्यसे ज्ञात होता है कि आजके वैज्ञानिकोंने टेलीफोन पर बात करने वाले आकृति दिखा देने वाले 'टेलीविज़न' जिस यन्त्रका आविष्कार किया है वह इससे अधिक चामत्कारिक रूपसे हमारे पूर्वजोंके पास था। इनमें जो विमानोंको अदृश्य करने वाला पांचवां रहस्य है तथा उसके बराबर अन्य कई रहस्य हैं, जो विस्तारसे यहां उद्धृत नहीं किये गये हैं, उन सबके विषयमें आजके वैज्ञानिक हमारी समझमें अभी तक सोच भी नहीं सके। इस वैमानिक प्रकरणमें कहे गए ग्रन्थ और ग्रन्थकारोंके नामसे स्पष्ट ज्ञात होता है कि हमारे पूर्वज विमान शास्त्रमें अत्यन्त निपुण थे। जिन कलाओंकी खोज में आज वैज्ञानिक व्यस्त हैं या जिनकी कल्पना भी अभी वे नहीं कर पाये हैं उनको भी हमारे पूर्वज जानते थे। विमान नामक यन्त्र तो वैदिक काल से ही इस देश में प्रचलित था। वेदमें विमान बनाने की विधि बतलाते हुए कहा गया है कि जो पक्षियोंके उड़नेकी स्थितिको जानता है वह समुद्र आकाशकी नाव विमानको जानता है।

"वेदा यो वीनां पदमन्तरिक्षेण पततां
वेद नावः समुद्रियः" इति ऋग्वेदे ॥

ऋग्वेदमें तो पनडुब्बियोंका भी वर्णन है:—

"यास्ते पूषन्नावो अन्तः समुद्रे
हिरण्ययीरन्तरिक्षे चरन्ति ॥"

समय मिला तो एक लेख समुद्री जहाजों पर भी श्रीस्वाध्याय के पाठकोंको भेंट किया जायगा। प्राचीन भारतमें विमानकला अपरिचित नहीं थी इस बातको आज संसारके ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक विद्वान् मानने लगे हैं।

❀ ८ वृश्चिक लग्न जातक ❀

[श्री अम्बालाल गोविन्दराम दवे बी. एस. सी.]

राशि—वृश्चिक, स्थिर, शीर्षोदय, स्त्री, सम, कीट, स्वामी-मंगल। वृश्चिक राशि वह दूसरी राशि है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इस लग्नमें जन्म लेने वालोंका शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है, और यदि लग्न व चन्द्रमा पर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि न हुई, तो वे अतिशय स्वस्थ और अच्छे डील डौल के मनुष्य होते हैं। प्रायः उनकी आँखें बड़ी और आगे को निकली होती हैं और माथा चौड़ा होता है उनकी हड्डियाँ सुदृढ़ होती हैं और शरीर शक्ति का आगार होता है, किन्तु उनमें मेष लग्न वालोंकी तेजी और रण प्रियता नहीं होती।

वृश्चिक कीट राशि है संग्रह करना किसी भी कीटका स्वाभाविक गुण है। अतः वृश्चिक लग्न वालोंमें संग्रह करनेकी प्रवृत्ति पाई जाती है। इसी भांति वे बड़ी लगन के व्यक्ति भी होते हैं और जिस कार्य में जुटते हैं उसे बड़ी लगन से करते हैं। उनकी शक्तिका स्रोत धीरे-धीरे बहता है। किंचित् मेष राशिसे प्रभावित व्यक्तिकी भांति उनके इस शक्ति-स्रोतमें कोई बाढ़ व उथल पुथल नहीं आती। वे अपने पर कड़ा नियन्त्रण रख सकते हैं और अपने जीवन को जैसा चाहें बना सकते हैं।

अपने जीवनको बना सकनेकी क्षमता उन्हें कभी कभी अतिशय महत्वाकांक्षी बना देती है। वृश्चिकका दूसरा निरूपक गरुड़ भी होता है। यदि कुण्डलीमें मंगल केन्द्रमें या त्रिकोणमें बली होकर बैठा हो, तो वृश्चिक लग्न वाले गरुड़ की भांति ऊंची उड़ान भरने वाले होते हैं और अपने लक्ष्य तक पहुँचनेके लिए जी खोल कर परिश्रम करते हैं। उनकी लगन उन्हें लक्ष्य तक पहुंचा कर रहती है। कहीं कहीं उनकी महत्वाकांक्षा नेता (लीडर) बनने की होती है, और यदि उन्हें सच्चे तौरसे धुन लग गई तो वे उसके लिए अटूट प्रयास करते हैं और फिर सफल होकर ही रहते हैं!

उनके नेतृत्वमें मेष लग्न वालोंको हृदय तरंग नहीं होती, न कर्क लग्न वालोंकी भावुकता होती है और न तुला लग्न वालों की नैतिकता अथवा विचार-प्रधानता ही होती है। उनके नेतृत्व में आतंक होता है और नेताके रूपमें वे तानाशाह बन जाते हैं। पिछले युद्धमें डिक्टेटर्स इसी राशिसे प्रभावित थे। इस लग्न वालोंकी मनोवैज्ञानिक स्थिति कुछ इस प्रकार है:—कीटकी भाँति पहले उन्हें अपनी लघुता का भान होता है। यह लघुता उन्हें खलने लगती हैं, और इसकी प्रतिक्रिया आरम्भ हो जाती है। मंगलकी प्रबलता में यह प्रतिक्रिया इतनी प्रबल हो जाती हैं कि वह उन्हें महत्वाकांक्षी बना देती है। अपने प्रयासमें वे सर्व बाधाओं से सतर्क रहते हैं, और प्रत्येक प्रकारकी बाधाके लिए अपने पास उसीके अनुरूप शस्त्र भी तैयार रखते हैं। यह उनकी सफलताका दूसरा कारण है। उनके ऊपर शान्तिका आवरण पड़ा रहता है, किन्तु उनके प्रयासमें जो भी बाधक होता है उसकी खबर लेते समय वे अपने शान्त स्वभावका त्याग कर बड़ी निर्दयतासे पेश आते हैं, और उस बाधकका नाश ही करके छोड़ते हैं। उनसे शत्रुता मोल लेना ठीक नहीं होता क्योंकि वे प्रत्येक प्रकारकी स्थितिके लिए अपना अलग-अलग शस्त्र रखते हैं। उन्हें पराजित करना अतिशय कठिनताका काम है। उनकी सफलताएं उनमें अतिशय आत्म-विश्वास पैदा कर देती हैं फिर जो भी कार्य वे करते हैं, बड़े विश्वास के साथ करते हैं केवल जीवन के बाल्य काल में ही उन्हें कुछ बाधाएं अवश्य आती हैं, तदनन्तर वे अति सफल रहते हैं। अपनी विजयी शक्तियोंका भान उन्हें सर्वदा ही होता रहता है विश्वके कुछ महान् वैज्ञानिक, सेनापति, विद्वान, गणितज्ञ आदि इसी लग्न में हुए हैं।

यदि मंगलकी स्थिति अच्छी नहीं होती तब वे बिच्छू की भांति डङ्क मारनेकी प्रकृति रखते हैं। अपने विरोधियों को छिप-छिप कर मारते हैं। वे पीठ में छुरा भोंकना खूब जानते हैं। अपनी साधारण बोल-चालमें तीक्ष्ण वचन

बोलते हैं, जिससे दूसरे के हृदय पर आघात पहुंचता है। उनके बचनोंके बाण अतिशय पैने होते हैं और इस भांति किसीका हृदय दुखाकर उन्हें किंचित् शान्तिका अनुभव होता है। वे अतिशय द्वेषपूर्ण हृदय लिये रहते हैं और बिच्छूकी भांति ही जहरीले सिद्ध होते हैं। मंगलकी निर्बलतामें वे चेचक रोगसे ग्रस्त हो जाते हैं वे अधिक मित्रता नहीं बढ़ाते। स्पष्ट वक्ता होते हैं। अधिक चिकनी-चुपड़ी बातें न कर सकने के कारण उनका मित्र वर्ग अधिक बड़ा नहीं होता। किन्तु जब वे कोई सामाजिक या राजनीतिक कार्य हाथमें लेते हैं, और अपनी अगम शक्तिके सहारे लड़नेको तत्पर हो जाते हैं तो उनके अनुयायी बढ़ जाते हैं। रूसका महान् लेनिन इसी लग्नका व्यक्ति था। पद दलितोंके लिए उसने अपनी जानकी बाजी लगा दी थी। विजयश्री से विभूषित होने पर उसने विरोधियों का दमन अति निर्दयतासे किया और शीघ्र ही अपने नेतृत्वका आतंक बिछा दिया। ऐसे व्यक्तिकी प्रभुता से जनता इतनी प्रभावित नहीं होती जितना कि वह अपनी प्रभुता जनता पर लाद देता है। और जनता उसे मान लेती है। वे कुछ न कुछ कार्यमें जुटे ही रहते हैं। किसीसे स्वभावतः अधिक मतलब नहीं रखते। किन्तु जब उन्हें कोई अकारण छेड़ता है और हानि पहुंचानेका यत्न करता है, तो वे कठिनसे कठिन दण्ड देने पर उतारू हो जाते हैं। उनके पाप प्रायः छुपे रहते हैं, संसार में नहीं खुल पाते। उनमें मेष लग्न वालोंकी सी भावुकता नहीं होती। उनका हृदय भी एकाएक जोशमें नहीं भर जाता इसीसे वे कवि नहीं बन पाते। वैसे तो वे सभी देशों में पाये जाते हैं, किंतु गणित और ज्योतिष सम्बन्धी विषयोंसे उन्हें विशेष प्रेम देखा जाता है। विशेषकर जब उनकी कुण्डलीमें मंगल और चंद्रमा प्रबल हों।

संक्षेपमें वे बड़े निडर, जो तोड़कर काम करने वाले, संग्रहकर्ता महत्वकांक्षी और शत्रुओंका दमन करने वाले होते हैं। उनकी कुण्डली में:—

सूर्य दशमेश होनेसे शुभ होता है।
चन्द्रमा नवमेश होनेसे शुभ होता है।
बुध अष्टमेश और एकादशेश होनेसे अशुभ होता है।
मंगल षष्ठेश है किंतु लग्नेश होनेसे शुभ हो जाता है।
बृहस्पति द्वितीयेश और पंचमेश होनेसे शुभ होता है।
शुक्र सप्तमेश और द्वादशेश होनेसे सम होता है।
शनि तृतीयेश और चतुर्थेश होनेसे सम होता है।

नीचे डिक्टेटर लेनिन और श्री भूलाभाई देसाईकी कुण्डलियाँ दी जाती हैं जो वृश्चिक लग्नकी हैं:—

डिक्टेटर लेनिन

भूलाभाई देसाई

भगवान् की पूजा

'रुचीनां वैचित्र्याद् ऋजुकुटिलनाना पथजुषां,
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव'।

मनुष्यकी रुचियां विचित्र होती हैं; कई भगवान्‌को सीधे मार्गसे और कई टेढ़े मार्गसे प्राप्त करते हैं; जैसे जल कोई सीधे कोई टेढ़े मार्गसे जाते हुए समुद्र तक जा पहुंचते हैं। किसीकी की जाती हुई पूजा पर उपहास करना ठीक नहीं होता।

—

भारतीय ज्योतिष

विंशोत्तरी दशा पर अन्वेषण अपेक्षित

[लेखकः—श्री पं० रामचन्द्रजी शर्मा ज्योतिषी]

भारतके पूर्वाचार्यों ने योगबल (आत्मबल) का आश्रय लेकर प्रायः सभी विद्याका महत्वपूर्ण रिसर्च किया इसी कारण संसारमें भारतने गुरुपद प्राप्त किया था।

वर्तमान समयमें युरोप या अन्य देशोंमें ज्यौतिष शास्त्र पर विशेष ध्यान दिया जाता है और वहांके विद्वान् नित्य नवीन अन्वेषण (रिसर्च) करते ही रहते हैं पाश्चात्य विद्वान् दिन वर्ष पद्धति (प्रोग्रेस) तथा शुभा-शुभ दृष्टि योगों द्वारा जन्म कालके ग्रहोंको परस्पर शुभा-शुभ मानकर गोचर ग्रहके दृष्टियोगसे फलादेश बताते हैं। यह दृष्टि योग का फल शास्त्रीय है युक्ति युक्त है और मिलता भी है परन्तु श्रम विशेष और वहांके विद्वानोंने नूतन ग्रहोंकी खोज भी इसी आधार से की है। याने जब कुछ फलादेशमें त्रुटी देखते हैं तब सोचते हैं और ग्रह है फिर खोज करके ग्रह-देख कर फिर त्रुटी रहने पर देख ही रहे हैं इसी प्रकार अब भी और ग्रहकी खोज करना जरूरी बता रहे हैं हर्षल नेपच्यून, प्लूटोकी खोज करके पंचांगोंमें बराबर रखने भी लगे हैं।

भारतके पूर्वाचार्यों ने केवल दशा पद्धतिसे ही जीवन का महत्वपूर्ण और साधारणसे साधारण हाल यथार्थ और सरलतासे शीघ्र ही समझमें आ सके, ऐसा मार्ग बहुत ही प्रामाणिक बताया है।

पाश्चात्य विद्वान् यदि निरयन ग्रह (चन्द्र) से दशा पद्धतिको देखनेका कष्ट करेंगे तो उन्हें जो आनन्द होगा वह अपूर्व ही कहा जायगा और उन्हें निरयन ग्रहों की भी फलादेशमें आवश्यकता प्रतीत होने लगेगी। और नूतन ग्रह के कारण त्रुटी नहीं मिलेगी।

भारत के विद्वानों के सम्मुख विचार करनेके लिए एक आवश्यकीय प्रश्न रखता हूं आशा करता हूँ अवश्य ध्यान पूर्वक रिसर्च करेंगे या मनन व अनुभव करेंगे।

भारतीय ग्रंथ कई अप्राप्य है इससे सभी विद्या प्राचीन हदसे पर्याप्त संख्यामें न्यून है। दशा पद्धतिके लिए प्रायः सभी ग्रन्थोंमें स्पष्ट बताया है उसका सारांश यह है कि ४२ प्रकारकी दशा है उसमें विंशोत्तरी दशा मुख्य है कलियुगमें यह दशा ही मानी जाय।

१ अष्टोत्तरी न संग्राह्या मारकार्थे विचक्षणैः।
२ दशा विंशोत्तरी चात्र ग्राह्या नाष्टोत्तरी मता॥

कई जगह विंशोत्तरीका मत बलवान् बताया है इस आधार से विंशोत्तरी ही मानना युक्ति युक्त और प्रत्यक्ष है।

परन्तु बृहत्पराशर ग्रन्थ में दशाक्रम में लिखा है

कृष्णे तु रविहोरायां चन्द्रहोरागते सिते।
दहनात्स्वर्क्षपर्यंतं गणयेन्नवर्थिर्हरेत्॥

कृष्णपक्षमें सूर्य होराका लग्नमें और शुक्ल पक्षमें चन्द्र होराका लग्नमें विंशोत्तरीका क्रम कृतिका नक्षत्र से गिनना चाहिए।

प्रश्न (शंका)—यदि विंशोत्तरी दशामें कृत्तिकासे गिननेकी एक ही प्रकारकी विधि है तो उपरोक्त श्लोक क्यों लिखा? वहां सर्वदा कृत्तिकासे गिनना लिखा हुआ होता। यदि दो प्रकार से है तो कृष्ण पक्षमें चन्द्र होरा तथा शुक्ल पक्षमें सूर्य होरा का क्या आधार है?

कहीं भी इसका स्पष्टीकरण नहीं है। केवल भारतके आदरणीय कई ग्रन्थोंके लेखक श्रीमान् पं० श्रीनिवासजी ने दशामूलदर्पण ग्रन्थमें लिखा है-

विंशोत्तरी द्विधा प्रोक्ता अष्टोत्तरी द्विधा मता।

इसके विश्वासके लिये पाराशरीमें अष्टोत्तरीके लिये स्पष्ट लिखा है। "अष्टोत्तरी द्विधा प्रोक्ता शिवाद्या कृतिकादितः॥

परन्तु भारतमें प्रायः सभी विद्वान् इतना प्रमाण होने पर भी अष्टोत्तरी दशा भी एक ही क्रमसे बना रहे हैं।

यदि विंशोत्तरी ही दशा मानना युक्ति-युक्त है और एक ही विधि (क्रम) है तो उपरोक्त श्लोक की आवश्यकता नहीं होती। इससे स्पष्ट ज्ञात हो रहा है कि विंशोत्तरी भी दो क्रमसे प्राचीन कालमें बनाते थे वे ग्रन्थ नष्ट हो गए हैं, यही कारण फलादेशकी त्रुटिका है।

मैंने कई पत्रिकामें देखा है जिनका जन्म शुक्ल पक्षमें सूर्य होराके लग्नमें तथा कृष्ण पक्षमें चन्द्र होराके लग्नमें हुआ है उन्हें विंशोत्तरी दशाका क्रम कृत्तिकासे बिलकुल नहीं मिलता है।

उदाहरणके लिए कुंडली रखता हूं। जन्म तारीख १५। १०।१६०४ शनिवार इष्ट २८।४० सूर्य ५।२६ लग्न ११।२७ अक्षाँश २३।६ ग्रीनविच रेखा ७५।५ उज्जैनसे २४ मील पूर्वमें हैं जन्म पूर्वाषाड़ा २ रा चरण केतकीसे चन्द्र स्पष्ट ८।२० विंशोत्तरी दशा यहां शुक्ल पक्ष और सूर्यहोरा का जन्म लग्न है   जन्म कुण्डली

कृतिकासे जन्म दशा शुक्र भोग्य वर्ष १० से चन्द्र दिन न्यून है।

नेता ६ वर्ष सूर्य तदनन्तर १० वर्ष चन्द्र दशा तदनंतर ७ वर्ष मंगल दशा आती है। इस पत्रिकामें पाराशरीके अचूक मन्त्रोंके आधारसे चन्द्र-दशा विशेष उत्तम प्रायः जन्म भरमें यही दशा कारक मुख्य है और मंगलकारक दशा है या कष्ट तो होना अवश्य हो जो समय व्यतीत हुआ उसमें चन्द्रदशामें अनेक कष्ट ४ वार मारक तुल्य कष्ट रहा केवल २३वें वर्ष में अनायास व्यापार द्वारा लाभ हुआ परन्तु हाथमें नहीं आया लोगों में अभी तक लेना रहा वो भविष्य में आ सकता है या नहीं मंगल दशामें शरीर कष्ट नहीं हुआ।

पत्रिका सही है पिता अच्छे विद्वान् ज्योतिषी थे घड़ी रख कर टाईम देखा है तथा सूर्यास्त के ३।४ मिनिट पूर्व का जन्म है।

जनरल फलादेश बराबर मिल रहा है गोचरग्रह ताजिक पद्धतिसे बहुत ही मिल रहा है जब जब मुंथा पद्धतिके वर्ष मास और लाभ स्थानका आता है अवश्य लाभ हो जाता है। बुद्धि की तर्कना अपने आप अचानक कल्पनातीत न हो कर सही २ विधि प्राप्त होती है अध्यात्मिक साधनमें विशेष मन प्रसन्न रहता है आदि कई प्रकारसे पत्रिका सही है परन्तु कृत्तिका से विंशोत्तरी दशाका फल बिलकुल नहीं मिल रहा है। इसी प्रकार कुछ कुंडली और दे रहा हूँ उन्हें भी बिलकुल नहीं मिल रहा है। इस पर सभी विद्वानोंका मुख्य कर्तव्य है ध्यान पूर्वक मनन व अनुभव करके अपना विचार प्रकट करें।

जन्म १६६५ चैत्र कृष्णा १३ शनिवारका ३१।५६ इष्ट २०।१४ सूर्य ११।६ ल. ३।१४॥ कृष्ण पक्षमें चन्द्र होरा है।

जन्म कुंडली चन्द्र १०।१५।३५

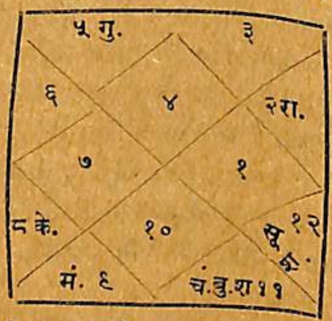

इस कृतिका मानसे गुरु दशा २२ वर्ष तक रही तब महादुःख और शनि दशामें विशेष धन लाभ हुआ है यह विपरीत ही है।

जन्म कुंडली लग्न सूर्यहोरामें है शायद २२ अंश है

कुसमयमें किये गये विवाहका भयानक दुष्परिणाम

जिस सच्ची घटनाका वर्णन मैं यहां कर रहा हूं, वह एक विवाहसे पूर्व प्रकट हुए लक्षण एवं शास्त्र-मर्यादाके विपरीत किये गये कारनामोंका दुष्परिणाम है। तथा देशके सभी भागों एवं समाजोंमें ऐसी अशास्त्रीय कार्यवाहियां सर्वदा ही होती रहती हैं और उसका प्रतिकूल परिणाम हर समाज समय-समय पर भोगता ही रहता है।

एक वर-कन्याका विवाह गत वर्ष संवत् २००६ मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा चन्द्रवारको हुआ था। अतः विवाह होनेसे पूर्व वाग्दान-संस्कार (सगाई) के समय कन्या पक्षने वर-कन्याकी "जन्म-कुण्डली" को देखकर कोई विचार ही नहीं किया। अस्तु, जिस दिन विवाह कार्य प्रारम्भ हुआ और कन्या पक्षकी ओरसे लग्न-पत्रिका लिखी गई थी, उस दिन मार्गशीर्ष कृष्ण १४ चतुर्दशी रविवार था, एवं वृश्चिक के चन्द्रमासें मृत्यु लोकको भद्रा थी। अतएव उक्त तिथि वार अग्राह्य थे। प्रमाण—"कुंभ-मीन अलि केसरी मृत्युः विचरति भद्रा त्रिभुवनमध्ये" ॥ (शीघ्रबोध) मृत्यु लोके यदा विष्टि सर्वकार्यविनाशिनी ॥ एतदर्थ प्रत्येक शुभकार्योंमें उक्त तिथि-वार भद्रा त्याज्य है। (शीघ्रबोध) अर्थात् वर पक्षको लग्न-पत्रिका भेजते समय यमराजको भी मानो साथ ही निमन्त्रित किया गया हो। जैसा कि वर्णित विवाहका प्रत्यक्षदर्शी परिणाम सामने आया था।

पश्चात् वरका यज्ञोपवीत संस्कार भी नक्काशीके समय पर मार्गशीर्ष शुक्ला १४ चतुर्दशी रविवारको ही हुआ था, जो वरके लिए पूर्ण रूपसे घातक था। अर्थात्—"अष्टमी गुरु हन्त्रीच शिष्य हन्ताश्च चतुर्दशी, तथा नक्काशी करके चतुर्दशीको ही बरातने विवाहके लिए पूर्व दिशामें प्रस्थान किया। "अस्तु प्राच्यां भद्रा चतुर्दश्याम्" (लघु होडा चक्र) अतः भद्राका निवास उक्त तिथिको पूर्वमें ही था। और "भद्रामुखे तु यो याति क्रोशमेकं तु नोत्तरम्" (लघु होडा चक्रम्) अर्थात् चतुर्दशीको पूर्वमें गया हुआ अथवा भद्राके ठीक सामने ही गया हुआ अधिक नहीं एक कोस (दो मील) भी जाने वाला जीवित लौटकर नहीं आता। अतः पुनरागमन नहीं होता।

एतदर्थ यह घटना अक्षरशः सत्य ही घटित हुई, और उक्त तिथि को पूर्वमें जाने वाली बरात वरका मृतक-शरीर लेकर ही वापिस अपने घरको पहुंची थी। बरातमें इन पंक्तियोंका लेखक भी उपस्थित था।

यहां पर वरकी जन्म-कुण्डली जन्म संवत् आदि सभी को उदाहरणार्थ दे रहा हूं, जिससे सभी बातों पर पूर्णतया प्रकाश पड़ सके। और विद्वज्जनोंका विचारणीय विषय बन सके तथा भविष्यमें भी अनुभूत प्रयोग हो।

हमें स्वर्गीय वरकी ही जन्म-कुण्डली प्राप्त हो सकी है। कन्या पक्ष वाले ऐसी घटनाके हो जानेसे कन्याका सही जन्म-समय छुपाना चाहते हैं, तथा पूछताछ करने पर अनभिज्ञता प्रकट करते हैं।

वरका जन्म संवत् १६६५ आषाढ़ कृष्णा १४ चतुर्दशी चन्द्रवासरे ३०।१२ मूल नक्षत्र २६।१६ ब्र० योग ५।१ बव करणे पूर्वाषाढ़ानक्षत्रके द्वितीय चरणका जन्म राशि धनुः स्वामी गुरु मनुष्य गण क्षत्रिय वर्ण मध्य नाड़ी वस्य मनु वानर योनि सर्व वर्ग जन्म नाम धनरूप स्थान जैपुर राज्यान्तर्गत मालपुरा प्रान्त आंटोली ग्रामका जन्म है। सूर्य २।२५ इष्ट समय ४८।२६ लग्न ०।१६ तथा विवाहका लग्न वर्तमान तिथि पर

इन्हें चन्द्र दशा में विशेष हानि रही धीरे धीरे महान धन हानि हो चुकी है।

इस प्रकार कई अनुभव में आई हुई कुंडली हैं।

मैंने अनुभव किया है कि विंशोत्तरी दो प्रकार से ही है और खोज करना चाहिए।

—

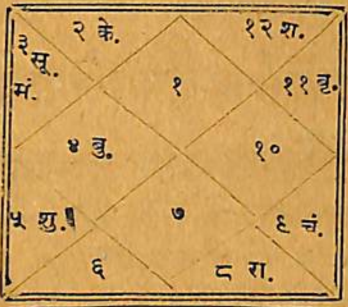

विवाहकी लग्न कुण्डली पर शास्त्रीय विवेचनात्मक वर्णन— "अष्टमे च चतुर्थे च द्वादशे च दिवाकरे" अर्थात् वरको ४।८।१२ सूर्य होने पर विवाह करें तो निश्चय ही वरकी मृत्यु हो। प्रमाण—"विवाहितो वरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः" (शीघ्रबोध) तथा "कालात्मा दिनकृत्" अर्थात् आत्माका स्वामी सूर्य है। और "रविवेधे च वैधव्यं" (शीघ्रबोध) अतएव रवि का वेध लगे तो अवश्य ही कन्या विधवा हो। पुनश्च—"शनि राहु कुजादित्या यदा जन्मर्क्ष-संस्थिताः "विवाहिता च या कन्या सा कन्या विधवा भवेत्" (शीघ्र बोध) अतः शनि, राहु, भौम अथवा सूर्य इनमेंसे कोई भी ग्रह विवाहके समयमें ४।८।१२ हों तो निश्चय ही कन्या विधवा होती है। अर्थात् और भी— "चन्द्राद्वा लग्नतो वापि ग्रह वर्ज्याश्च सप्तमे ॥ तत्र स्थिता ग्रहा नूनं व्याधि वैधव्य कारकाः ॥ अर्थात् चन्द्रमासे तथा लग्नकी राशिसे भी सातवां कोई ग्रह हो तो वह हर तरह की व्याधि और कन्याको विधवा करे।

अतः सूर्य कालाधिपति होनेसे और सूर्यके प्रकोपसे ही वर मार्गमें ही मृत्युको प्राप्त हुआ। तथा सूर्यका स्थान वन पाद चतुष्पद समय मध्याह्न और आकार चतुरस्र होनेसे वर की मृत्यु मध्याह्न समय वनमें ही चौपाये जानवरोंके कन्धे पर बैलगाड़ीमें चारपाई पर लेटे हुए हुई थी।

नोट—विवाह होनेसे पूर्व घटने वाली **अशुभ-सूचक** घटनाओंका वर्णन भी संगृहीत किया गया है। यदि **संपादक** जीकी आज्ञा और पाठकोंकी इच्छा हुई तो उक्त **विवरण** भी प्रकाशनार्थं भेजनेको तैयार हूं। अतः **अशुभ शकुन** पशु-पक्षी एवं परस्पर विरोधी वाक्योंसे भविष्यमें घटने **वाली** घटनाओंकी घोषणाओंका सही रूपमें घट जाना ही **लेखके** रूपमें संगृहीत किया गया है।

संकलनकर्ता—
प्रत्यक्षदर्शी
जवाहरलाल नागर

छप गया ! शीघ्र मंगाइये छप गया !!

"श्रीसनातनधर्मालोक"

जिस महाग्रन्थकी धार्मिक संसार बहुत समयसे **प्रतीक्षा** कर रहा था—वह ग्रन्थमाला रूपसे प्रकाशित होना **प्रारम्भ** हो गया है। इस महाग्रन्थके तीन पुष्प विकसित **हो गये** हैं। इसमें ५० से अधिक विषयों पर विचार किया **गया है।** ४०० के लगभग पृष्ठ हैं। इस ग्रन्थके पढ़नेसे **अनुसन्धान** की प्रवृत्ति वालोंको तथा अपनी धार्मिक शङ्काओंका **समाधान** चाहने वालोंको बहुत आनन्द प्राप्त होगा। शङ्काएं **दूर** होंगी। प्रश्नोंके उत्तर देनेका ढंग आवेगा। इसमें **ऐतरेय** महिदास, ऐलूष कवष, वसिष्ठ, सत्यकाम जावाल, **वाल्मीकि,** पुराणके वक्ता सूत, कक्षीवान्, व्यास, पाराशर, मतंग, **श्रवण** कुमार, आदिके कुल पर भी विचार किया गया है **कि ये** नीच कुलके थे, वा उच्च कुलके ? शबरीके जूठे बेरों **पर, स्त्री** और शूद्रके वेदाधिकारानधिकार पर भी विचार **किया गया** है। पुस्तक वस्तुत: ही उपादेय है। थोड़ी प्रतियां **छपी हैं।** देर करने पर द्वितीय संस्करणकी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। **आज** ही मंगानेका आर्डर दीजिये। मूल्य३।), डाक व्यय एक **पुस्तक** का ॥।), दो का १=), तीन का १॥) पता—

पं० दीनानाथ शास्त्री सारस्वत, सनातनधर्मालोक-**कार्यालय**
रामदल, दरीबा, **देहली।**

सूर्यग्रहणका संसार पर प्रभाव

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

आषाढ़ कृष्ण ३० बुधवार ता० ३० जून १९५४ ई०को ग्रस्तास्त खग्रास सूर्यग्रहण होगा। यह ग्रहण भूमण्डलके कुछ भागोंमें खग्रास और कहीं खण्डग्रास दिखाई देगा। उत्तर-अमेरिका, दक्षिणी-अमेरिका, मध्य-यूरोप, अफ्रीका, मेडागास्कर, स्वीडन और भारतमें जोधपुर, जैसलमेर, फलौदी, पाली एवं खैरपुर शिकारपुर, कलात, बिलोचिस्तान, अफगानिस्तान, कन्धारमें सूर्यास्तके समय यह ग्रहण १ से दो मिनट तक खग्रास (पूर्ण ग्रसा हुआ) दिखाई देगा। वहाँ सूर्यास्तसे पहले ही आकाशमें प्रकाशमान तारे दिखाई देने लगेंगे। भारत और पश्चिमी पाकिस्तानमें यह खण्डग्रास ग्रहण सर्वत्र ग्रस्तात होगा, अर्थात् ग्रहण लगा हुआ (मोक्षसे पहले ही) सूर्य अस्त हो जावेगा। भारतकी पूर्वीय और दक्षिणी सीमा पर पूर्वी पाकिस्तान, कलकत्ता, दक्षिणी बंगाल, ल्हासा, आसाम मलाबार, कन्या-कुमारी, मद्रास, म्हैसूर, विजयबाड़ा, जगन्नाथपुरी, कटक और शिलांगमें यह ग्रहण बिल्कुल नहीं दीखेगा। हैद्राबाद, रांची, पटना, दार्जीलिंग और काठमांडूमें इस ग्रहणका स्पर्श दिखाई देगा। सूर्यग्रहण सर्वत्र एक समय पर एक जैसा दिखाई नहीं देता (इसका सप्रमाण विस्तृत विवेचन हम 'श्रीस्वाध्याय' में तीन वर्ष पहलेके निबन्धमें कर चुके हैं वहाँ देखें) भारत भूमण्डलीय ग्रहण-गणितके द्वारा गणना करके भारतके मुख्य-मुख्य नगरोंका स्पर्श काल स्टैण्डर्ड टाइमके अनुसार यहां दिया जा रहा है। कुरुक्षेत्रमें स्टैण्डर्ड मानसे स्पर्शादिकाल निम्न है :—

	स्टैण्डर्ड घं०—मि०
स्पर्श (सायाह्न दिनमें)	६—२७
मध्य (सायाह्न दिनमें)	७—२२
मोक्ष (रात्रिमें)	८—१७
पर्व काल (ग्रहण का कुल समय)	१—५०

कुरुक्षेत्रमें सायंकाल ७ बजकर २२ मिनट पर सामनेके ग्रहण चित्र जैसा ग्रहण लगा हुआ ही सूर्य अस्त हो जावेगा और दिल्लीमें ७—२१ पर ग्रस्तास्त होगा।

भारत पाकिस्तान अफगानिस्तान और नेपालके मुख्य नगरोंमें इस सूर्यग्रहणका स्पर्शकाल भारतीय स्टैण्डर्ड टाइमके अनुसार निम्न है—

नगरनाम	सायंकाल घं. मि.	नगरनाम	सायंकाल घं. मि.
अम्बाला	६।२८	गोवा	६।४७
अमृतसर	६।२७	चित्तौड़गढ़	६।३५
अजमेर	६।३४	जयपुर	६।३४
अहमदाबाद	६।३७	जम्बू	६।२५
अलवर	६।३१	जालन्धर	६।२७
अलीगढ़	६।३०	जामनगर	६।३६
आकोला	६।३९	जूनागढ़	६।४०
आगरा	६।३१	जोधपुर	६।३३
इन्दौर	६।३६	झांसी	६।३३
उज्जैन	६।३६	द्वारका	६।३९
उदयपुर मेवाड़	६।३५	देहली	६।३०
कराची (पा०)	६ ३५	नासिक	६।४१
कानपुर	६।३१	नागपुर	६।२८
काबुल(अफ०)	६।२२	नैनीताल	६।२८
कोटा(राजस्थान)	६।३४	प्रयाग	६।३२
किशनगढ़	६।३३	पटियाला	६।२८
कोल्हापुर	६।४४	पटना	६।३१
कंधार (अ०)	६।२१	पाली (मार०)	६।३३
खंभात	६।३९	पूना	६।४२
ग्वालियर	६।३३	पेशावर (पा०)	६।२३
गोधरा	६।३७	बम्बई	६।४२

बनारस	६।३८	राजकोट	६।३८
बड़ौदा	६:३८	राँची	६।३२
बांसवाड़ा	६।३६	लखनऊ	६।३१
भड़ौंच	६।३६	लाहौर (पा०)	६।२७
भरतपुर	६।३२	लुधियाना	६।२७
भावनगर	६।३६	सोलन शिमला	६।२७
भोपाल	६।३६	सूरत	६।४०
मसूरी	६।२७	सोलापुर	६।४१
मुल्तान	६।२६	श्रीनगर (काश्मीर)	६।२३
रत्नागिरि	६।४४	हरिद्वार	६।२७
रायपुर (म.प्रदेश)	६।३१	हैदराबाद दक्षिण	६।४२

अहमदाबाद और दक्षिण पश्चिमी राजस्थान उदयपुर डूंगरपुर बांसवाड़ा आदिमें सूर्यास्तके समय खग्राससे कुछ न्यून इस चित्रके अनुसार यह सूर्यग्रहण दिखाई देगा।

भारतमें सर्वत्र यह ग्रहण ग्रस्तास्त है, अर्थात मोक्ष (ग्रहण समाप्ति) सूर्यास्तानन्तर रात्रिमें होनेसे शुद्ध सूर्यबिम्ब कहीं भी दिखाई नहीं देगा। अतः यहां मोक्ष कालका समय नहीं दिया गया है।

ग्रहणवेध (सूतक)—यह सूर्यग्रहण दिनके चौथे प्रहर में प्रारम्भ होगा, अतः प्रातः स्टेण्डर्ड टाइम ६—२७ से वेध (सूतक) प्रारम्भ होगा। किन्तु बाल वृद्ध रोगी एवं अशक्त पुरुषोंके लिये मध्यान्होत्तर ३ बजकर २७ मिनटसे सूतक मानना चाहिए। यह ग्रहण ग्रस्तास्त है अतः श्रद्धालु आस्तिकजन और साधु सन्त महात्मागण इस दिन रात्रिको उपवास रक्खें, दूसरे दिन गुरुवार ता० १ जुलाई को प्रातः शुद्ध सूर्य बिम्बके दर्शन कर स्नान संध्यादि नित्यकर्मसे निवृत्त होकर जलपान भोजनादि करें। पुत्रवान् गृहस्थियों को उपवासकी आवश्यकता नहीं, वे ग्रहण मोक्षके बाद रात्रि को स्नानादि करके ८॥ बजे भोजन कर सकते हैं।

दृश्यग्रहणे कृत्यम्—ग्रहणके स्पर्श होते ही स्नान करके जप पाठ भगवद्भजन हवनादिमें बैठ जाना चाहिए। सूर्यास्त होनेसे पहले ही दान करना उचित है। सूर्य ग्रहण में कुरुक्षेत्र-स्नानका विशेष महत्व है। जो लोग कुरुक्षेत्र न पहुँच सकें वे स्थानीय तीर्थ नदी तालाब आदिमें स्नान करके पुण्योपार्जन करें।

राशिफल—यह सूर्य ग्रहण मेष, सिंह, कन्या और मकर राशि वालों को शुभ फलकारक है। वृष, तुला, धनु और कुम्भ राशियोंको मध्यम तथा मिथुन कर्क वृश्चिक मीन राशि और आर्द्रा नक्षत्र वालोंको अरिष्टप्रद है अतः वे इस ग्रहणका दर्शन न करें। कल्याणार्थ जप पाठ हवनदानादि करें।

विशेष फल—काश्मीर पंजाब नेपाल उत्तरप्रदेश बङ्गाल कन्धार पुलिन्द चीन मत्स्यदेश यमुनातट और लाल रंग की वस्तुओं, अन्न ज्वार बाजरा मोठ चणा लौंग वस्त्र तथा राजकर्मचारियों और दुराचारियों पर इस ग्रहणका बुरा प्रभाव पड़ेगा। पंजाब राजस्थान नेपाल बङ्गाल और उत्तर-प्रदेशमें उपद्रव और अग्निभय हत्याकाण्ड रोगोत्पातादिसे प्रजा पीड़ित रहेगी। यह खग्रास ग्रहण ग्रस्तास्त है और आषाढ़ मास में ही सूर्य चन्द्रमा के दो ग्रस्तास्त ग्रहण हो रहे हैं ये संसारके लिए विशेष अनिष्ट सूचक हैं। राजाओं (शासन-सूत्र संचालकों) को विषमस्थितिमें फंसाने वाले हैं और धान्यका नाश करते हैं, लिखा भी है—

"ग्रस्तोदितौ च ग्रस्तास्तौ धान्यभूपालनाशकौ"
यद्येकमासे ग्रहणं भवेच्च शशिसूर्ययोः।
राजयुद्धं तदा ज्ञेयं क्षयं याति वसुन्धरा॥

ग्रहण पर मङ्गलकी दृष्टि है अतः लाल रङ्गकी वस्तुएँ मँहगी होंगी और चोर अग्निका उपद्रव बढ़ेगा, तथा राष्ट्रान्तरोंमें युद्ध स्थितिका निर्माण होनेकी सम्भावना है। प्रजा पीड़ित रहेगी। इस सूर्यग्रहणसे कुछ पहले ही भारत में अशान्ति और कई प्रान्तोंके मन्त्रिमण्डलोंमें गतिरोध उत्पन्न होगा। एशियाके यवन राष्ट्रोंमें पारस्परिक वर्गकलह छिड़ेगा। काश्मीर पाकिस्तान और राजस्थानमें विशेष अव्यवस्था फैलेगी। किसी महापुरुष की मृत्यु होना संभव है। चोरी डाके हड़तालें अधिक होंगी। ६ मास तक इन ग्रहणोंका प्रभाव संसार पर रहेगा। वर्षा और वायुके उपद्रव से भी हानि होगी। केसर कस्तूरी चन्दन आदि सुगन्धित पदार्थ घृत गुड़ शक्कर चावल तोरिया अलसी एरण्डा मूंग-फली आदिके संग्रहसे व्यापारी लाभ उठावेंगे। यदि ग्रहण के समय बादल वर्षा हो जावे तो फल विपरीत होगा। अर्थात् अशुभके स्थान में शुभ फल होगा।

व्यापारिक तेजीमंदी

[लेखक— श्री यादवचन्द्र जैन ज्योतिर्विद्]

वैशाखमासकी दैनिक तेजी मंदी

ता० १६ अप्रैल १९५४ सोमवार—चांदीमें तेजी, सरसों मंदी होकर तेज।

ता० २० मंगल—तेजीके उछालेके साथ सब वस्तु मंदी हों, ग्वार मंदी।

ता० २१ बुधवार—बाजार रुख देखो।

ता० २२ गुरु—गुड़ मंदा। चांदी ग्वार मटरकी रातसे कोई लाइन बनेगी। हमारा ध्यान मंदी पर अधिक है परन्तु बाजार रुख देखो।

ता० २३ शुक्र—चांदी साधारण तेज, ग्वार मंदी होकर तेज।

ता० २४ शनि—तेजी आने पर दिनमें चांदी बेचो रातको मंदी। रातसे सरसों, गुड़में भी मंदी।

ता० २६ सोम—तेजीके उछालेके साथ चांदी मंदी।

ता० २७ मंगल—मंदीके झटकामें चांदी खरीदो दोपहरसे तेजी, गुड़, सरसों तेज।

ता० २८ बुध—सरसों मंदी।

ता० ३० शुक्र—चांदीमें दुतरफा घटाबढी।

मई १९५४

ता० १ शनि—तेज वस्तुएं बेचो।

ता० ३ सोम—प्रत्येक वस्तु मंदी।

ता० ४ मंगल—दिनमें मंदीके झटकाके साथ प्रत्येक वस्तु तेज शामसे चांदी मंदी।

ता० ५ बुध—गुड़ मंदा, ग्वार दो पहर तक तेज रह कर मंदी।

ता० ६ गुरु—प्रत्येक वस्तु मंदी।

ता० ७ शुक्र—गुड़, सरसों मंदी, ग्वार कुछ तेज होके मंदी।

ता० ८ शनि—तेजी में सब वस्तु बेचो।

ता० १० सोम—प्रत्येक वस्तु मंदी।

ता० ११ मंगल—प्रत्येक वस्तु तेज।

ता० १२ बु—सरसों मन्दी होकर तेज।

ता० १३ गुरु—चांदी तेज होके मंदी, ग्वार दोपहर तक तेज फिर मंदी।

ता० १४ शुक्र—सावधान होकर व्यापार करें।

ता० १५ शनि—चांदी, गुड़, सरसों, ग्वार मंदी के झटकोंमें खरीदो।

ता० १७ सोम—दोपहरसे चांदी, सरसों, ग्वारमें मंदी चलेगी।

वैशाख मासका सारांश

इस मास प्रत्येक वस्तुमें घटबढी विशेष चलेगी। ता० २२ तथा २४ अप्रैल दोनों दिनकी रातसे ही चांदी, ग्वार मटर सरसोंमें इकतरफा लाइन बनेगी। ता० १०—११मई के आस पास किसी जगह युद्ध अथवा गृहयुद्ध छिड़नेकी संभावना है। गुड़में अकल्पित घटाबढी होकर मंदीकी लाइन बनना संभव दिखाई देता है।

ज्येष्ठ मासका सारांश

इस मास एक राशि पर गुरु शु. के. का योग तथा दूसरीराशि पर सू० बु० योग, साथ ही राहु मंगल का योग भी चल रहा है। अतः ता० १८से२५ मई तक चांदीमें चालू लाइनमें ता० २५ मईकी रात्रिसे अवश्य ही परिवर्तन हो जावेगा। यहां मं. वक्री है तथा साथ ही साथ दूसरी राशि पर शनि वक्र गतिमें चल रहा है। ता० २५ मईकी रात्रिसे बु. गु. शु, के. का योग (चतुर्ग्रही योग) प्रत्येक वस्तुके भावोंमें भारी क्रांति उत्पन्न किये बिना न रहेंगे। आकाशी या पाताली भाव बननेके ग्रह योग हैं—इस मास कृष्ण पक्षमें वर्षा श्रेष्ठ होनेके योग हैं। रुई, अन्नमें तेजीके उछालोंके साथ मंदी ही विशेष कर आवेगी। ता० १४ जूनसे या ता० १५ जूनसे प्रत्येक वस्तु के भावोंमें घटाबढी होते हुए तेजीकी लाइन बनना संभव है। परन्तु यह बात अन्नके विषयमें भी न समझ बैठें। ज्वर विशूचिका आदि रोगोंका उपद्रव इस मास बढ़ेगा।

❀ त्रैमासिक व्यापार रुख ❀

गुड़, शेयर, सोना, सरसों, चपड़ाकी तेजीमंदी

ता० १३ अप्रैलसे १० जुलाई १९५४ तक

[लेखक—श्री पं० गणेश, विद्यासागर दैवज्ञ रमलाचार्य]

गुड़, सोना, शेयर्स, सरसों, चपड़ाका स्वामी मंगल माना गया है। भगवान् शंकरने इन्ही महापुरुष शीघ्रगामी मंगलको मंत्रीपद तथा सेनाध्यक्षका पद दे दिया है। ता० २७ मार्चसे १० अक्टूबर ६ मास १३ दिन एक ही स्थान धनुराशि पर रहेंगे। राहु जैसा इनको मित्र मिला है, तथा शनिदेवकी इन पर पूर्ण दृष्टि है, देखिये १॥ महीने एक

आषाढ मासका सारांश

इस मास ५ बृहस्पतिवार तथा मिथुन राशि पर बुधका वक्री होना और ता० १८ को मिथुन राशि पर ही गुरुका अस्त हो जाना व्यापार वस्तुओंमें भारी क्रांति उत्पन्न करेगा। जिन वस्तुओंमें ता० १४ जून तक अच्छी मन्दी आई हो उनको ता० १४ जूनके आस पास ही खरीद करना चाहिए। यह तेजी ता० ९ या ११ जौलाई तक ही चल सकेगी। ता० १८ जूनसे अन्न पदार्थोंमें दनादन मंदा आनेके योग हैं। सं० २००७ व सं० २०१० में इसी प्रकारके योग बने थे, तब २०-२२ दिनमें भारी मंदा आया था। सरसों गुड़में तेजी हीका विशेषकर ता० ६ जौलाई तक बोलबाला रहेगा। बीच बीचमें गंदीके रियेक्शन आते रहेंगे। वर्षा इस मास भी श्रेष्ठ होनेके योग हैं, तथा शीतला, नेत्र रोग, ज्वर आदि रोगोंका उपद्रव इस मासमें भी रहेगा। ग्वार मटर आदिमें जोरदार इकतरफा लाइनका चांस आवेगा।

नोट—वैसाख मासकी दैनिक तेजी मंदीमें जहां 'ग्वार' शब्द लिखा है वहां उसके साथ मटर, अरहरकी तेजी मंदी भी ग्वारके समान ही समझनी चाहिए। और जहां सरसों शब्द लिखा है वहां सरसोंके समान ही अलसी अरंडीकी तेजी मंदी भी समझना चाहिए।

—

राशि पर ठहरने वाला मंगल इतने दिनों तक एक स्थान पर ठहरेगा। अतः यहां कोई महान् महत्त्वकी बात होगी। अन्य किसी भी प्रकारकी भविष्यवाणीमें नहीं फंसते हुये केवल व्यापार व्यवसायमें ये क्या करेंगे ? इसी ओर पाठकोंका ध्यान आकर्षित किये देते हैं।

लम्बी लाईन—ता० २७ मार्चको मूल-नक्षत्र तथा धनुराशिमें प्रवेश करते ही राहु वहां पर पहलेसे तैयार मिला तथा शनिकी वक्रावस्थामें दृष्टि गिरी। इस समय मंगल मंत्रीकी चालाकी पकड़ना मामूली ज्योतिषीका कार्य नहीं है। बहुतसे तो इस योगको महान् मंदीकारक योग कहेंगे, अनेकानेक इसको तेजीमें ले जायेंगे, किन्तु खास बात इसके विषयमें क्या है ? जो भी मेरी विद्या बुद्धिबल है उसके अनुसार भगवान् श्री भवानीशंकरका स्मरण करके लेख प्रारम्भ करता हूं, प्रभु मुझे तीव्र बुद्धि देकर सत्य तेजी मंदी लिखनेमें सहायक होंगे ऐसी आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है। पहिले ता० १२ अप्रैल तक जो भी कुछ होगा यह तो (व्यापार-रुख) मासिक पत्रमें देख लेना जोकि 'श्रीस्वाध्याय' का ग्राहक नम्बर भेजने पर मास अप्रैलका फ्री भेज देंगे।

ता० १२ अप्रैल से उपरोक्त वस्तुओंमें साधारण तेजी चालू हो जायेगी। गत ता० ५ अप्रैलसे जो मंदी चालू हुई वह यहां बदल जायेगी, भाव चढ़ते हुये दिखाई देने लगेंगे, ता० २१ अप्रैल तक गुड़में ।) १॥) सुवर्णमें २) २॥) शेयरमें ॥।) १) सरसोंमें २॥) ३) चपड़ामें २) ३)की तेजी आजायेगी। ता० २२से बाजारोंमें फिर मंदीका रोला आयेगा। ता० ४ मई तक भावोंमें घटनेकी गुन्जायश ही नहीं बनेगी, बल्कि भाव अच्छी हालतमें गिर जायेंगे। फिर ता० ५ मईसे बाजार तूफानी चालसे तेजीमें चलेगा, जो भी व्यापारी इस समय माल पौते करेगा उसको मालदार

बननेमें देरी नहीं लगेगी। ता० २३ मई तक तेजीमें रहेगा। यहां गुड़ ४) ५) सुवर्ण ३) ४) शेयर १।) १।।) सरसों ६) ७) और चपड़ा आदिमें अच्छी तेजी आयेगी, अब ता० २४ मईको यह धनुराशिमें तथा सिंह के नवमांशमें बक्री हो जायेंगे, यातो यहांसे बाजार मंदीमें चालू हो जायेगा और यदि तेजी पकड़ ले तो तूफानके आँकड़े नहीं लिखे जाते हैं। ता० १० जून तक एक तर्फा प्रभाव रहेगा। यह हम अवश्य कह देते हैं कि मार्केटमें चाहे तेजी चले या मंदी, किन्तु चाल बड़ो शीघ्र रहेगी, यहां नजजराने लगा कर व्यापार करना चाहिये। ता० २४ मईसे १० जून तक जिस प्रकार बाजार रहेगा, ठीक उसके विपरीत उतने ही आंकड़े ता० ११ जूनसे २२ जून तक रहेगा, होसियार व्यापारीको केवल पाइंएटकी जरूरत रहती है, आंकड़ोंकी आवश्यकता नहीं। ता० २३ जून से ३ जुलाई तक इसके विपरीत बाजार चलेगा जो कि ता० ११ जूनसे ता० २२ जून तक बाजार चले हैं उनसे विपरीत समझना, किन्तु आंकड़े ओछे निकलेंगे। ता० ४ जुलाईसे १७ जुलाई तक आँकड़े ऊपरकी कलमके विपरीत समझना, विपरीत तेजी मंदी चलेगी। मेरे विचारमें ता० २४ मईसे १० जून तक बाजार मंदे रहेंगे, ता० ११ जूनसे २२ जून तक तेजी चलेगी, ता० २३ जूनसे ३ जुलाई तक मंदीके झटके लगते रहेंगे। ता० ४ जुलाईसे १७ जुलाई तक साधारण तेजी बन जायेगी। हिसाबसे तो तेजी मंदी इसी प्रमाणसे चलनी चाहिये, परंतु प्रधान मंत्री। तथा सेनाध्यक्ष महाक्रोधी मंगल बक्र होने पर क्या कर दे यह भगवान् शंकर ही जानते हैं, हम तो ज्योतिष गणना द्वारा आपको इनकी टर्निंग तारीखोंका समय बता चुके, समय तथा व्यापारकी गति देखकर व्यापार करना, कराना, घबराहट तथा बोखलाहट दोनों व्यापारीको हानि पहुँचा दिया करते हैं।

कपास, बिनोला, कपड़ा, बाजरा, मूंग, घृत, मूंगफली, एरंडा, बीयां, अलसी, मटर, गुवार, पाट, धान्य, बारदाना, हैसियन, तुवर, जौ, तिल पदार्थादिकी तेजी मंदी—

(ता० १२ अप्रैलसे १० जुलाई १९५४ तक)

उपरोक्त समस्त वतुओं पर बुधका प्रभाव गिरता है इस वर्ष इनको भगवान् शंकरने दूसरी साखका स्वामी बनाया है, वर्षा अच्छी होगी।

लम्बी लाईन—ता० १० अप्रैलसे बुध मीन राशि पर आया है, यह इसकी नीच राशि है, मंदीकारक है। ता० २६ अप्रैल तक बाजरोंमें मंदी विशेष तथा तेजी कम करता है। ता० २७ अप्रैलसे ता० १० मई तक तेजी अधिक तथा मंदीके मामूली झटके लाया करता है। ता० ११ मईसे २५ मई तक साधारण तेजी मंदी चलेगी, किन्तु प्रभाव मंदीका ही अधिक रहेगा। ता० २६ मईसे २३ जून तक बाजारों में तेजी अच्छे रूपसे आती रहेगी, किन्तु अटक अटक कर आयेगी तेजी ही। ता० २४ जूनसे बुध बक्री होगा, यह मंदी कर देगा। ता० २७ जूनसे अच्छी मंदी चालू हो जायेगी (ता० २४ जूनसे यदि बाजार तेजीमें चल भी जाये तो २७ जूनसे फिर अच्छी तेजी ही समझना) हिसाबसे यहाँ मंदी आनी ही चाहिये, फिर भी पागल ग्रहका विश्वास करना ठीक नहीं, बाजार रुख देख लेना। ता० २४ जूनसे चालू प्रभाव ता० १६ या १८ जुलाई तक रहेगा।

सूचना—देखो जो हमने लम्बी लाइन लिखी हैं उसमें जब तेजी की दैनिक लाईन आ जाये तो अच्छी तेजी समझना, यदि मंदी की दैनिक लाइन आ जाये तो मामूली मंदी समझो। इसी प्रकार जब लम्बी लाईन मंदीकी हो उस समय यदि दैनिक मंदी आ जाये तो भारी मंदी आयेगी और तेजीका दिन आ जाये तो मामूली तेजी आयेगी, इस बातको सदा ध्यानमें रखते हुये व्यापार करो, अवश्य लाभ होगा। अब हम उपरोक्त वस्तुओंकी दैनिक लाईन लिखते हैं, इनको ध्यानसे देखकर विचारें, फिर व्यापार करना तो अवश्य लाभ होकर रहेगा।

अप्रैल १९५४ ई०

ता० वार—समय प्रातः ८ बजे से रात्री के १० बजे तक

१२ चं०—दुतर्फा चलते बाजारमें मामूली उछाला उपरोक्त वस्तुओंमें आयेगा।

१३ मं०—प्रथम कुछ तेज रहकर २॥ बजेसे बाजार मंदीकी तरफ मुंह फेर लेगा।

१४ बु०—खेलो मंदी, भाव अच्छी हालतमें टूट जायेगें अवश्य मन्दी आकर रहेगी।

१५ गु०—आजके योगायोग भी मंदीके ही हैं, मंदी खेलने वाला माल कमालेगा। रात्री तेज।

१६ शु०—मामूली उछाले मन बहलावके लिये तेजी वालोंको तसल्ली देने आ जायेंगे।

१७ श०—फल वाली परिस्थिति आज समझो, इन दो दिन में ≡) ।) गुवार तेज हो जायेंगे।

१९ चं०—भारी मंदी, आज एक दिनमें ही बाजार बैठ जायेगा, रात्रि ७ बजेसे तेजी चालू।

२० मं०—आजके योगायोग बाजारमें तेजीका ही समर्थन करते हैं, भाव बढ़ जायेंगे।

२१ बु०—मामूली घटाबढ़ी दोनों तरफ चलेगी, नजराने आज अवश्य निकल जायें।

२२ गु०—आये उछाले मालका बेचाण करो अचानक बाहरकी बिकवाली मंदी करेगी।

२३ शु० आज भी मंदी, २ बजेसे अच्छी मंदी (फाटक) गली लगा देना लाभ हो जायेगा।

२४ श०—दोनों तरफ अच्छी घटाबढ़ी चलते कुछ अंशों में तेजी ही आना पाया जाता है।

२६ चं०—आज भाव फिर गिरे तो हिम्मतके साथ ३ बजे करीब खरीद लो, अब मंदीसे मत घबराओ।

२७ मं०—अच्छी तेजी एक ही दिन में तूफान के मुवाफिक चलेगी।

२८ बु०—आजके योग संयोग भी अच्छी तेजी के दिखाई देते है भाव बढ़ेगें।

२९ गु०—बेचों मामूली दिल बहलाव को मंदी का झटका लगेगा, होसियार।

३० शु०—आज प्रथम मंदी आकर ३ बजे अचानक बाजार फिर संभल जायेगा।

मई १९५४

ता० वार—समय प्रातः ८ बजे से रात्री १० बजे तक

१ श०—ग्रह गणना आज भी बाजारोंको ऊपर उपाने में नहीं चूकेगी।

३ चं० साधारण घटाबढ़ीमें बाजार चलता रहेगा, घटे भाव खरीदो।

४ मं०—कल कुछ मंदी का झटका आ भी जाये तो आज खुले बाजारसे अच्छी तेजी चलेगी।

५ बु०—प्रथम तेजी, १२ बजेसे मंदी, ३ बजेसे अच्छी मंदी आकर रहेगी।

६ गु०—आज भी साधारणसे मंदीके झटके आयेगें घटे भाव खरीदो ३ बजे।

७ शु०—हर घटे भाव माल खरीदो खुले भावोंसे बाजार तेजीमें ही बंद होगा।

८ श०—प्रथम २॥ बजे तक बाजार तेजीका समर्थन करेंगे और पश्चात् मंदी होगी।

१० चं०—खुलते बाजार खरीदो आज भी भावोंमें फिर तेजी वालोंको खुशीका मौका मिलेगा।

११ मं०—अच्छी तेजी, आज तेजीका आखरी दिन हैं सायंकाल नफाखालो ४ बजे तक।

१२ बु०—बेचो, हर आये उछाले बाजारकी रुख मंदी की तरफ झुक जायेगी।

१३ गु०—बाजार दोनों तरफ साधारण घटाबढ़ीमें चलेगा, मामूली तेजी बन जायें।

१४ शु०—आज भी बाजार उपरमें टिके हुयेसे मालूम देंगे तेजी टिकाउ नहीं हैं।

१५ श०—अच्छी मंदी, अचानक भाव टूट जायेंगे मंदी खेलने वालोंको अच्छा लाभ।

१७ चं०—मामूली तेजीके उछालें आयेगें, आप तो हर आये उछाले माल बेचो।

१८ मं०—कल नहीं तो आज बाजार में अच्छी मंदी आकर रहेगी भाव घटेगें।

१९ बु०—प्रथम मंदा रहकर अचानक १२॥ बजे पीछे तेजी चालू होगी।

२० गु०—आज भी कुछ गरमी ही बाजार में दिखाई देती है, घटे खरीद नफा ले लो।

२१ शु०—खुलते बाजार बेचो भावों में मंदी को अच्छा प्रोत्साहन हैं, घटेंगे।

२२ श०—आजके योगायोग भी मंदी वालोंको ही नफे की सूरत बतायेगें।

२४ चं०—मार्केट उछल उछल कर गिरता रहेगा—रात मंदी में गुजरेगी।

२५ मं०—बेचो आज मंदी समाप्त हो रही हैं, अब समस्त मंदी का नफा खाना ठीक है।

अनुभूत जनरल चांस

[लेखकः—श्री पं० कृष्णदत्त शर्मा ज्योतिषरत्न]

सं० २०११ का नववर्ष कन्या लग्न में प्रवेश हो रहा है; लग्नको गुरुदेव पूर्ण दृष्टिसे देख रहे हैं जो मंदीकारक हैं, चन्द्रकी दृष्टि भी मंदी कारक है। परन्तु सूर्यकी दृष्टि तेजी सूचक है; दृक् प्रत्यय गणितके आधारसे जगल्लग्न वृश्चिक राशिमें प्रवेश हो रहा है जिसको बुधकी आधी और गुरु की पूर्ण दृष्टि है जो मन्दी कारक है, गुरु मंदी कारक १६ अप्रैल तक तथा बुध २६ अप्रैल तक ही मंदी कारक है। "गुरु संक्रान्तितो वर्षः" इस आधार से गुरुदेवका मिथुन राशि में प्रवेश कर्क लग्नमें हो रहा है, कर्कको दृष्टि मंगलकी पूर्ण है बुध की आधी है, शनैश्चर की पूर्ण है, बुधकी दृष्टि किंचित् मंदी कारक है परन्तु मंगल शनैश्चरकी दृष्टि तेजी कारक है। कर्क लग्नमें प्लूटो (यमराज)विराजमान हैं जिसको मंगल-शनैश्चरकी दृष्टि होनेसे प्रबल तेजी की सूचना मिल रही है; प्लूटो (यमराज) वक्रगतिसे चल रहा है, वक्री शनैश्चर की दृष्टि है, २४ मई को मंगल भी वक्री हो रहा है अतः १६ अप्रैल से लेकर २४ जून तक का समय जनरल तेजीकी चालका है क्योंकि २४ जूनको प्लूटो (यमराज) सिंह राशि में जा रहे हैं। अतः विशेषतया सोना-चांदी तांबा, पारा, ग्वार, मटरा, मसूर, अरहर, उड़द, मूंग, मोठ, तिलहन मात्र (सरसों, अलसी, एरण्डा, मूंगफली, बिनौला आदि) वनास्पति घी, तैल, गुड़, शक्कर, खांडमें घट-बढ़ चलते जनरल रुख तेजी का है। ग्वार-मटरा, गुड़ में २॥) ३) सरसों में ४) ५) तैलों में ७) ८) प्रतिमनकी तेजी तथा चांदी में १२) १४) सोना में ६) ७) की तेजीके योग पाए जाते हैं। हर मन्देके रीएक्शन में खरीदने की राय है, यह वर्षका तेजीका स्वर्ण अवसर है अतः पहिले से चेतना चाहिए; किन दिनोंमें चलती तेजीकी लाईनमें मंदीकी प्रतिक्रिया होगी, इसकी जानकारीके लिए एक वस्तुकी एक मास की २५) फीस श्रीस्वाध्याय सदन द्वारा भेजकर मंगवा सकते हैं; किसी भी वस्तुके तेजी-मंदा लगाने के यथोचित फीस द्वारा अनुभव सिद्ध अचूक दिन भी भेजे जा सकते हैं; अतः पहिले से चेतो ?

(१) ता० १६ अप्रैल को दिन के १ बजे की खरीद ता० २३ अप्रैल के दिन के २ बजे तक लाभकारी है ग्वार ।≡) ॥) गुड़-मटरा ॥) ॥=) सरसों ॥≡) ।॥) तेज हो जावे।

(२) ता० २३ अप्रैलके दिनके दो बजेसे ता० २४ अप्रैल तक ग्वार ।) ।-) मटरा-गुड़ ।-) ।=) सरसों ।=) ।≡) मंदी।

(३) ता० २६ अप्रैल की खरीद १ मई तक ग्वारमें ॥) ॥=) मटरा-गुड़ ॥=) ।॥) सरसों में १) तकको तेजी का चांस है।

(४) वैसे ता० २६ अप्रैल से १६ मई तक ग्वार-मटरा, सरसों गुड़की खरीद श्रेष्ठ है ग्वार, मटरा, गुड़ १।) १॥) सरसों में १॥) २) की तेजी का चांस है, हर घटे भाव खरीदो अधिक तेजी भी आ सकती है।

(५) ता० २० मई से २४ मई तक का मंदे का पीरियड़ है सावधान ? अतः पहिले खरीदे मालको १६ मईको सैटल कर देना चाहिए; इस मंदीमें आगे आने वाली तेजीके लिए माल खरीदना चाहिए क्योंकि आगे आशा जनक तेजी आने वाली है। सावधान !

ता० २० मई से २४ मई तक कितना मंदा और आगे कितनी तेजी आने वाली है वह मईके प्रथम सप्ताह में यथोचित फीस द्वारा आपको भेजी जा सकती है।

---

२६ बु०—प्रथम मंदा रहकर बाजार ३ बजे से तेजी का रुख पकड़ लेगा।

२७ गु०—तेजी खेलने वालों को अच्छा लाभ तेजी में अवश्य होगा।

२८ शु०—योग संयोग दोनों अच्छी तेजी के हैं, तेजी द्वारा माल कमा लें।

२६ श०—मंदीके झटके अवश्य लगेंगे किन्तु घटे भाव खरीद नफा खाते रहो।

३१ चं०—सिवाय तेजी खेलनेके और मार्ग अच्छा नहीं। मंदी से मत घबराओ।

सूचना—स्थानाभावके कारण इस समय इतना ही लेख दैनिक लिखा गया है यदि व्यापारी वर्गको पसंद आये और लाभ सूचक होगें, तो अगले अंकमें पूरे तीन मासका दैनिक विचार दिया जायेगा।

व्यापार विषयक स्वप्नफल [श्री यादवचन्द्र जैन ज्योतिर्विद्]

नीचे उतरना	मंदी कारक।	पानीमें कूदना या डूबना	मंदी कारक।
सीढ़ी या पहाड़ पर चढ़ना	तेजी कारक।	रेल या सवारीमें चढ़ना	तेजी कारक।
तालाब या नहरका सूखा देखना	मंदी कारक।	ऊपरको उड़ना	तेजी कारक।
तालाब या नहरका पानीसेभरा देखना	तेजी कारक।	पाखाना (टट्टी) देखना	मंदी कारक।
हरे हरे वृक्ष देखना	तेजी कारक।	पानी बरसते देखना	मंदी कारक।
सूखे पेड़ देखना	मंदी कारक।	मोरी या नलसे पानी गिरना	मंदी कारक।
पहाड़ या चट्टानका गिरना	मंदी कारक।	मीठी वस्तु खाना	मीठेमें तेजी कारक।
छत या दीवारका गिरना	मंदी कारक।	अन्नकी वस्तु खाना	अन्नादि वस्तु तेज हो।
ऊंचे मकान पर चढ़ना	तेजी कारक।	वस्तुको ऊपरसे गिराना या गिरते देखना	मंदी कारक।
ऊंचेकी तरफ देखना	साधारण तेजी।	मृतकको जीवित देखना	लाइन परिवर्तन या कुछ तेजी
आग देखना या आग लगते देखना	तेजी कारक।	जीवितको मरते देखना	लाइन परिवर्तन या मंदी आवे।
रुपया पैसा यदि कोई मांगे	तेजी कारक।	श्वेत सर्प देखना या उसे अपने वशमें देखना	महान् लाभ।
रुपया पैसा यदि कोई दे	मंदी कारक।	काला सर्प देखना	हानिकी संभावना है।
हरी साग सब्जी देखना	तेजी कारक।	भैंस देखना	हानि कारक।
नाव डूबना	मंदी कारक।	पाखाना (टट्टी) देखना	धन प्राप्त हो।

सरसों गुड़ और रुई की तेजीमंदी [ले०—श्री पं० हंसराजजी कपिल ज्योतिषाचार्य]

सरसों

ता० १० से १४ अप्रैल तक तेज। ता० १४ से १६ तक मंदी। ता० १७ से १६ अप्रैल तक तेज। ता० २० से २२ अप्रैल तक घटा बढ़ी। ता० २३ अप्रैल तक घटा-बढ़ी। ता० २३ अप्रैलसे २५ मई तक मंदी। ता० २५ मईसे २ जून तक तेज। ता० ३ से २१ जून तक मंदी। ता० २२ जून से २७ जून तक तेज ता० २८ जूनसे ६ जुलाई तक मंदी।

गुड़

ता० ८ से १४ अप्रैल तक तेज। ता० १६ से २२ अप्रैल तक मंदा। ता० २३ से २८ अप्रैल तक तेज। ता० २९ अप्रैलसे ४ मई तक मंदा, ता० २ से ४ मई तक घटाबढ़ीसे रुख तेज। ता० ५ से १२ मई तक तेजी। ता० १३-१४ मईको मंदी। ता० १५-१६ मई तेज। ता० १७ मई से २ जून तक मंदी। ता० ३ से १६ जून तक तेजी। ता० १७ से २८ जून तक मंदा। ता० २९ जूनको तेज। ता० ३० जूनसे ६ जुलाई तक।

रुई जहरीला बम्बई वायदा

ता० ६ से १५ अप्रैल १९५४ तक तेज।

ता० १६ से १८ अप्रैल तक मंदी।

ता० १६ से २८ अप्रैल तक तेज।

ता० २९ से १ मई तक मंदी।

ता० २ से १२ मई तक तेज।

ता० १३ से १६ मई तक मंदी।

ता० १७ मई से २ जून तक विशेष मंदी।

ता० ३ से १६ जून तक तेज।

ता० १७ से १९ जून तक तेज।

ता० २० से २८ जून तक तेज।

ता० २९ जूनसे ८ जुलाई तक रुई मंदी।

—

श्रीराष्ट्रालोक

राष्ट्रभाषानुवादसहित

राष्ट्रवादी ही आर्य हैं । आर्य ही शान्तिकी स्थापना कर सकते हैं ।

भारत भारतीयोंका है

स्वातन्त्र्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है । राष्ट्र हमारा पिता है, माता है और आचार्य हैं । हम सदा उसके सेवक हैं । हमारा राष्ट्र हमें भोग और मोक्ष दोनों देता है ।

हम सच्चे राष्ट्रिय हैं

अभारतीय भारतके अतिथि हो सकते हैं, राष्ट्रिय नहीं ।

हम सत्क्रांतिका सदा आदर करते हैं । हमें ऐसी शान्ति नहीं चाहिये जो राष्ट्रको परतन्त्र बनाए ।

राष्ट्रिय राष्ट्रके पुत्र होते हैं, पति नहीं ।

भारतीय अपने आपको हिन्दू माननेमें गौरवका अनुभव करते हैं । भारतीय आदर्शके विपरीत क्रांति किंक्रांति है, संक्रांति नहीं । यदि आप इन भावोंसे स्नेह करते हैं तो 'श्रीराष्ट्रालोक' अवश्य पढ़िये ।

श्रीराष्ट्रालोक परम पवित्र भारतीय आदर्शका एक जीवन शास्त्र है ।

राष्ट्र प्रेमी इसका आदर कर रहे हैं । जनता हाथों हाथ अपना रही है । आप भी आज ही मंगाइये । मूल्य ॥) मागव्यय –) 'श्रीस्वाध्याय' और श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्गके स्थायी ग्राहकों तथा विद्यार्थियोंको मार्गव्यय सहित ।=) में

महामहिम श्रीमदन्त्याश्रमाचार्यप्रणीत

श्रीआत्मविलास

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगतमें हलचल-सी मच गई और सैकड़ों प्रतियां हाथों-हाथ लग गई । इस ग्रन्थके पढ़नेसे स्थिरप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शांत होता है । अतः यदि आप भी आत्मा क्या है ? परमात्मा क्या है ? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है ? ... क्या है और हमें क्या करना चाहिए ? ... किसे ... है ? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है ? उनकी ... क्या है ? आदि आदि आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे ... होकर आत्मसाक्षात्कार करना चाहते ... अवश्य मनन कीजिए । आपको सभी ... आनन्द प्राप्त होगा ।

... मार्गव्यय ।=) अलग ।

सूचना

श्रीपञ्चस्तवी, श्रीपरशुरामस्तोत्र और श्रीमहिम्नहृदय की अब कोई भी प्रति कार्यालयमें शेष नहीं है । अतः इन के लिए कोई ग्राहक अब मनीआर्डर (टिकट) न भेजें । श्रीपञ्चस्तवी, लघुस्तवश्री ज्ञानदीपिका संस्कृत टीका सहित नागपुरमें वयोवृद्ध विद्वान् श्रीस्वाध्यायके सम्मान्य सहायक श्रद्धेय श्री पं० गोविन्द शर्माजी ... वेदाचार्य महोदयके तत्वावधानमें छप रहा है । शीघ्र प्रकाशित होगी ।

'श्रीस्वाध्याय' और 'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग'

मिलनेके स्थान

दिल्ली—गोयल ब्रादर्स बुकसेलर, दरीबाकलां
बम्बई—भार्गव कार्यालय राममन्दिर बिल्डिङ्ग कालबादेवी
जयपुर—भृगुज्योतिषकार्यालय, गोविन्दराजियोंका रास्ता
उज्जैन—श्री पं० रामचन्द्रजी त्रिवेदी मण्डीगंज
भरतपुर—श्री डा० आर० सी० गुप्ता गंगामन्दिर
बुगार—श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य

स्थान—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

'श्रीस्वाध्याय' के लिए--

राष्ट्रके उद्गार

श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन अध्यक्ष अ० भा० राष्ट्रीय महासभा—'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला। ....इस पत्र और इसके सञ्चालक मण्डलसे राष्ट्रीय कार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी........।

त्यागमूर्त्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज—'श्रीस्वाध्याय' अपने विषयका अनुपम पत्र है।... यह प्रत्येक सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों और वाचनालयोंमें स्थान पाने योग्य है.......।

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी खाद्यमंत्री केन्द्रीय सरकार—'श्रीस्वाध्याय' बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक हैं।........मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ.......।

पंजाबविश्वविद्यालयके उपकुलपति दीवान श्री आनन्दकुमार जी—"श्रीस्वाध्याय साहित्यिक अभिरुचिका पत्र है और अपने पाण्डित्यपूर्ण स्तरको [illegible] व स्थिर रक्खे हुए है।........... पत्र द्वारा हमारी प्राचीन संस्कृतिके उद्धार व संवर्द्धनका प्रशंसनीय प्रयत्न किया जा रहा है।................."

श्रीयुत बा० मैथिलीशरणजी गुप्त—"......'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। मैं आपके परिश्रमकी प्रशंसा और पत्रकी उन्नतिकी कामना करता हूँ।......"

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति—'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है।.......यह एक उच्चकोटिका सांस्कृतिक पत्र है। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़कर जी—"....वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढङ्गका निराला है। आर्य संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता है।......"

श्री डा० रामकुमार वर्मा जी—"........'श्रीस्वाध्याय' हमारे साहित्यका ऐसा पत्र है जिस पर हमें अभिमान है। इसमें जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण रहता है वह हमें अन्य भारतीय पत्रोंमें नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक पृष्ठसे मुझे अध्ययन और अनुशीलनसे परिपूर्ण साहित्यिक सामग्री मिली।......."

श्रीयुत पं० रूपनारायणजी पाण्डेय (सम्पादक 'माधुरी')—"........'श्रीस्वाध्याय' की सभी सामग्री ज्ञानवर्द्धक और उपादेय है।........प्रत्येक देशभक्त, राष्ट्रभाषा प्रेमी, जिज्ञासु, धर्म प्रेमीको अवश्य इसे अपनाना चाहिए। हर एक पुस्तकालयमें यह पत्र स्थान पाने योग्य है।......."

श्रीयुत पं० देवीदत्तजी शुक्ल (पू० सम्पादक 'सरस्वती')—"......'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है।........आपने 'स्वाध्याय' निकाल कर हिन्दीके एक विशेष अभावकी पूर्ति की है, इसमें सन्देह नहीं। इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।"

श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर—"......'श्रीस्वाध्याय' के विषय में विशेष क्या कहा [illegible] यह एक अत्युत्तम पत्र है। मैं हृदय से इसकी सफलता चाहता हूँ। इसका अत्यन्त महत्त्व [illegible] प्रकाश डालूँगा।

इनके अतिरिक्त भारतके अनेकों महापुरुष, विद्वानों और प्रमुख [illegible] की मुक्त कण्ठसे प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण वे सब यहाँ उद्धृत नहीं हो सके।

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अनुपम प्रेस दिल्लीमें छापकर 'श्रीस्वाध्याय सदन' [illegible]

वेशेष मंदी।

।

ज।

क तेज।

लाई तक रुई मंदी।